पीएनबी प्रतिभा
pnb pratibha
अंक : 61–04 जनवरी–मार्च, 2021

कृषि एवं वित्तीय समावेशन विशेषांक

पीएनबी स्टाफ जर्नल
PNB staff journal

आईबीए द्वारा बैंक को प्रदत्त बैंकिंग टेक्नोलॉजी अवार्ड 2020

आईबीए के उच्चाधिकारियों से आईबीए बैंकिंग टेक्नोलॉजी अवार्ड 2020 प्राप्त करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

पीएनबी को निम्नलिखित श्रेणियों में आईबीए बैंकिंग टेक्नोलॉजी अवार्ड 2020 प्राप्त हुए–

1. विजेता–पीएनबी वन ऐप के लिए मोस्ट इनोवेटिव प्रोजेक्ट यूजिंग टेक्नोलॉजी
2. उप–विजेता – कारोबार निष्पादन के लिए डाटा एवं विश्लेषिकी का सर्वश्रेष्ठ उपयोग–बड़े बैंक श्रेणी में

PNB won IBA Banking Technology Awards 2020 in the following categories-

1. winner - Most Innovate Project Using Technology for PNBOne
2. Runner Up- Best Use off Data And Analytics for Business outcome - Large Bank Category

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक:

सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

संरक्षक:

संजय कुमार
(कार्यपालक निदेशक)

विजय दुबे
(कार्यपालक निदेशक)

स्वरूप कुमार साहा
(कार्यपालक निदेशक)

प्रबंधकीय संपादक:

बी. एस. मान
(मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा)

संपादक:

मनीषा शर्मा
(सहायक महाप्रबन्धक– राजभाषा)

उप-संपादक:

बलदेव कुमार मल्होत्रा
(मुख्य प्रबन्धक–राजभाषा)

रविन्द्र मंडले
(वरिष्ठ प्रबन्धक–राजभाषा)

नरेश कुमार
(राजभाषा अधिकारी)

श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबन्धक–राजभाषा द्वारा सम्पादित।

पंजाब नैशनल बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, सेक्टर–10, द्वारका, नई दिल्ली

मुद्रण:

इनफिनिटी एडवर्टाइजिंग सर्विसेस, प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद

पीएनबी प्रतिभा में लेखकों/रचयिताओं द्वारा व्यक्त राय एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। बैंक प्रबंधन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	2
कार्यपालक निदेशक का संदेश	4
मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा का संदेश	6
सम्पादक की कलम से...	7
नव नियुक्त कार्यपालक निदेशक महोदय का अभिनन्दन	8
बैंक के वित्तीय परिणाम	9
बैंक के 127वें स्थापना दिवस का आयोजन	10
उच्चतर ग्रेड में पदोन्नति	15
ग्रामीण विकास में बैंक वित्त की भूमिका	16
भारतीय कृषि संकट	19
उच्चाधिकारियों के दौरे	20
बैंक को प्राप्त पुरस्कार	24
गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ/कॉरपोरेट गतिविधि	25
वित्तीय समावेशन में बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट की भूमिका	26
क्यों चाहिए कृषि क्षेत्र में सुधार	28
पीएनबी के संस्थापक की 156वीं जयंती	29
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन	30
बैंकिंग व्यवसाय वृद्धि में महिलाओं की भूमिका	35
सीएसआर गतिविधियाँ	36
कृषि–वैश्विक महामारी के बाद उम्मीद की एक किरण	38
वित्तीय समावेशन एवं कृषि का महत्व	40
उद्घाटन	42
वित्तीय समावेशन	44
कृषि एवं वित्तीय समावेशन	46
वित्तीय सेवाएँ विभाग द्वारा राजभाषायी निरीक्षण	53
माननीय मुख्यमंत्री, असम का पीएनबी में आगमन	54
ज्ञान प्रश्नोत्तरी	56
किसान क्रेडिट कार्ड	58
खुशबू ऐसे फैली	60
पीएनबी का आईआईटी कानपुर और फर्स्ट के साथ गठबंधन	62
पीएनबी ने युद्धनायकों को शाखाएँ समर्पित की	63
पंजाब में होली बन जाती है– होला महल्ला	64
बैंक की प्रमुख चुनौती–एनपीए प्रबन्धन	66
माँ चोटिला	68
माफी	69
मैली कमीज	70
कोरोना वॉरियर	72
महात्मा बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता	76
खुशियों की बोतल	80
कपूरथला–एक नजर में	82
वास्तु–टिप्स	87
अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन	88
बैंक की राजभाषा गतिविधियाँ	90
कंठस्थ–मैमोरी आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर	91
निःस्वार्थ	92
पुराना घर	93
हमें गर्व हैं	94
सेवा कैफे	96
हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में प्रवासी साहित्यकारों की भूमिका	98
कविताएं	100
बड़ मावस	103
बैंकिंग अपडेट	104
विविध गतिविधियाँ	105
सेवानिवृत्ति	107

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि "पीएनबी प्रतिभा" का यह अंक कृषि ऋण एवं वित्तीय समावेशन विषय पर प्रकाशित किया जा रहा है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि भारत की आधी से अधिक जनसंख्या आय के मुख्य स्रोत के रूप में कृषि पर निर्भर है। कृषि–बुनियादी ढांचे और खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी में सुधार के साथ कृषि उत्पादकों और उपभोक्ताओं के पारंपरिक संबंध स्थानीय बाजार स्तर से वैश्विक स्तर में परिवर्तित हो रहे हैं।

इसने किसानों, कृषि उद्यमों और मध्यवर्ती संस्थाओं के लिए अपने कार्यों का विस्तार करने और मूल्य वर्धित सेवाओं को शुरू करने के लिए नए अवसर पैदा किए हैं, जिसके लिए ऋण दात्री संस्थाओं से वित्तीय सहायता की आवश्यकता होगी।

पंजाब नैशनल बैंक में, हमारा प्रयास है कि कृषि और संबद्ध गतिविधियों के लिए आवश्यक और समयबद्ध वित्तीय सहायता प्रदान की जाए। यह किसान कल्याण को बढ़ावा देकर, कृषि समस्याओं को कम करके तथा किसानों और गैर–कृषि पेशेवरों की आय में समानता लाते हुए भारत सरकार के 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य में भी योगदान देगा।

हमने ऋण प्रबंधन प्रणाली "पीएनबी लेंस–द लेंडिंग सॉल्यूशन" के कार्यान्वयन के साथ कृषि ऋण के प्रसंस्करण और मूल्यांकन के मानकीकरण की एक पहल की है। यह सॉल्यूशन ऋण स्वीकृति की प्रक्रिया को तीव्र करने के लिए एकीकृत और सुसंगत मूल्यांकन के साथ प्रोसेसिंग को सरल बनाएगा।

हमने कृषि ऋण पोर्टफोलियो को बढ़ावा देने के लिए कुछ कदम भी उठाए हैं जो निम्नानुसार हैं:

- हम "पीएनबी किसान कल्याण ट्रस्ट" और "पीएनबी शताब्दी ग्रामीण विकास ट्रस्ट" के अधीन देश भर के 9 राज्यों में विभिन्न स्थानों पर 12 किसान प्रशिक्षण केंद्रों (एफटीसी) के माध्यम से किसानों को कृषि क्षेत्र में तकनीकी उन्नति पर विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान कर रहे हैं तथा पीएनबी के विभिन्न अग्रणी जिलों में 75 ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों (आरएसईटीआई) के माध्यम से समाज के वंचित वर्ग को तकनीकी कौशल प्रदान कर रहे हैं और उन्हें आत्मनिर्भर बना रहे हैं।

Dear PNBians,

I am pleased to note that the issue of **'PNB Pratibha'** is published with the theme of Agriculture Credit and Financial Inclusion.

Agriculture is an important sector of Indian Economy as more than half of our population relies on Agriculture as principle source of income. The traditional relation of agricultural producers and consumers at local market level is getting transformed to global scale with improvement in Agri-infrastructure and food processing technology.

This has created new opportunities for farmers, agricultural enterprises and intermediaries to expand their operations and undertake value added services, which will require financial assistance from lending institutions.

At Punjab National Bank, it is our endeavour to provide requisite and timely financial assistance to the Agricultural and allied activities. This shall also contribute towards goals of Govt. of India to double farmer's income by 2022 by promoting farmers welfare, reducing agrarian distress and bringing parity between income of farmers and those working in non-agricultural professions.

We have also taken an initiative for standardization of processing and appraisal of agriculture loan, with implementation of loan management system christened as PNB LenS – the Lending Solution. This solution enables ease of processing with uniform and consistent appraisal to speed up the process of Credit sanctions.

We have also taken few initiatives to boost agriculture credit portfolio which are as under:

- Under the umbrella of "PNB Farmers' Welfare Trust" and "PNB Centenary Rural Development Trust", we are providing specialized training program on technological advances in agricultural sector to the farmers through 12 Farmers' Training Centres (FTCs) at various locations in 9 states across the country and providing technical skills to the underprivileged strata of the society and making them self-dependent through 75 Rural Self Employment Training Institutes (RSETIs) in different lead districts of PNB.

- भारत सरकार द्वारा "आत्मनिर्भर भारत अभियान" के तहत शुरू की गई विशिष्ट योजनाओं के अंतर्गत वित्त पोषण सुविधा उपलब्ध है जैसे; "कृषि अवसंरचना निधि के तहत वित्त पोषण सुविधा" "प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम के औपचारीकरण की योजना (पीएम–एफएमई)", "पशुपालन अवसंरचना विकास निधि' (एएचआईडीएफ) के तहत वित्त पोषण सुविधा" और "मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर अवसरंचना विकास निधि (एफआईडीएफ) के तहत मत्स्य पालन विकास का वित्तपोषण"।
- हमने कृषि निवेश ऋण वित्तपोषण पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए 126 शाखाओं को चिह्नित किया है।

हमने 2012 से बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट (बीसी) / बैंक मित्र सेवाएं प्रदान करके समावेशी और समान विकास के लिए वित्तीय समावेशन गतिविधि भी शुरू की है और हम ग्रामीण, अर्ध शहरी, शहरी और मेट्रो केन्द्रों में अपने 12000+ व्यापार कोरेस्पोंडेंट / बैंक मित्र नेटवर्क के माध्यम से बुनियादी बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। हमने "प्रधानमंत्री जन धन योजना" (पीएमजेडीवाई) और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं जैसे "प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना" (पीएमएसबीवाई), "प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना"(पीएमजेजेबीवाई) और "अटल पेंशन योजना" (एपीवाई), के अंतर्गत खाते खोलने के साथ व्यापक वित्तीय समावेशन कार्यक्रम लागू किया है, जो हमारे बीसी, शाखाओं और इंटरनेट / मोबाइल बैंकिंग सेवाओं के माध्यम से उपलब्ध हैं।

मार्च 2021 तक, पीएमजेडीवाई योजना के तहत कुल 394.51 लाख खाते खोले गए हैं और पीएमएसबीवाई, पीएमजेजेबीवाई और एपीवाई के तहत क्रमशः 115.78 लाख, 23.53 लाख और 14.45 लाख नामांकन किए गए हैं।

इसके अलावा, महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर 'ग्राम संपर्क अभियान' नामक एक आउटरीच कार्यक्रम शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम में, हमने डिजिटल ऑन–बोर्डिंग, सामाजिक सुरक्षा नामांकन, वित्तीय साक्षरता और क्रेडिट सुविधाओं के लिए 440+ जिलों में फैले गांवों में 25000+ शिविरों के माध्यम से 11 लाख से अधिक ग्राहकों से संपर्क किया।

मुझे विश्वास है कि "पीएनबी प्रतिभा" का "कृषि ऋण और वित्तीय समावेशन" विषय पर आधारित यह अंक जागरूकता पैदा करेगा और साथ ही स्टाफ सदस्यों को बैंक के विविध कृषि उत्पादों / सेवाओं की जानकारी प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव
(प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी)

- Financing facility under specialized schemes launched by Govt. of India under "Atmanirbhar Bharat Abhiyaan" viz. "Financing Facility under Agriculture Infrastructure Fund", "Pradhan Mantri Formalization of Micro Food Processing Enterprise (PM- FME) Scheme", "Financing Facility under 'Animal Husbandry Infrastructure Development Fund' (AHIDF)" and "Financing Fisheries Development under Fisheries and Aquaculture Infrastructure Development Fund (FIDF)" is available.
- We have identified 126 branches for focused agriculture investment credit financing.

We have also undertaken financial inclusion activity to attain inclusive and equitable growth by providing Banking Correspondent (BC)/ Bank Mitra services since 2012 and we are delivering basic banking services through our 12000+ Business Correspondents /Bank Mitra network in rural, semi urban, urban and metro centres. We have implemented comprehensive financial inclusion Program by offering account opening under "Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana" (PMJDY) and Social security schemes viz. "Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana" (PMSBY), "Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana" (PMJJBY) and "Atal Pension Yojana" (APY), which is available through our BC locations, branches and Internet/ Mobile banking services.

As on March 2021, a total of 394.51 lakhs accounts have been opened under PMJDY scheme and enrolments under PMSBY, PMJJBY and APY are 115.78 lakhs, 23.53 lakhs and 14.45 lakhs, respectively.

Further, an outreach program christened as 'Gram Sampark Abhiyan' was launched on the occasion 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi. In this program, we reached to more than 11 Lakh customers through 25000+ camps in villages spread across 440+ districts for digital on-boarding, social security enrolment, Financial Literacy and credit facilities.

I am confident that this edition of 'PNB Pratibha' with theme of 'Agriculture Credit & Financial Inclusion' would create awareness as well as facilitate the staff members to understand the comprehensive bouquet of Agriculture products/services offered by Bank.

With best wishes,

Ch. S. S. Mallikarjuna Rao
(Managing Director & CEO)

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

मुझे बैंक की गृह पत्रिका पीएनबी प्रतिभा के माध्यम से आपके सम्मुख अपने विचार रखते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

भारत विश्व का एक प्रमुख कृषि पॉवरहाउस है, जो कृषि उत्पादन में दुनिया भर में दूसरे स्थान पर है। कृषि, ग्रामीण भारत में आजीविका का प्राथमिक स्रोत है। यह क्षेत्र न केवल कुल जीडीपी में 18% का योगदान करता है, बल्कि भारत के कार्यबल के 60–70% को रोजगार भी प्रदान करता है।

हमारे बैंक के विभिन्न प्रकार के कृषि ऋण उत्पाद हैं जो सीमांत, छोटे और अन्य किसान समुदाय के किसानों/खेतिहरों की विभिन्न श्रेणियों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इसके अलावा, बैंक के पास किसान क्रेडिट कार्ड धारकों का लगभग 35 लाख का बड़ा आधार है और यह आंकड़ा सरकार के महत्वपूर्ण केसीसी संतृप्ति अभियान का वास्तविक अर्थों में पालन करके प्राप्त किया गया है।

बढ़ते व्यावसायिक अवसरों का लाभ उठाने हेतु बेहतर स्थिति प्राप्त करने के लिए, हमारे बैंक ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

1. कृषि निवेश ऋण वित्तपोषण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर (126वें स्थापना वर्ष के अवसर पर) 126 शाखाओं को चिह्नित करना।
2. त्यौहारी मौसम (01.11.2020 से 31.12.2020) के दौरान कृषि मशीनीकरण के तहत कृषि ऋण को बढ़ावा देने के लिए प्रशंसा–सह–सम्मान कार्यक्रम।
3. 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के तहत एग्री इंफ्रास्ट्रक्चर फंड (एआईएफ) के तहत ऋण वित्तपोषण, 'पशुपालन इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड' (एएचआईडीएफ) वित्तपोषण, फिशरीज एंड

Dear PNBians,

It gives me immense pleasure to share my thoughts through this issue of Bank's House magazine 'PNB Pratibha'.

India is a global agricultural powerhouse, ranked second worldwide in farm outputs. Agriculture is the primary source of livelihood in rural India. This sector not only provides 18% share in total GDP but also employment to 60-70% of India's workforce.

Our bank has a bouquet of agriculture loan products catering to varied range of Farmers/ Agriculturist belonging to marginal, small and other farmer community. Also, Bank has a huge Kisan Credit Card holder base of approx. 35 lakhs and this figure has been achieved by following the Govt.'s flagship KCC saturation campaign in its true spirit.

In order to be better placed to take advantage of growing business opportunities, our Bank has taken the following steps:

1. Identification of 126 branches on pan India basis (on the occasion of 126th foundation year) for focused agriculture investment credit financing.
2. Appreciation cum recognition program for boosting agriculture credit under farm mechanization during festive season (01.11.2020 TO 31.12.2020)
3. Implementation of Govt. Schemes under 'Atmanirbhar Bharat Abhiyaan' such as Financing loan under Agri Infrastructure

एक्वाकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (एफआईडीएफ) के तहत फिशरीज डेवलपमेंट वित्तपोषण हेतु योजना और पीएम सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना (पीएम एफएमई योजना) जैसी सरकारी योजनाओं का कार्यान्वयन।

हाल ही में, बैंक ने ऋण प्रबंधन के लिए एक नया आईटी आधारित सॉल्यूशन शुरू किया है, जिसका नाम पीएनबी लेंस द लेंडिंग सॉल्यूशन है। इस ऋण प्रबंधन सॉल्यूशन का उपयोग लीड कैप्चरिंग, ऋण मूल्यांकन, मानकीकृत, एकसमान और अनुकूल नियम आधारित वित्त–पोषण के लिए स्वीकृति एवं प्रलेखन से संबंधित गतिविधियों के लिए किया जाएगा।

हमारा बैंक हमेशा वित्तीय समावेशन कार्यक्रम को लागू करने में अग्रणी रहा है, जिसमें विशाल शाखा नेटवर्क और संबंधित एसएलबीसी द्वारा हमारे बैंक को आवंटित 8730 अनिवार्य एसएसए स्थानों को कवर करने वाले 12700+ बीसीए के बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट नेटवर्क के माध्यम से पीएमजेडीवाई योजना के छह स्तंभों को लागू करना शामिल है। वर्तमान में हमारा देश कोविड–19 के प्रभाव के कारण बहुत कठिन समय से गुजर रहा है, हमें उचित कोविड–19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए इससे लड़ना होगा।

मुझे विश्वास है कि टीम पीएनबी किसान समुदाय के लिए बैंक की उपस्थिति और सेवा में सुधार के लिए प्रतिबद्धता का सराहनीय स्तर दर्शाएगी। **'पीएनबी प्रतिभा'** का यह संस्करण इस क्षेत्र में कृषि उत्पादों/ सेवाओं/नवीन सॉल्यूशन के लिए एक रिफ्रेशर का कार्य करेगा और स्टाफ सदस्यों के लिए ज्ञानवर्धक एवं सहायक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुमार

(कार्यपालक निदेशक)

Fund (AIF), Financing 'Animal Husbandry Infrastructure Development Fund' (AHIDF), Scheme for Financing Fisheries Development Under Fisheries And Aquaculture Infrastructure Development Fund (FIDF)and PM Formalization of Micro Food Processing Enterprises Scheme (PM FME Scheme).

Recently, Bank has rolled out a new IT based solution for loan management christened as PNB Lens – the Lending Solution. This loan management solution, will be used for activities related to lead capturing, loan appraisal, sanction and documentation for standardized, uniform & consistent rule based financing.

Our Bank has always been a forerunner in implementing Financial Inclusion agenda, including implementation of six pillars of PMJDY scheme through a huge branch network & Business Correspondent network of 12700+ BCAs covering 8730 Mandatory SSA locations allotted to our Bank by respective SLBCs. Currently our country is going through very tough time due to spike of covid-19, we have to fight with this with observing proper covid-19 protocols.

I am confident that Team PNB shall exhibit a commendable level of commitment in improving the Bank's presence & service to the farming community. This edition of **'PNB Pratibha'** shall act as a refresher for agriculture products/ services/innovative solutions in the area and would create a buzz among staff members.

With best wishes,

Sanjay Kumar

(Executive Director)

मुख्य महाप्रबंधक (राजभाषा) का संदेश

प्रिय पीएनबीयंस,

"कृषि एवं वित्तीय समावेशन" जैसे महत्वपूर्ण विषय पर **पीएनबी प्रतिभा** का यह नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है तथा कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का आधारभूत स्तम्भ है। यह भारत की जीडीपी में महत्वपूर्ण योगदान करती है तथा भारत की अधिकांश जनसंख्या रोजगार के लिए इस पर निर्भर है। भारत कृषि क्षेत्र के बलबूते पर अपनी खाद्य सुरक्षा स्थिर करने में सफल रहा है।

कृषि क्षेत्र से जुड़ी भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ आम आदमी तक पहुँचाने के दायित्व का निर्वाह पंजाब नैशनल बैंक सफलतापूर्वक कर रहा है। वर्तमान में चल रही आपदा में भी आमजन को सहयोग करने के लिए पीएनबी विभिन्न योजनाएं लेकर आया है जो लोगों को कोविड–19 की आपदा के बाद फिर से अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक हो सकें। कृषि के उत्थान एवं कृषकों के कल्याण हेतु बैंक निरंतर ठोस प्रयास कर रहा है। हम अपनी विभिन्न योजनाओं जैसे पीएनबी किसान कार्ड, पीएनबी ट्रैक्टर ऋण, पीएनबी भू–स्वामी योजना, पीएनबी ग्रीनहाउस वित्तपोषण योजना, पीएनबी डेयरी विकास योजना आदि के माध्यम से सरकार की अपेक्षानुरूप एवं किसानों की कृषि संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं।

वित्तीय समावेशन का उद्देश्य समाज के वंचित वर्ग तक वित्तीय सुविधाओं को पहुंचाना है, जिसमें बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समावेशी विकास एवं वंचित वर्ग की समृद्धि का मूल मंत्र वित्तीय समावेशन है। भारतीय अर्थव्यवस्था और बैंकिंग सेवाओं में यद्यपि तेजी से प्रगति हुई है तथापि आबादी का एक बहुत बड़ा वर्ग, खासकर समाज का कमजोर वर्ग और निम्न आय वर्ग अभी भी आरंभिक बैंकिंग सेवाओं के दायरे से बाहर है।

वित्तीय समावेशन के द्वारा ही पंक्ति के आखिरी लाभार्थी को भी सबसे आगे लाया जा सकता है। बैंक द्वारा कम आय वर्ग और समाज के वंचित वर्ग को वहनीय कीमत पर भुगतान, बचत, ऋण आदि जैसी वित्तीय सेवाएं पहुँचाने के लिए कई योजनाएं कार्यान्वित हैं। विश्व बैंक के अनुसार, लगभग 2 अरब लोग औपचारिक वित्तीय सेवाओं का उपयोग नहीं करते हैं और सर्वाधिक गरीब परिवारों में 50 प्रतिशत से अधिक वयस्क बैंकिंग सेवाओं से वंचित हैं। इसी को ध्यान में रखकर हमने जन–धन खाते खोले हैं एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना आदि के माध्यम से उनके जीवन की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया है। कोविड–19 महामारी की आपदा में पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से स्ट्रीट वेंडर्स को रू.10000/– तक का ऋण स्वीकृत कर उनकी आजीविका को सुचारू रखने का प्रयास किया है। साथ ही, अटल पेंशन योजना के माध्यम से उनके भविष्य को भी सुरक्षित किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि वित्तीय समावेशन के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत की दिशा में सरकार के प्रयासों से कदम मिलाते हुए पीएनबी किसानों को कम ब्याज दर पर कृषि कार्यों के लिए आसान ऋण देकर कृषि को उन्नत बनाने, उनकी कृषि उत्पादकता बढ़ाने और उनकी आय बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य करते रहेंगे।

मैं आशा करता हूँ कि पीएनबी प्रतिभा का यह अंक आप सभी को ज्ञानप्रद व रुचिकर लगेगा तथा बैंक की विभिन्न उपलब्धियों एवं बैंक द्वारा की जाने वाली विभिन्न पहलों से आपको अवगत करवाने में मददगार होगा। पत्रिका के लिए आप सभी के बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

बी. एस. मान

(मुख्य महाप्रबन्धक–राजभाषा)

सम्पादक की कलम से...

प्रिय साथियो,

"पीएनबी प्रतिभा" के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए सुखद अवसर होता है। **"पीएनबी प्रतिभा"** के वर्तमान अंक को **"कृषि एवं वित्तीय समावेशन"** विशेषांक के रूप में आपके समक्ष रखते हुए मुझे अत्यंत प्रसंन्नता हो रही है।

कृषि हमारे देश की अर्थव्यवस्था की नींव है। हमारे प्राचीनतम ग्रन्थ वेद में भी कृषि और किसान की महत्ता को अभिव्यक्त करते हुए कहा गया है–

"क्षेत्रस्य पतिना वयं हि तेनेव जयामसि"

अर्थात् **हम किसानों का अभिनंदन करते हैं जिनकी कृपा से हम समृद्ध हुए।**

किसान आर्थिक विकास के अग्रदूत हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास, रोजगार सृजन एवं अन्य संबंधित उद्योगों के विकास में कृषि की अहम् भूमिका है। कोरोना जैसी महाआपदा में कृषि क्षेत्र ने भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत संबल प्रदान किया। आज हमारी प्राथमिकता पुनः कृषि पर ध्यान केन्द्रित करके गरीबी उन्मूलन करते हुए रोजगार सृजन एवं खाद्य सुरक्षा हो गई है। कोरोना महामारी के बीच हमने आत्मनिर्भर बनने का संकल्प लिया है। आत्मनिर्भर भारत की प्राथमिकता है– आत्मनिर्भर कृषि और आत्मनिर्भर किसान। किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू करके वैकल्पिक उपायों पर विशेष बल दिया है। हमारा बैंक अपनी कृषि संबंधी विभिन्न योजनाओं और उत्पादों के माध्यम से किसानों की आर्थिक दशा सुधार कर कृषि के विकास में अपना योगदान दे रहा है। इस विशेषांक में हमने बैंक की कृषि संबंधी विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी है जो आपके लिए रुचिकर एवं उपयोगी होगी।

हमने अपना 127वां स्थापना दिवस पूरे जोश एवं उल्लास के साथ मनाया। **"पीएनबी प्रतिभा"** के इस अंक में प्रधान कार्यालय द्वारा स्थापना दिवस के अवसर पर की गई गतिविधियों की झलकियाँ, बैंक की विशेष उपलब्धियों, बैंक द्वारा प्रारम्भ किए गए नए उत्पाद, बैंक के विभिन्न अंचल कार्यालयों/मंडल कार्यालयों की विभिन्न गतिविधियों को भी सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पत्रिका को और रुचिकर बनाने के लिए कुछ स्थायी कॉलम जैसे; ज्ञान प्रश्नोत्तरी, वास्तु टिप्स, प्रांतीय उत्सव आदि भी इस अंक में सम्मिलित किए गए हैं। इस अंक में कृषि तथा अन्य बैंकिंग विषयों पर दिए गए मौलिक लेखों से जहाँ स्टाफ की लेखन क्षमता परिलक्षित होती है वहीं राजभाषा हिंदी के विकास को भी गति मिलती है। साथ में, संस्मरण, कहानियों के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषा के प्रसार को बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए पंजाबी भाषा की कविता को भी इस अंक में स्थान दिया गया है।

पिछले अंकों के लिए आप सभी का भरपूर सहयोग तथा प्रतिक्रियाएं हमें प्राप्त हुई हैं जो हमें पत्रिका को और अधिक बेहतर बनाने में सहायक होती हैं। मुझे आशा है कि "पीएनबी प्रतिभा" का यह अंक भी आपको सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं विविधता से परिपूर्ण लगेगा। "पीएनबी प्रतिभा" को और अधिक रुचिकर बनाने के लिए आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए बहुमूल्य है व हमें इनकी प्रतीक्षा रहेगी।

आप सभी अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए जीवन में आगे बढ़ते रहिए। कोविड–19 के खतरे से बचने के लिए सावधानी बरतना अत्यंत जरूरी है। मैं आपके व आपके परिजनों के उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की मंगलकामना करती हूँ।

साभार!

मनीषा शर्मा

(सहायक महाप्रबंधक–राजभाषा)

नव नियुक्त कार्यपालक निदेशक महोदय का अभिनन्दन

श्री स्वरूप कुमार साहा ने 10 मार्च, 2021 को पंजाब नैशनल बैंक के कार्यपालक निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है। इससे पूर्व आप पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, लखनऊ में अंचल प्रबंधक(मुख्य महाप्रबंधक) के पद पर कार्यरत थे।

आप बैंक बोर्ड ब्यूरो (बीबीबी) के 2019 में आईआईएम, बैंगलोर के माध्यम से आयोजित प्रमुख नेतृत्व विकास कार्यक्रम में प्रतिभागी रहे। आपने सीएएफआरएएल /स्टर्न बिजनेस स्कूल, न्यूयॉर्क द्वारा संचालित एडवांस्ड मैनेजमेंट प्रोग्राम और एनआईबीएम और केलॉग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, यूएसए द्वारा संचालित नेतृत्व विकास कार्यक्रम में भी भाग लिया है।

आप कोलकाता विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक हैं और आपने 1990 में परिवीक्षाधीन अधिकारी (Probationary Officer) के रूप में पूर्ववर्ती ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स में अपने बैंकिंग करियर की शुरूआत की। आप इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स के प्रमाणित एसोसिएट सदस्य (सीएआईआईबी) हैं। आपने भारतीय बैंकिंग एवं वित्त संस्थान (आईआईबीएफ) से ट्रेजरी, निवेश और जोखिम प्रबंधन (डीटीआईआरएम) में डिप्लोमा भी प्राप्त किया है। आपने सीआईएसआई, लंदन के सहयोग से आईआईबीएफ द्वारा वित्तीय सेवाओं में "जोखिम प्रमाणपत्र" के साथ साथ आईटी सुरक्षा, साइबर अपराध और धोखाधड़ी प्रबंधन से संबंधित विभिन्न प्रमाणपत्र भी प्राप्त किए हैं।

आपने अपने 30 साल से अधिक के बैंकिंग करियर में, देश भर में विभिन्न पदों पर कार्य किया। पूर्ववर्ती ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स के प्रधान कार्यालय में अपने कार्यकाल के दौरान, आपने ट्रेजरी और अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग, मानव संसाधन विकास प्रभाग तथा बोर्ड प्रभाग का भी नेतृत्व किया है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके गहन एवं व्यापक अनुभव से पंजाब नैशनल बैंक अवश्य लाभान्वित होगा और आपके कुशल नेतृत्व में सफलता के नए आयाम प्राप्त करेगा। "पीएनबी प्रतिभा" परिवार आपका हार्दिक स्वागत करता है तथा आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

श्री स्वरूप कुमार साहा के कार्यपालक निदेशक नियुक्त किए जाने पर पौधा भेंट कर स्वागत करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

वित्तीय वर्ष 2020–21 के वित्तीय परिणाम

बैंक के कॉरपोरेट कार्यालय, द्वारका में वित्तीय वर्ष 2020–21 के वार्षिक वित्तीय परिणामों की घोषणा करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव। साथ में हैं कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार एवं श्री स्वरुप कुमार साहा।

वित्तीय परिणाम के मुख्य अंश

(रु.करोड़में)

क्र.सं.	मानदंड (Parameters)	मार्च'20	मार्च'21	वर्ष दर वर्ष परिवर्तन	
				राशि	%
1.	घरेलू जमाराशियां (Domestic Deposits)	1054216	1083335	29119	2.76
2.	वैश्विक जमाराशियां (Global Deposits)	1071569	1106332	34763	3.24
3.	सकल घरेलू अग्रिम (Gross Domestic Advances)	741952	719138	–22814	–3.07
4.	सकल वैश्विक अग्रिम (Gross Global Advances)	762721	739407	–23314	–3.06
5.	सकल घरेलू कारोबार (Gross Domestic Business)	1796168	1802473	6305	0.35
6.	सकल विदेशी कारोबार (Gross Overseas Business)	38122	43266	5144	13.49
7.	सकल वैश्विक कारोबार (Gross Global Business)	1834290	1845739	11449	0.62
8.	कासा जमाराशियां (CASA Deposits)	442971	492782	49811	11.24
9.	चालू जमाराशियां (Current Deposits)	70296	75546	5250	7.47
10.	बचत जमाराशियां (Saving Deposits)	372676	417236	44560	11.96

***वित्तीय वर्ष 2020–21 के लिए परिचालन लाभ रू 22980 करोड़ और निवल लाभ रू 2022 करोड़ रहा।**

बैंक के 127वें स्थापना दिवस का आयोजन

भारत के पहले स्वदेशी बैंक पंजाब नैशनल बैंक की स्थापना 12 अप्रैल, 1895 को लाहौर में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय एवं साथियों द्वारा की गई। बैंक 127 वर्षों से निरंतर देश की सेवा कर रहा है। इस वर्ष बैंक ने अपने स्थापना के 127 वर्ष का जश्न बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया तथा इस अवसर पर विविध कार्यक्रमों/गतिविधियों का आयोजन किया गया। हमारे बैंक ने एक अनूठा पायलट प्रोजेक्ट **PNB@Ease** आउटलेट लॉन्च किया। यह मॉडल "बैंकिंग–ऑन–द–गो" सेवा प्रदान करता है जहां बैंक शाखा द्वारा किए गए प्रत्येक लेनदेन को ग्राहकों द्वारा स्वयं शुरू और अधिकृत किया जाएगा। यह सेवा बिना शाखा में गए या कर्मचारियों की सहायता के बचत खाते खोलने से लेकर विभिन्न ऋणों और अन्य सेवाओं का लाभ उठाने तक हो सकती है। इसके अतिरिक्त, बैंक संपूर्ण भारत में 165 चिन्हित स्थानों पर **PNB@Ease** को कार्यान्वित कर रहा है।

बैंक कर्मचारियों से सहायता प्राप्त करने के विकल्प के साथ, **PNB@Ease** आउटलेट में पाँच कियोस्क होंगे अर्थात् एटीएम, बंच नोट स्वीकर्ता(बीएनए), खाता खोलने का कियोस्क, कार्ड जारी करने का कियोस्क और इंटरनेट–सक्षम कियोस्क। इस सुविधा से ग्राहक एक ही छत के नीचे सभी बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। इसके अतिरिक्त, **PNB@Ease** आउटलेट्स बैंक की वितरण क्षमता को बढ़ावा देंगे और ग्राहक अधिग्रहण की लागत कम करेंगे।

ऐसे पहले, बहुआयामी आउटलेट का उद्घाटन 12 अप्रैल, 2021 को केंद्रीय सचिवालय मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली में श्री देबाशीष पांडा, आईएएस, सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार और श्री पंकज जैन, आईएएस, अतिरिक्त सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार के कर कमलों से किया गया।

अपने 127वें स्थापना दिवस के अवसर पर, बैंक ने कई डिजिटल पहलों की घोषणा की जैसे वीडियो–केवाईसी से तुरंत ऑनलाइन बचत खाता खोलने, तुरंत पूर्व–अनुमोदित ऋण, इंस्टा डीमैट खाता और इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग सेवाओं से बीमा सुविधा।

चुनौतीपूर्ण समय के दौरान अपने निस्वार्थ योगदान और समर्थन के लिए ग्राहकों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों को धन्यवाद देते हुए, हमारे आदरणीय एमडी एवं सीईओ, श्री सीएच. एस.एस. मल्लिकार्जुन राव ने कहा, "बैंक का 127वां स्थापना दिवस हमारे लिए हमारी विरासत के अनुरूप एक महत्वपूर्ण अवसर है। महामारी के कारण पैदा हुई चुनौतियों के बावजूद, हमने अपने साथ दो बैंकों का सफल समामेलन किया है। प्रौद्योगिकी, लोगों और कारोबार के एकीकरण को रिकॉर्ड समय में पूरा किया गया जिससे हमें विकास के अवसरों का लाभ उठाने में मदद मिली। ग्राहक सेवा हमारे लिए सर्वोपरि है और ग्राहकों की बेहतर सेवा जारी रखने के लिए हमने डिजिटलाइजेशन के क्षेत्र में कुछ पहलें की हैं। इनमें **PNB@ease** आउटलेट, वीडियो केवाईसी के साथ ऑनलाइन बचत खाता खोलने, ऑनलाइन पूर्व–अनुमोदित व्यक्तिगत ऋण, ऑनलाइन इंस्टा–डीमैट खाता और अन्य सेवाएँ शामिल हैं।"

समामेलन के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े बैंकों में से एक बनने पर हमारे बैंक को बधाई देते हुए और अधिक से अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करने की कामना करते हुए, समारोह के मुख्य अतिथि श्री देबाशीष पांडा, आईएएस, सचिव – वित्तीय सेवाएँ विभाग ने कहा, "आज का लॉन्च इस श्रेणी में आगे रहने के लिए नवीनतम तकनीक को अपनाने की पीएनबी की क्षमता को दर्शाता है। आन्तरिक प्रौद्योगिकी विकसित करने के बजाय बैंक ऋण वृद्धि और देश के लिए वित्तीय समावेशन की अपनी बड़ी भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हुए डिजिटल बदलाव के लिए फिनटेक और स्टार्टअप्स के साथ सहयोग कर सकते हैं।"

श्री पंकज जैन, आईएएस, अतिरिक्त सचिव – वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार ने बैंक की डिजिटल पहल पर इसकी सराहना की और निरंतर तकनीकी उन्नयन और ग्राहक सेवा की आवश्यकता पर जोर दिया।

हमारे बैंक ने डिजिटल उत्पाद की पेशकश की:

नई वीडियो–केवाईसी सुविधा के साथ, एक नया ग्राहक 5 मिनट से कम समय में बचत खाता खोल सकता है। अन्य नई डिजिटल सेवाओं में इंस्टा–डीमैट खाता – नैशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरीज लिमिटेड (एनएसडीएल) के सहयोग से शुरू की गई पेपरलेस सुविधा शामिल है। ग्राहक अब ओटीपी प्रमाणीकरण और बैंक के साथ मौजूदा केवाईसी पर आधारित

स्वयं कार्य करने (डीआईवाई) दृष्टिकोण द्वारा तुरंत डीमैट खाता खोल सकता है। बैंक की इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग सेवा के माध्यम से ग्राहक अपने घरों में आराम से ऑनलाइन बीमा सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं।

त्वरित पूर्व–अनुमोदित और कागज रहित ऋण की सुविधा:

पूर्व–अनुमोदित ऋण के लिए पात्र ग्राहकों को अब ऋण लेने के लिए शाखा नहीं जाना पड़ेगा। मौजूदा ग्राहक ऑनलाइन पूर्व–अनुमोदित ऋण ले सकते हैं और तुरंत अपने खाते में पैसा प्राप्त कर सकते हैं। हमारा बैंक ग्राहकों के ऋण मूल्यांकन को ऑनलाइन पूरा करने और नैशनल ई–गवर्नेंस सर्विस लिमिटेड (NeSL) की ई–साइनिंग सुविधा के साथ ई–कॉन्ट्रैक्ट जनरेशन का उपयोग करके डिजिटल दस्तावेजीकरण को पूरा करने के लिए अपनी अत्याधुनिक डिजिटल विश्लेषण तकनीक का लाभ उठाता है।

पीएनबी कार्ड्स एण्ड सर्विसेज लिमिटेड सहायक कंपनी:

बैंक ने एक पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी, पीएनबी कार्ड्स एंड सर्विसेज लिमिटेड को निगमित किया है, जिसे समग्र रूप से क्रेडिट कार्ड कारोबार शुरू करने के लिए प्रारंभ किया गया था। इस प्रकार, हमारा बैंक अब सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ बैंकों में से एक है, जिनकी एक अलग क्रेडिट कार्ड कंपनी है। भारत के सबसे बड़े बैंकों में से एक होने के नाते, यह पहल क्रेडिट–कार्ड भुगतान में व्यापक बढ़ोतरी करेगी और संपर्क रहित भुगतान से सुरक्षा सुनिश्चित करेगी।

पीएनबी केयर्स:

अपनी सीएसआर पहल के रूप में हमारे बैंक ने अपने डिजिटल अभियान "डिजिटल अपनाएं" के माध्यम से 83 लाख से अधिक ग्राहकों को ऑनबोर्ड करके अपने स्थापना दिवस पर पीएम–केयर्स निधि को रु.3,53,78,890 का दान दिया। यह नवीन अभियान अधिक से अधिक ग्राहकों को डिजिटल भुगतान मोड से जोड़ने के सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

समामेलन के शानदार सफर और साइबर सुरक्षा शब्दावली पर कॉफी टेबल बुक

हमारे बैंक ने कॉफी टेबल बुक का अनावरण किया, जिसमें बैंक के महान सफर और पंजाब नैशनल बैंक के साथ ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के सफल समामेलन का चित्रण किया गया है। साइबर सुरक्षा शब्दावली पर एक और पुस्तिका लॉन्च की गई थी जिसमें कर्मचारियों और सामान्य जनता के ज्ञान को समृद्ध करने के लिए सभी साइबर खतरों और रूपरेखाओं को संकलित किया है।

बैंक में 127 वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रधान कार्यालय, द्वारका में एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें स्टाफ सदस्यों ने अपनी मनोहारी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर श्री देबाशीष पांडा, आईएएस, सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार को पीएम–केयर्स फंड के लिए रु.3,53,78,890 का चेक भेंट करते हुए एमडी एवं सीईओ, श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

स्थापना दिवस पर आयोजित विविध गतिविधियां

बैंक के कॉफी टेबल बुक तथा साइबर सुरक्षा शब्दावली का अनावरण करते हुए श्री देबाशीष पांडा, आईएएस, सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार। साथ में हैं श्री पंकज जैन आईएएस, अतिरिक्त सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार, एमडी एवं सीईओ, श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार तथा श्री विजय दुबे एवं मुख्य सर्तकता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

केंद्रीय सचिवालय मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली में **PNB@Ease** आउटलेट का उद्घाटन करते हुए श्री देबाशीष पांडा, आईएएस, सचिव वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार। साथ में हैं श्री पंकज जैन आईएएस, अतिरिक्त सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार, एमडी एवं सीईओ, श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार तथा श्री विजय दुबे, एवं मुख्य सर्तकता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

प्रधान कार्यालय में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए श्री देबाशीष पांडा, आईएएस, सचिव वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार।

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए श्री पंकज जैन आईएएस, अतिरिक्त सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार।

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री संजय कुमार।

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री विजय दुबे।

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

प्रधान कार्यालय में आयोजित स्थापना दिवस समारोह के दौरान सांस्कृतिक गतिविधियों की झलकियाँ

बैंक के स्थापना दिवस के अवसर पर प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित समारोह में संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

गिटार वादन करते हुए स्टाफ सदस्य।

एकल नृत्य प्रस्तुत करते हुए स्टाफ सदस्य।

समूह नृत्य प्रस्तुत करते हुए स्टाफ सदस्य।

समूह गान प्रस्तुत करते हुए स्टाफ सदस्य।

उच्च स्तर पर पदोन्नति
Elevated to higher level

श्री राजीव पुरी, मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, द्वारका को भारत सरकार द्वारा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कार्यपालक निदेशक के रूप में चयनित किया गया। पंजाब नैशनल बैंक उनके उज्जवल भविष्य एवं आगामी दायित्वों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता है। उन्हें पीएनबी से सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के लिए कार्यमुक्त करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव। साथ में हैं कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे एवं श्री अज्ञेय कुमार आजाद, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी एवं मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश वर्मा।

श्री देबदत्त चाँद मुख्य महाप्रबंधक(अंचल प्रमुख) अंचल कार्यालय, मुम्बई को भारत सरकार द्वारा बैंक ऑफ बड़ौदा के कार्यपालक निदेशक के रूप में चयनित किया गया। श्री देबदत्त चाँद ने सितम्बर, 2005 में मुख्य प्रबन्धक के रूप में पंजाब नैशनल बैंक ज्वाईन किया था। उन्होंने मंडल प्रमुख, बरेली तथा अंचल प्रमुख, मुम्बई के साथ–साथ विभिन्न महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया है। पंजाब नैशनल बैंक उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है एवं आगामी दायित्वों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता है।

स्थापना दिवस है पीएनबी का, आओ खुशी मनाएं।।

रमा कान्त यादव
शाखा प्रबन्धक
शाखा मुबारकपुर, आजमगढ

इस शुभ दिन पर आज हमारी, ढेरों है शुभकामनाएं।
स्थापना दिवस है पीएनबी का, आओ खुशी मनाएं।।

पीएनबी, ओबीसी, यूबीआई मिल कर एक बने।
बने प्रतीक भरोसे का, जन कार्य हेतु सब नेक बने।
चलें कदम से कदम मिला कर, चाहे आएं बहुबाधाएं।
स्थापना दिवस है पीएनबी का, आओ खुशी मनाएं।।

हम तीनों बैंकों का गौरवशाली इतिहास रहा है।
अलग रहे हों भले सदा पर लक्ष्य हमारे पास रहा है।
एक डगर हम तीनों की है, एक आज प्राथमिकताएं।
स्थापना दिवस है पीएनबी का, आओ खुशी मनाएं।।

गर्व हमें है, भारत का दूसरा बड़ा है बैंक हमारा।
इसे ऊँचाई पर ले जाने का संकल्प हमारा न्यारा।
शीर्ष शिखर को प्राप्त करें हम, ऐसा उन्नत पथ अपनाएं।
स्थापना दिवस है पीएनबी का, आओ खुशी मनाएं।।

पीएनबी के 127वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ!

ग्रामीण विकास में बैंक वित्त की भूमिका

विद्या भूषण मल्होत्रा
अधिकारी (सेवानिवृत्त)
जयपुर

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ दो तिहाई जनसंख्या आज भी गांवों में रहती है। देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्ष 2019–20 में देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का हिस्सा 17.90% था जो वर्ष 2020–21 में बढ़कर 19.90% हो गया है। आज ग्रामीण विकास एक नारे के रूप में उभरकर सामने आया है। ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण जीवन के सर्वांगीण विकास से है। जिसमें आधारभूत ढाँचागत विकास, जैसे–आवास, परिवहन के साधन, बिजली, पानी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधाएं, रोजगार के अवसर, सूचना तकनीक की सुविधा, उत्पादों के विपणन की व्यवस्था तथा बैंकिंग सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है।

ग्रामीण विकास की समस्याओं के निवारण में बैंक वित्त की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समय–समय पर सरकार द्वारा बैंकों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। जिसमें ग्रामीण विकास हेतु बैंक वित्त पर विशेष बल दिया जाता रहा है। बैंकों को अपने शुद्ध ऋण (ANBC) का न्यूनतम 40% हिस्सा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को प्रदान करना होता है। जिसमें कृषि, लघु उद्योग, छोटे व्यवसाय, स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों, खुदरा व्यापार, सड़क एवं जल परिवहन प्रचालकों तथा शिक्षा एवं समुदाय के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को शामिल किया जाता है। बैंकों को अपने शुद्ध ऋण का 18% कृषि ऋण या कृषि क्षेत्र को प्रदान करना होता है। अतः यह सत्य है कि ग्रामीण विकास में बैंकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इतिहास गवाह है कि पहले जमीदारों तथा साहूकारों द्वारा ऋणों पर ली जाने वाली ब्याज दर बहुत ऊँची होने के कारण न केवल पीढ़ी दर पीढ़ी ऋण ग्रस्तता के शिकार बने रहते थे बल्कि कई बार ऋण अदा न करने के कारण अपनी उपजाऊ जमीन खो बैठते थे। बैंकों की गाँव में पहुँच तथा उनके द्वारा दिए गए वित्त के योगदान ने उन्हें विकास के मार्ग पर लाकर खड़ा किया है।

ग्रामीण विकास के लिए कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाते हुए राष्ट्रीय आय का समान वितरण किया जाना बहुत आवश्यक है। कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा ग्रामीण औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण वित्त प्रणाली को और अधिक व्यापक, उदार, सरल, लचीला व लोकप्रिय बनाना होगा तभी कृषि एवं सहायक गतिविधियों का बहुआयामी विकास संभव हो सकेगा।

ग्रामीण वित्त प्रणाली को अधिक कारगर बनाने के लिए सरकार ने बहुवित्तीय संस्था प्रणाली को अपनाया जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में व्यावसायिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा सहकारी बैंक की शाखाओं का जाल फैला और देश में 'हरित क्रांति', 'श्वेत क्रांति', तथा 'नीली क्रांति' आई व देश खाद्यान उत्पादन, दुग्ध उत्पादन व मत्स्य उत्पादन में आत्मनिर्भर बना।

सरकार ने भी राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) तथा रिजर्व बैंक की सहायता से ग्रामीण (कृषि) वित्त प्रक्रिया की जटिलताओं को दूर करने का प्रयास किया है। नाबार्ड साख संस्थाओं को एक छत के नीचे लाकर अल्पकालीन, मध्यकालीन तथा दीर्घकालीन वित्त प्रदान करता है व बैंकों को पुनर्वित सुविधा प्रदान करता है। कृषि एवं ग्रामीण विकास के शोध को प्रोत्साहित करने के लिए नाबार्ड 'अनुसन्धान एवं विकास निधि' का भी सृजन करता है।

किसान क्रेडिट कार्ड योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि व उससे संबंधित गतिविधियों के लिए ऋण प्रदान करना है। इसमें फसलों के लिए खाद, बीज व अन्य सामग्री बाजार की प्रतियोगी दरों पर खरीदने में किसानों को सहायता मिलती है।

आज यह चिंता का विषय है कि रोजगार की तलाश में लाखों श्रमिक गांवों से शहरों की ओर पलायन कर रहे है। इसे रोकने के लिए 'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना' बनाई गई। बैंक कृषि श्रमिकों, भूमिहीन मजदूरों, ग्रामीण शिल्पकारों तथा अन्य बेरोजगारों का पता लगाकर उनकी पात्रता के अनुसार न केवल वित्त प्रदान कर रहे हैं बल्कि उन्हें व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए प्रशिक्षण सुविधा भी प्रदान कर रहे हैं। वहीं 'किसान प्रशिक्षण केंद्र' किसानों को विभिन्न कृषि उत्पादन प्रणालियों के अंतर्गत नई तकनीक, बीज एवं रोपड़ सामग्री को किसानों के खेत पर परीक्षण आदि करने तक के कार्य करती हैं। इससे किसान वैज्ञानिक ढंग से खेती करने के लिए भी प्रेरित होते है।

स्वयं सहायता समूह निर्धन लोगों को आत्मनिर्भर बनाने की एक ऐसी योजना है जिसमें समूह अपने सदस्यों को छोटी–छोटी बचत के लिए प्रेरित करते हैं। इस बचत की राशि में से सदस्यों को छोटे–छोटे ऋण प्रदान किये जाते हैं। स्वयं सहायता समूह से ऋण लेकर इन लोगों ने किराना, दुकान, आटा चक्की, थ्रेसर मशीन, डीजल पम्प जैसे स्वरोजगार के साधन जुटाकर आजीविका के साधनों में वृद्धि की है। आज देश में लगभग 1

करोड़ परिवार लाभान्वित हुए हैं। खास बात यह है कि इनमें ऋण की वसूली भी 90% से अधिक है।

ग्रामीण विकास हेतु बैंक कृषि आधारित सहायक धन्धों जैसे–पशुपालन, मत्स्यपालन, वृक्षारोपण, दुग्ध उत्पादन, भूमि सरंक्षण कार्यक्रम, फल विकास कार्यक्रम, सिंचाई विकास तथा कुक्कुट पालन के विकास हेतु आसान शर्तों पर वित्त सुविधा प्रदान कर रहे हैं। वहीं खाद्य एवं कृषि प्रसंस्करण इकाईयों को कार्यशील पूंजी की सहायता के लिए ओवरड्राफ्ट की सुविधा भी प्रदान करते हैं।

बैंक कृषि स्नातकों द्वारा एग्रीक्लिनिक एवं एग्री बिजनेस केन्द्रों की स्थापना के लिए न केवल वित्त सुविधा प्रदान कर रहे हैं बल्कि उनके लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करते हैं। बैंक ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में सुधार हेतु घरेलू शौचालय के नवीनीकरण, जल सुविधाएं तथा सोलर प्लांट लगाने हेतु वित्त पोषण कर रहे हैं जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार आया है। बैंक किसानों को स्मार्ट फोन खरीदने हेतु भी वित्त प्रदान करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में फसलों के भंडारण, परिवहन, प्रसंस्करण, फल और सब्जी, फूलों तथा केसर की खेती आदि अनेक क्षेत्रों का आकार भी बढ़ेगा। एक अनुमान के अनुसार इस वर्ग का लगभग 88 हजार करोड़ रुपये का बाजार उपलब्ध है जो अभी तक अनछुआ है। अतः भविष्य में बैंकों का यह प्रयास होगा कि इस बाजार का पूर्ण व्यावसायिक दोहन कर सकें।

भारतीय रिजर्व बैंक ने नए निजी क्षेत्रों के बैंकों को यह दिशानिर्देश जारी किये थे कि वह अपनी 25% शाखाएं ग्रामीण व अर्धशहरी क्षेत्रों में खोलें। इससे प्रतिस्पर्धा बढ़ी है। जिससे

ग्रामीण विकास को नई दिशा मिली है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह दिशानिर्देश भी जारी किए हैं कि ऐसी ग्रामीण शाखाएं बंद करने की अनुमति नहीं होगी जो उस क्षेत्र में इकलौती शाखा होगी।

बैंक द्वारा कृषि वित्त सुविधाएं प्रदान करने के कारण आज हमारा देश फल, दूध, दलहन, ज्वार, बाजरा तथा मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। वहीं गेहूं, चावल, सब्जी व चाय उत्पादन में न केवल आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है बल्कि कुछ खाद्य उत्पादों का निर्यात भी हो रहा है। देश में बढ़ते 'निर्यात जोन' की स्थापना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

भारतीय किसानों को कड़ी मेहनत के बावजूद भी कृषि उत्पादों का उतना लाभ नहीं मिल पा रहा है जो उन्हें मिलना चाहिए। इसका मुख्य कारण बाजार तक पहुँच में कमी तथा बिचोलियों द्वारा शोषण है, जो एक चिंता का विषय है। कुछ किए गए सर्वेक्षणों से पता चला है कि भारत में उपभोक्ता द्वारा दिए गए मूल्य का मात्र 10 से 23% ही किसान को मिल पाता है जबकि विकसित देशों में किसानों को अपने कृषि उत्पादों का 64 से 81% मूल्य मिलता है। इसे ध्यान में रखकर ही सरकार ने हाल ही में नया 'कृषि विधेयक 2020' बनाया है। जो किसानों की उपज को बेचने के विकल्पों को बढ़ाता है तथा किसान इस कानून के जरिये अपनी उपज को अपनी मंडियों के बाहर भी उचित या ऊँचे दामों पर बेच सकेगा। इससे किसान व उपभोक्ता दोनों को फायदा होगा।

बैंकों ने अपने कार्य के साथ–साथ सामाजिक दायित्वों को भी बखूबी निभाया है। कई बैंक अपने कार्य क्षेत्र में प्राईमरी व सेकेण्डरी स्कूलों को भी गोद ले रहे हैं। जिससे आधारभूत सरंचना की उन्नति तथा शिक्षा का विकास भी होगा। जिससे ग्रामीण विकास को नई दिशा मिलेगी।

बैंक ने प्राकतिक आपदा जैसे– बाढ़, चक्रवात, सुनामी तथा कोविड–19 के समय न केवल वित्त सुविधा प्रदान की है बल्कि कई गांवों को गोद लेकर उनके विकास का बीड़ा भी उठाया है।

कृषि वित्त में गतिशीलता लाने के लिए कुछ अन्य पहलुओं पर ध्यान देना भी आवश्यक है–

- कृषि वित्त प्रणाली को अधिक व्यापक, सरल, उदार, लचीला व लोकप्रिय बनाना चाहिए।

- कृषि क्षेत्र में ऋण को बढ़ावा देने के लिए बैंकों को ऋण ब्याज दरों में कमी करनी चाहिए।
- कृषि वित्त के एनपीए होने की वर्तमान समय सीमा बढ़ाई जानी चाहिए।
- परिसीमा अवधि में भी समुचित संशोधन किया जाना चाहिए जिससे बैंकों को अपनी वसूली कार्रवाई में दस्तावेजों के बार–बार के नवीनीकरण के झंझट से मुक्ति मिल सके।

आज समय की यह भी मांग है कि ग्रामीण ग्राहकों के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैया न अपनाया जाए, ऋण प्राप्त करने की जटिल प्रक्रिया को सरल बनाया जाए तथा समय से ऋण लौटाने वाले लाभार्थियों को सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाए।

इसके अलावा बैंक कर्मियों में समर्पण की भावना का होना भी नितांत आवश्यक है। तभी ग्रामीण विकास संभव हो सकेगा और हम उनके जीवन में नए रंग भरने में सफल हो सकेंगे।

भारतीय कृषि संकटः आर्थिक एवं तकनीकी रणनीति का महत्व

रवि मीना
वरिष्ठ प्रबंधक
प्राथमिकता क्षेत्र एवं वित्तीय समावेशन प्रभाग
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

"यदि हमारे देश में कृषि संकट में है तो कोई अन्य क्षेत्र बिना संकट के नहीं रह सकता"
- डॉ एम. एस. स्वामीनाथन

"खाली पेट के साथ एक शांतिपूर्ण विश्व की स्थापना नहीं की जा सकती"
- नार्मन बर्लो

उपरोक्त पंक्तियाँ कृषि के अभूतपूर्व महत्व को प्रदर्शित करती हैं। हरित क्रांति के बाद भारतीय कृषि ने सराहनीय प्रगति की है। 2018–19 में खाद्यान का उत्पादन रिकॉर्ड सीमा तक पहुँच गया। अधिकतर कृषि उत्पादों में भारत आत्मनिर्भर है। परन्तु भारतीय किसान की छवी हमेशा ही एक गरीबी एवं दुख से त्रस्त किसान की रही है। भारतीय किसानों का असंतोष हाल के कुछ वर्षों में एक बड़ी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समस्या बन चुका है। विभिन्न राज्यों द्वारा केवल ऋण माफी कर इस समस्या का मध्यम अवधि के लिए निपटारा किया जा रहा है। परन्तु कोई दूरगामी सुधार विचारणीय नहीं है।

भारतीय कृषि संकट के कई कारण हैं। भारतीय कृषि का अलाभकारी होना, मानसून पर निर्भरता, अप्रभावी न्यूनतम समर्थन मूल्य, व्यापार की विपरीत परिस्थितियां, ग्रामीण ऋण भार, कोल्ड स्टोरेज एवं सप्लाई चैन का अभाव इत्यादि। इन कारणों से आवश्यकता है कि समस्या का कोई दूरगामी समाधान निकाला जाये जिससे कि ऋण माफी जैसे अस्थायी समाधान की आवश्यकता न पड़े।

आर्थिक नीतियों में बदलाव कर इन सबसे बचा जा सकता है। कुछ आर्थिक नीतियों में बदलाव जैसे कि फसलों की सरकारी खरीद के दायरे को बढ़ा कर इनमें न्यूनतम समर्थन मूल्य के अंतर्गत आने वाले सभी फसलों को शामिल किया जाए, बाजार को मजबूत किया जाए, बीमा के दायरे को बढ़ा कर इसमें फसलों की बर्बादी के साथ बाजार जोखिम को भी शामिल किया जाए, कृषि बाजार को एकत्रित करते हुए पूर्ति की शहरी मांग के साथ जोड़ना, कृषि में विविधता जैसे पशुपालन, मछलीपालन, हॉर्टिकल्चर इत्यादि का समावेश जिससे कि कठिन समय में खेती में होने वाले नुकसान की कुछ भरपाई हो सके, स्मार्ट कृषि की ओर कदम इत्यादि शामिल हैं।

हम एक ऐसे दौर में जीवनयापन कर रहे हैं जब तकनीक हमारी हर गतिविधि के केंद्र पर है। जिस प्रकार से बेहतर तकनीक ने हर क्षेत्र की समस्याओं को कम करने में मदद की है उसी प्रकार इसका प्रयोग कृषि में भी लाभकारी हो सकता है। भारतीय कृषि की गुणवत्ता, मात्रा, वितरण एवं भण्डारण जैसी समस्याओं को निपटा कर तकनीक भारतीय कृषि का स्वरुप बदल सकती है। हाईब्रीड बीजों का इस्तेमाल, समय–समय पर मिट्टी में आवश्यक तत्वों की जानकारी, जैव खाद का इस्तेमाल, कीटों का जैविक नियंत्रण कर कृषि के उत्पादन को बढाया जा सकता है। मोबाईल ऐप के द्वारा सिंचाई का संचालन, पानी में नमी का आकलन कर उसे नियंत्रित किया जा सकता है। यहाँ तक कि क्रॉप सेंसर द्वारा खाद को आवश्यकता अनुसार नियंत्रित किया जा सकता है। कुछ कृषि ऐप – अपनी खेती, कृषि ज्ञान, हाई टेक किसान इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फसल के काटने के बाद बेहतर तकनीक से उपलब्ध कोल्ड स्टोरेज चेन विकसित कर साथ ही तकनीक से संचालित सोर्टिंग मशीनों का उपयोग कर फसलों के नुकसान को रोका जा सकता है, बिचौलियों को दूर रखने के लिए, ई–मार्केट का बेहतर संचालन कर और अधिकतम किसानों को इससे जोड़कर उनकी आय में वृद्धि की जा सकती है।

भारतीय कृषि में सुधार के लिए इसकी दक्षता को बढ़ाकर इसे लाभपूर्ण बनाना ही एक मात्र उपाय है। इसके लिए आर्थिक नीतियों में बदलाव के साथ तकनीकी विकास का इस्तेमाल एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। गाँधी जी ने कहा था कि भारत गाँवों में बसता है। हमारे गाँव किसानों से ही सुशोभित हैं। अब वक्त आ गया है कि हम अपने गाँवों और किसानों को प्राथमिकता दें जिसके वो हकदार हैं। विभिन्न चुनौतियों के बावजूद हमारे किसानों ने प्रगति की है। आवश्यकता है कि हम भी उनका साथ दें और उनकी कठिनाईयों को कम करने में उनकी मदद करें।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के दौरे

E-LCB, मुंबई के दौरे के दौरान प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव के साथ उपस्थित अंचल प्रमुख, मुंबई श्री देबदत्त चाँद, विभिन्न मंडल प्रमुख तथा विभिन्न वर्टिकल्स प्रमुख।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस मल्लिकार्जुन राव के अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के दौरे के दौरान पौधा भेंट कर स्वागत करते हुए श्री सुनील कुमार गोयल अंचल प्रमुख, अहमदाबाद।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव के अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के दौरे के दौरान आयोजित ग्राहक बैठक में बैंक के सम्मानीय ग्राहक को पुष्पगुच्छ प्रदान करते हुए।

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के दौरे के दौरान आयोजित समीक्षा बैठक में उपस्थित प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव तथा अंचल प्रमुख, अहमदाबाद श्री सुनील कुमार गोयल।

मंडल कार्यालय, जोरहाट द्वारा नवनिर्मित 'फुलोनी चरिआलि' शाखा, के परिसर में असम के स्थानीय पारंपरिक कलाकृति 'मुखा' का अवलोकन करते हुए श्री सीएच.एस.एस मल्लिकार्जुन राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी।

अंचल कार्यालय गुवाहाटी के दौरे के दौरान प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव के साथ उपस्थित श्री विवेक झा, मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, श्री शिव शंकर सिंह, अंचल प्रमुख, गुवाहाटी, तथा अन्य स्टाफ सदस्य।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद का मंडल कार्यालय वड़ोदरा दौरे के दौरान स्वागत करते हुए वड़ोदरा मंडल प्रमुख श्री दिलीप केदार।

व्यवसाय समीक्षा बैठक के दौरान मंडल प्रमुखों तथा रैम एवं एमसीसी प्रमुखों को संबोधित करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में है श्री सुनील कुमार गोयल, अंचल प्रमुख, अहमदाबाद।

मंडल कार्यालय, वडोदरा दौरे के दौरान समीक्षा बैठक करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद, इस अवसर पर श्री सुनील कुमार गोयल, अंचल प्रमुख अहमदाबाद एवं सभी मंडलों से आए मंडल प्रमुख एवं उच्च अधिकारीगण उपस्थित रहे।

मंडल कार्यालय वड़ोदरा के दौरे के दौरान कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद के साथ उपस्थित श्री सुनील कुमार गोयल, अंचल प्रमुख अहमदाबाद एवं सभी मंडल प्रमुख।

कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद का अंचल कार्यालय, जयपुर में स्वागत करते हुए श्री बी.पी. महापात्र, अंचल प्रमुख जयपुर तथा श्री जी. आर. सोनी, उप अंचल प्रमुख जयपुर।

कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद अंचल कार्यालय, जयपुर दौरे के दौरान सभी मंडलों की समीक्षा करते हुए।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद अंचल कार्यालय जयपुर दौरे के दौरान व्यावसायिक उपलब्धियों हेतु श्री ए.के.अनेजा, मंडल प्रमुख, जयपुर को सम्मानित करते हुए साथ में हैं श्री बी.पी. महापात्र, अंचल प्रमुख, जयपुर।

नेहरू प्लेस परिसर जयपुर का दौरा करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद, अंचल प्रमुख जयपुर, श्री बी. पी. महापात्र, तथा उप अंचल प्रमुख जयपुर, श्री जी. आर. सोनी।

मंडल कार्यालय, पानीपत के नये परिसर का उदघाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में हैं श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, श्री एस. के. पाणिग्रही, अंचल प्रमुख, चंडीगढ़ एवं श्री अंजनी कुमार, मंडल प्रमुख, पानीपत।

डी.जी हट (जाट्टल रोड, पानीपत) का उदघाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक, श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में हैं श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली, श्री एस. के. पाणिग्रही अंचल प्रमुख, चंडीगढ, तथा श्री अंजनी कुमार, मंडल प्रमुख, पानीपत।

मंडल कार्यालय, पानीपत के दौरे के दौरान आयोजित बैठक में कार्यपालक निदेशक, श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में हैं श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली, श्री एस. के. पाणिग्रही अंचल प्रमुख, चंडीगढ़ एवं श्री अंजनी कुमार, मंडल प्रमुख, पानीपत।

कार्यपालक निदेशकों के दौरे

उदयपुर मंडल की चेतक सर्कल शाखा के एडी ब्रांच बनने पर उदघाटन करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में हैं जोधपुर अंचल प्रमुख श्री अमित कुमार श्रीवास्तव एवं उप–अंचल प्रमुख श्री दिनेश मित्तल।

कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में उपस्थित जोधपुर अंचल प्रमुख श्री अमित कुमार श्रीवास्तव एवं उप–अंचल प्रमुख श्री दिनेश मित्तल तथा अंचल के अन्य उच्चाधिकारीगण।

श्री वी. के. शर्मा, मंडल प्रमुख, उदयपुर को ईडी चैलेंजर ट्रॉफी प्रदान करते हुए कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद, साथ में हैं जोधपुर अंचल प्रमुख श्री अमित कुमार श्रीवास्तव एंव उप–अंचल प्रमुख श्री दिनेश मित्तल।

उदयपुर दौरे के दौरान कार्यपालक निदेशक श्री अज्ञेय कुमार आजाद के साथ जोधपुर अंचल प्रमुख श्री अमित कुमार श्रीवास्तव एवं उप–अंचल प्रमुख श्री दिनेश मित्तल तथा अंचल के अन्य उच्चाधिकारीगण।

मुख्य सतर्कता अधिकारी का अहमदाबाद दौरा

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के दौरे के दौरान आयोजित निवारक सतर्कता प्रणाली पर पारस्परिक संवाद सत्र में उपस्थित मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी, साथ में हैं, श्री राजेश वर्मा मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय तथा श्री सुनील कुमार गोयल अंचल प्रमुख, अहमदाबाद।

बैंक को प्राप्त पुरस्कार (वित्त वर्ष 2020–21)

इंडियन सोसाइटी फॉर ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट (आईएसटीडी) अवार्ड्स फॉर इनोवेटिव ट्रेनिंग प्रेक्टिस 2019–20	→	सेवाओं (बीऍफएसआई एवं आईटी/आईटीईएस केटेगरी) में द्वितीय स्थान
स्कोच गोल्ड अवार्ड	→	रेस्पोंस टू कोविड–गारंटीड इमरजेंसी क्रेडिट लाइन
आईबीए बैंकिंग टेक्नोलॉजी अवार्ड्स 2021	→	ज्वाईंट रन्नर अप–बेस्ट आईटी रिस्क तथा साईबर सेक्युरिटी इनिशिएटिव
स्कोच आर्डर ऑफ मेरिट 2021	→	अमलगेमेशन ऑफ सिक्यूरिटी सोल्यूशन ऑफ द मर्जिंग एंटिटी
स्कोच आर्डर ऑफ मेरिट 2021	→	गारंटीड एमरजेंसी क्रेडिट लाइन
स्कोच आर्डर ऑफ मेरिट 2021	→	चैट बोट इन पीएनबी एंड मोबाइल आईबीएस बैंकिंग
स्कोच आर्डर ऑफ मेरिट 2021	→	रिडक्शन इन डिक्लाइन इन एईपीएस
डीएससीआई एक्सेलेंस अवार्ड 2020	→	अंडर द केटेगरी "सिक्यूरिटी लीडर ऑफ द ईयर बैंकिंग"
ईटी–बीऍफएसआई एक्सेलेंस अवार्ड 2020	→	आईटी केटेगरी में "मोस्ट इनोवेटिव पब्लिक सेक्टर बैंक ऑफ द ईयर

बैंक ने ओवरआल ईज 2.0 में तृतीय स्थान हासिल किया

प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ

72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर बैंक के संस्थापक पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे तथा श्री अज्ञेय कुमार आजाद एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित समारोह में संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित समारोह में ध्वजारोहण करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव।

कॉरपोरेट गतिविधि

प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित पीएनबी कल्चर ट्रांसफॉर्मेशन एक्शन प्लान वर्कशॉप के दौरान प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे तथा श्री अज्ञेय कुमार आजाद एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी तथा मुख्य महाप्रबंधकगण एवं महाप्रबंधकगण।

वित्तीय समावेशन में बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट की भूमिका

ऋचा बंसल
उप प्रबंधक
अंचल कार्यालय, जयपुर

वित्तीय समावेशन का अर्थ केवल प्रत्येक शहर या प्रत्येक गाँव को बैंकिंग से जोड़ने तक ही सीमित नहीं है अपितु हर बैंकिंग सुविधा रहित क्षेत्र में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराना है फिर चाहे उस क्षेत्र में जनसँख्या घनत्व कम हो या वह क्षेत्र दूर दराज स्थित हो।

सुदूर एवं कम जनसँख्या वाले क्षेत्रों में बैंक की शाखाएं खोलना व्यावसायिक एवं व्यावहारिक रूप से संभव नहीं हो पाता अतः इसके विकल्प के रूप में बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट को यह कार्य दिया गया एवं बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट ने यह जिम्मेदारी बखूबी निभाई है। राजस्थान में पाकिस्तान सीमा तक बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट अपनी सुविधाएँ प्रदान कर रहे हैं।

बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट एजेंट बैंकिंग सुविधा रहित क्षेत्र में स्पोंसर बैंक के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते है एवं स्थानीय ग्रामीण, अशिक्षित, कम पढ़े लिखे लोगों को बैंकिंग सेवाएँ मुहैया करवाते हैं।

बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर की ओस्क बैंकिंग सोल्यूशन (KBS) पोर्टल होता है जिसके माध्यम से ऑनलाइन रियल टाइम बैंकिंग सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। ये सुविधाएँ बेसिक, आधार कार्ड पर आधारित, RUPAY कार्ड पर आधारित, जनसुरक्षा योजनायें तथा वैल्यू एडेड सुविधाएँ हैं।

1. बेसिक सुविधाएंः–
   - नए खाते खोलना,
   - प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 10000/– रु. तक का राशि आहरण
   - प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 25000/– रु. तक की राशि जमा कराना
   - प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 25000/– रु. तक की राशि का अंतर बैंक या अंतरा बैंक अंतरण
   - अंतिम 10 लेन देन का मिनी स्टेटमेंट
   - बैलेंस इन्क्वारी

2. बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर खुला हुआ खाता सामान्य सीबीएस खाता ही होता है जैसा कि शाखा में खोला जाता है।

   उक्त सभी सुविधाएँ आधार संख्या पर आधारित भी हो सकती हैं इसमें नया खाता खोलने के लिए ई–केवाईसी की आवश्यकता होती है।

   खाते में आधार सीडिंग कराने के पश्चात् खाता AEPS (Aadhar Enabled Payment System) द्वारा पेमेंट के लिए मान्य हो जाता है इसमें ON-US एवं OFF-US (सम्बंधित बैंक या दूसरा बैंक) पेमेंट हो सकता है।
   - आधार द्वारा SHG खातों में भी लेन देन किया जा सकता है।

3. रूपे/डेबिट कार्ड ट्रांसजेक्शन, माइक्रो एटीएम की सहायता से किया जाता है। कार्ड द्वारा राशि आहरण प्रति खाता प्रति दिन अधिकतम 25000/– रु. तक किया जा सकता है।

4. जन सुरक्षा योजनाएंः–ये सूक्ष्म बीमा योजनाएं हैंः
   - अटल पेंशन योजना (APY) इसमें 18 से 40 साल तक का व्यक्ति एनरोलमेंट करा सकता है एवं 60 साल के बाद 1000 से 5000 तक की पेंशन मिलती है (जैसा प्लान ग्राहक ने चयनित किया है)
   - प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (PMJJBY) :– इसमें 18 से 50 साल तक का व्यक्ति एनरोलमेंट करा सकता है, इस बीमा पॉलिसी में 2 लाख तक का जीवन बीमा होता है।
   - प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY):– इसमें 18 से 70 साल तक का व्यक्ति एनरोलमेंट करा सकता है, इस बीमा पॉलिसी में 2 लाख तक का दुर्घटना बीमा है।

5. बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर पास बुक प्रिंटिंग भी करा सकते हैं।

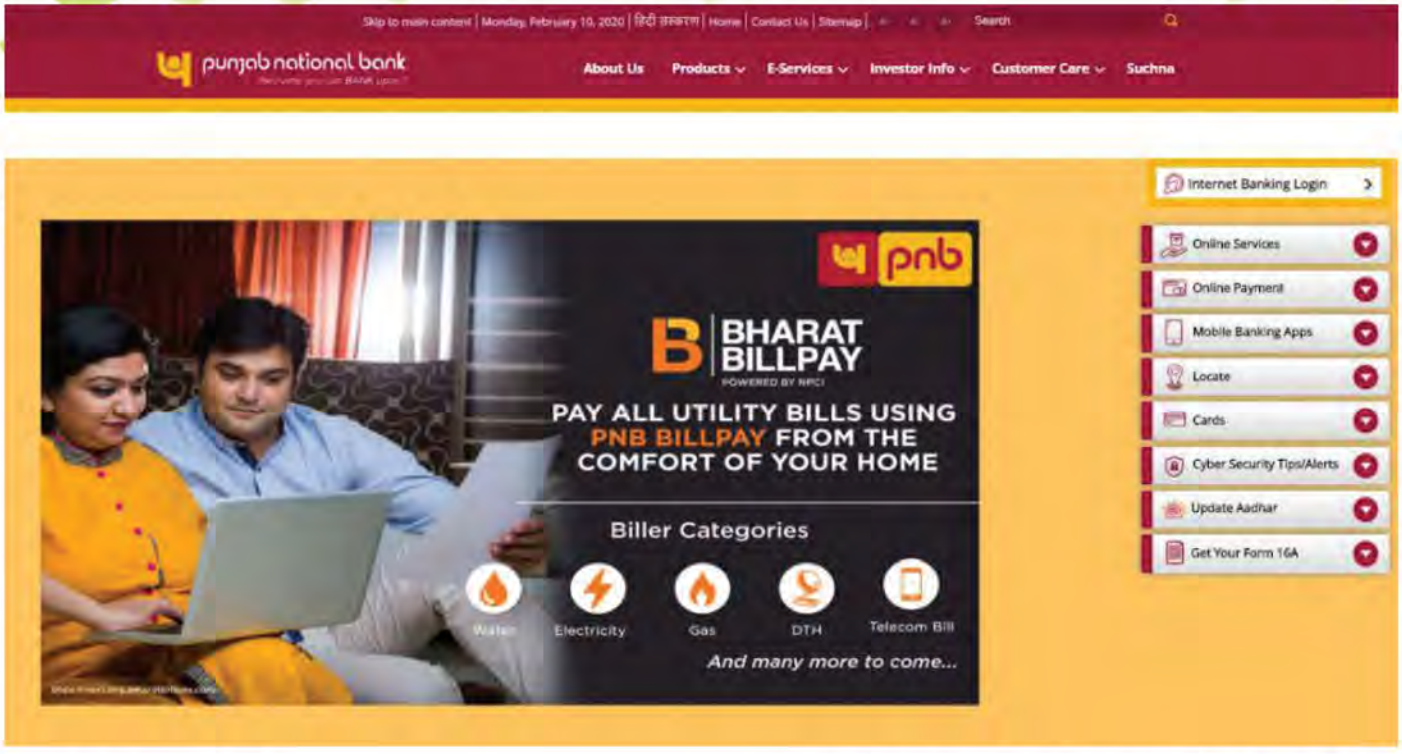

6. वैल्यू एडेड सुविधाएँ:–

- इंटरसोल ट्रांसजेक्शन
- इंडो नेपाल ट्रांसजेक्शन
- MBFD:– PNB multi benefit term deposit

शाखा में होने वाली फिक्स्ड डिपॉजिट का दूसरा रूप MBFD है। सभी आवश्यक डिटेल्स भरने के बाद बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन से MBFD की पावती मिल जाती है, परन्तु एफडीआर रसीद मूल शाखा से ही प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा पेमेंट, क्लोजर, समयपूर्व पेमेंट, नॉमिनी के नाम में बदलाव, एफडी के विरुद्ध ओवरड्राफ्ट या डिमांड लोन के लिए आधार शाखा से ही संपर्क करना होता हैं।

- पीएनबी संचय:– यह एक माइक्रो डिपॉजिट योजना है ग्रामीण इलाकों में छोटी बचत की आदत को विकसित करने के लिए यह योजना लायी गयी है। यह योजना शाखा में की जाने वाली आरडी की तरह ही होती है।

इसमें न्यूनतम 50/– रु या इसके गुणा में अधिकतम 5000/– तक की राशि प्रतिमाह एवं 60000 तक की राशि वार्षिक जमा करा सकते हैं। इसका समय 1 वर्ष से 3 वर्ष तक का हो सकता है।

इस योजना में यदि कोई इनस्टॉलमेंट छूट जाती है तो कोई पेनल्टी नहीं है। समयपूर्व क्लोजर का प्रावधान नहीं है परन्तु स्पेशल केस में कर सकते है परन्तु इसके लिए कुछ शर्तें हैं जैसे कि PNB संचय में खाता खोलने से 3 महीने तक क्लोजर नहीं हो सकता, 6 महीने के तक के क्लोजर पर कोई भी ब्याज नहीं मिलता।

- IMPS (Immediate Payment Service)

शाखाओं में होने वाली NEFT एवं RTGS का दूसरा रूप IMPS है जो बैंकिंग कोरेस्पोंडेंट लोकेशन पर उपलब्ध है। इसके सर्विस चार्जेज 10000/– तक 1.74%, न्यूनतम 22 रु और अधिकतम 87 रु. है। 10001 से 25000 तक 0.87%, न्यूनतम 109 रु. है।

IMPS के निम्नलिखित लाभ हैं:

- तुरंत फण्ड ट्रान्सफर होता है
- समय की बचत होती है
- उपयोग में सरल होता है
- सुरक्षित एवं विश्वसनीय है
- राशि भेजने वाले एवं प्राप्त करने वाले को तत्काल पुष्टि मिल जाती है

क्यों चाहिए कृषि के क्षेत्र में सुधार?

शिवानी सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (कृषि)
पीएनबी लोनपॉइंट, इंदौर

किसान उत्पादन व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) विधेयक, किसान (सशक्तिकरण और संरक्षण) विधेयक, मूल्य आश्वासन और सेवा विधेयक और आवश्यक वस्तुएं (संशोधन) विधेयक, इन तीन भारी नामों के पीछे जो बात छुपी रह गई वो है कृषि विधेयक प्रस्तावित करने के पीछे के कारण। आपका मत क्या कहता है, क्या वास्तव में कृषि के क्षेत्र में सुधार लाने की कोई आवश्यकता है? आइए जानें कि कृषि के क्षेत्र एवं कृषकों के जीवन में सुधार लाना क्यों महत्वपूर्ण है।

1990–91 में जो भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार की लहर आई, जिसने निजीकरण, उदारीकरण और भूमंडलीकरण को हमारी विकासशील अर्थव्यवस्था का बुनियादी घटक बना दिया, उस बड़े बदलाव से भारतीय कृषि क्षेत्र पूर्णरूप से अछूता रह गया। परिणामस्वरूप गैर–कृषक मजदूर की आय एवं कृषि से प्राप्त आय में सन् 2000 तक 1.50 लाख रुपयों का अन्तर आ चुका था। भारत जैसे एक कृषि प्रधान राष्ट्र ने कृषि क्षेत्र की नीतियों एवं निवेश पर ध्यान नहीं दिया, और यहां से शुरुआत हुई कृषि क्षेत्र तथा कृषकों के पिछड़ने, अविकसित और गरीब होने की। एक ऐसा देश जहां मिट्टी न सिर्फ खाद्यान्न फसलें बल्कि विभिन्न उच्च मूल्य वाली फसलें उगाने की उर्वरक क्षमता रखती है, ऐसे देश में कृषि अब संरचना के अभाव में यही अन्न, फल, सब्जियां और अनेक कृषि उत्पादों का आयात अब मजबूरी बन गई है, जिसका प्रभाव देश की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है। ऐसे में जरूरी है कि केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारें अपने वार्षिक बजट का एक समानुपातिक भाग कृषि की आधारिक संरचना को विकसित करने में निवेश करे। कृषि आय के निरंतर घटने का नतीजा यह निकला कि कृषि भूखण्ड साल दर साल छोटे होते चले गए। ऐसे में किसान के पास निर्वाह कृषि करने के अलावा कोई उपाय नहीं बचता क्योंकि अधिक आय प्राप्ति के लिए उच्च मूल्यवाली फसलों को छोटे जोतों पर लगाना आर्थिक रूप से साध्य नहीं होता है।

इन कृषि विधेयकों के लागू होने में सबसे बड़ा कदम होगा भारतीय कृषि परिवेश में कृषि उपज विपणन समिति (APMC) के एकाधिकार को खत्म करना। कृषि नियमों में सुधार आने से किसान PMC मंडियों में अपनी फसल बेचने पर बाध्य नहीं होगा इन नए नियमों से मंडियों में प्रतियोगिता की भावना का परिचय होगा जिससे किसानों को उचित मूल्य मिलने की संभावना बढ़ जाएगी।

खाद्य–प्रसंस्करण उद्योग का विकास पूर्णतः कच्चे माल (फसलें, फल, सब्जियां इत्यादि) की उपलब्धता पर निर्भर करता है। इन नए सुधार प्रस्तावों के बाद किसान अपनी फसल का विक्रय विभिन्न उद्योगपतियों को आसानी से कर सकता है। नतीजतन, किसान अपनी फसल प्रतिस्पर्धात्मक कीमतों पर बेचकर अपनी आय में वृद्धि कर सकेगा।

कृषि विशेषज्ञों एवं नीति निर्माताओं के दल ने कृषि एवं कृषि सम्बद गतिविधियों का विभिन्न क्षेत्रों और पृष्टभूमि पर अध्ययन किया। इन अध्ययनों में जो एक उदाहरण उभरकर आता है वो है बाजार में दुग्ध एवं मत्स्य विक्रय का। इन दोनों ही कृषि सम्बध्द उत्पादों के विक्रय में केंद्र अथवा राज्य सरकार का तनिक भी हस्तक्षेप नहीं होता। इसी कारण दुग्ध एवं मत्स्य के मूल्य पूर्णतः बाजार की माँग और आपूर्ति पर निर्भर करते हैं जिससे किसान को उचित मूल्य पर वर्णित उत्पाद का विक्रय करने का अवसर मिलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि सरकार की न्यूनतम प्रतिबंधात्मक कानूनों की उपस्थिति में ही कृषि उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त होने की संभावना होती है।

केंद्र सरकार की यहाँ पर चर्चित ये तीन नीतियों का कृषि आय बढ़ाने में, कृषकों का जीवन स्तर बेहतर करने में, कोविड संक्रमण से डगमगागई भारतीय अर्थव्यवस्था की गाड़ी को कृषि का मजबूत पहिया देने में महत्वपूर्ण योगदान रहेगा, किसानों को कृषि उपज मंडियों के विभिन्न कर एवं शुल्कों से राहत मिलेगी, खाद्य–प्रसंस्करण उद्योग को बढ़ावा मिलेगा और कृषकों में फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य न मिलने का व्याप्त डर समाप्त होगा और अंततः भारत फिर से सोने की चिड़िया बनने वाले मार्ग पर अग्रसर होगा।

बैंक के संस्थापक लाला लाजपत राय जी की 156वीं जयंती

बैंक ने 28 जनवरी, 2021 को प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली में अपने संस्थापक स्व० लाला लाजपत राय जी की 156 वीं जयंती मनाई। इस अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा माल्यार्पण कर पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, श्री योगी आदित्यनाथ से प्रतिष्ठित रानी लक्ष्मी बाई पुरस्कार प्राप्त करने के लिए सुश्री आकांक्षा चौधरी, स्टाफ सदस्य और एक प्रसिद्ध पैरा शूटर को भी सम्मानित किया। यह पुरस्कार राज्य के प्रसिद्ध खिलाड़ियों को सम्मानित करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की एक विशेष योजना है।

बैंक के संस्थापक लाला लाजपत राय जी की जयंती के अवसर पर उपस्थित प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे तथा श्री अज्ञेय कुमार आजाद एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी।

लालाजी को प्यार से "शेर ए पंजाब" या "पंजाब केसरी" के रूप में याद किया जाता है, जो अपने शुरुआती वर्षों में बैंक के प्रबंधन से सक्रिय रूप से जुड़े थे। उनके नेतृत्व में, पीएनबी पूरी तरह से भारतीय पूँजी से परिचालन शुरू करने वाला पहला 'स्वदेशी' बैंक बन गया। संस्थापक बोर्ड पूरे भारत से तैयार किया गया था, जिसमें देश के आर्थिक हित को आगे बढ़ाने के लिए वास्तव में राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के सामान्य उद्देश्य के साथ विभिन्न विचारधाराओं का समावेश था।

पीएनबी का जन्म 19 मई, 1894 को हुआ था। बैंक ने लाहौर में 12 अप्रैल 1895 को परिचालन शुरू किया और लाला लाजपत राय बैंक में खाता खोलने वाले पहले व्यक्ति थे। भारत में अनिवार्य होने से बहुत पहले, बैंक ने हमेशा की तरह अग्रणी रहते हुए 1895 में लेखापरीक्षक नियुक्त करके मिसाल कायम की थी। इसने 1944 में "टेलर" प्रणाली भी शुरू की। 2008–09 के दौरान, बैंक ने सभी शाखाओं/विस्तार काउंटरों को कोर बैंकिंग समाधान (सीबीएस) में लाने वाला सबसे बड़ा राष्ट्रीयकृत बैंक बनने का लक्ष्य प्राप्त किया।

आज, पीएनबी पूर्ववर्ती ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स और यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के साथ समामेलन के बाद देश का अग्रणी बैंक बन गया है। बैंक ने रिकॉर्ड समय में सभी शाखाओं के आईटी एकीकरण को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। बैंक की 10,900 से अधिक शाखाओं, 1 लाख कर्मचारियों और 18 करोड़ से अधिक ग्राहकों के साथ अखिल भारतीय उपस्थिति है।

जीवन में सफलता का रहस्य है खुद को आने वाले अवसर के लिए तैयार करना।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 8 मार्च, 2021 को प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली में महिला कर्मचारियों द्वारा महामारी के दौरान अबाध बैंकिंग सेवा प्रदान करने में दिए गए सहयोग और एक परिवार के रूप में कंधे से कन्धा मिलाकर किए गए प्रतिबद्ध कार्य के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन पीएनबी प्रेरणा की अध्यक्षा श्रीमती जानकी मल्लिकार्जुन राव, उपाध्यक्षा, पीएनबी प्रेरणा, श्रीमती संगीता कुमार, उपाध्यक्षा, पीएनबी प्रेरणा, श्रीमती अंजना दूबे और अन्य वरिष्ठ सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर बैंक द्वारा बैंक की महिला योद्धाओं सुश्री आकांक्षा चौधरी, पैरा शूटर, सुश्री ओली मिश्रा, कलाकार (दिव्यांग) और सुश्री मांडवी गर्ग, संगीतकार (दिव्यांग) को सम्मानित किया।

इस अवसर पर अपनी सीएसआर पहल के रूप में बैंक ने नई दिल्ली स्थित एक एनजीओ थाई किंगडम कम फाउंडेशन के साथ गठबंधन किया है। बैंक ने नई दिल्ली में विभिन्न एनजीओ में स्वचालित सेनेटरी पैड वेंडिंग मशीन और इलेक्ट्रिक इंसीनेटर इंस्टॉल किए हैं। इस दौरान पीएनबी ने सिलाई मशीनों और सैनिटरी पैड का वितरण भी किया।

पीएनबी के 127 वर्षों के शानदार इतिहास के सफर में महिला स्टाफ सदस्यों की भी समान रूप से भागीदार रही हैं और ये रूपांतरण के अग्रदूत तथा समग्र विकास गाथा का प्रमुख हिस्सा रही हैं। वर्तमान में, हमारे बैंक के शीर्ष प्रबंधन में 5.56% महिला स्टाफ सदस्य हैं और 21.27% लिपिक स्टाफ सदस्य महिलाएं हैं। इसके अतिरिक्त, हमारे बैंक में अधिकारी संवर्ग के स्केल 1 से 8 तक में कुल 24% महिला स्टाफ सदस्य हैं।

इस अवसर पर, बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस.एस. मल्लिकार्जुन राव ने कहा कि वर्षों से महिलाओं ने अपनी जिम्मेदारियों के प्रबंधन में एक बहुपक्षीय भूमिका निभाई है। हमारा उद्देश्य महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना है और यह तभी संभव है जब हम इनके लिए अधिक संतुलित वातावरण बनाएंगे। बैंक हमेशा कार्यस्थल पर अधिक बेहतर वातावरण बनाने और महिलाओं को सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता रहा है।

इस वर्ष के अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस अभियान की थीम

"चुनौती को चुनो" है जो यह दर्शाता है कि महिलाएं दुनिया में लैंगिक पक्षपात और असमानता को चुनौती दे सकती हैं और अपनी तरक्की और उन्नति के लिए अग्रसर हो सकती हैं। यह थीम पीएनबी महिला उद्यम निधि योजना, पीएनबी महिला समृद्धि योजना, शिशु–गृह वित्तपोषण योजना, पीएनबी महिला सशक्तीकरण अभियान और पीएनबी पावर राइड स्कीम जैसी अनेक योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की सहायता करने संबंधी पीएनबी की विचारधारा के अनुरूप है।

प्रधान कार्यालय में आयोजित समारोह में महिलाओं को स्व–सुरक्षा के गुर सिखाए गए। महिला स्टाफ द्वारा दी गई प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया।

प्रधान कार्यालय में आयोजित महिला दिवस समारोह की झलकियाँ

प्रधान कार्यालय, द्वारका में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दौरान श्रीमती जानकी मल्लिकार्जुन राव, अध्यक्षा पीएनबी प्रेरणा, साथ में हैं श्रीमती संगीता कुमार एवं श्रीमती अंजना दुबे उपाध्यक्षा, पीएनबी प्रेरणा तथा बैंक के वरिष्ठ महिला स्टाफ सदस्यगण।

बैंक की स्टाफ सदस्य सुश्री आकांक्षा चौधरी, पैरा शूटर को सम्मानित करते हुए श्रीमती जानकी मल्लिकार्जुन राव, अध्यक्षा पीएनबी प्रेरणा।

प्रधान कार्यालय, द्वारका में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में उपस्थित पीएनबी प्रेरणा अध्यक्षा, श्रीमती जानकी मल्लिकार्जुन राव, उपाध्यक्षाएं श्रीमती संगीता कुमार एवं श्रीमती अंजना दुबे तथा बैंक के वरिष्ठ महिला स्टाफ सदस्यगण एवं पीएनबी प्रेरणा के सदस्यगण।

प्रधान कार्यालय, द्वारका में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में एनजीओ थाई किंगडम कम फाउंडेशन, नई दिल्ली के अधिकारियों को सिलाई मशीनें और सैनिटरी पैड प्रदान करते हुए श्रीमती जानकी मल्लिकार्जुन राव, अध्यक्षा पीएनबी प्रेरणा।

प्रधान कार्यालय में आयोजित महिला दिवस समारोह की झलकियाँ

अंचल/मंडल कार्यालयों में आयोजित महिला दिवस की झलकियाँ

अंचल कार्यालय, जयपुर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर श्रीमती दुर्गा वर्मा, संस्थापिका मानव सेवा ट्रस्ट, जयपुर को सम्मानित करते हुए श्रीमती अनीता महापात्र, अध्यक्षा, पीएनबी प्रेरणा, श्रीमती आरती सोनी, उपाध्यक्षा तथा अन्य पीएनबी प्रेरणा सदस्य।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुजफ्फरनगर में जरुरतमंदों को दैनिक उपयोग की वस्तुएं प्रदान करते हुए श्रीमती अग्रवाल (पत्नी श्री विशाल अग्रवाल, मंडल प्रमुख, मुजफ्फरनगर), श्रीमती बलजीत कौर (पत्नी श्री सुरिन्दर पाल सिंह, अंचल प्रमुख, मेरठ) एवं श्री विशाल अग्रवाल, मंडल प्रमुख, मुजफ्फरनगर।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मध्य प्रदेश की प्रथम लोको पायलट श्रीमती संध्या यादव(बाएं) तथा समाजसेविका श्रीमती अर्चना ज्ञानी (दांए) को सम्मानित करते हुए मंडल प्रमुख, उज्जैन श्री पी. एस. राठौर।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित महिला सम्मान समारोह के दौरान अंचल प्रमुख भुवनेश्वर श्री अश्वनी कुमार, ने श्रीमती सोनाली दास, महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक, ओडिशा को सम्मानित किया। साथ में हैं श्री मुक्ति रंजन रॉय, महाप्रबंधक, आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय, भुवनेश्वर, श्री परेश कुमार दाश, मंडल प्रमुख, भुवनेश्वर, श्री शिवानंद भंज, मंडल प्रमुख, कटक।

अंचल कार्यालय, मेरठ में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर केक काटते हुए कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. दीपशिखा शर्मा, प्राचार्य, रघुनाथ महिला महाविद्यालय, मेरठ एवं श्री सुरिंदर पाल सिंह जी, अंचल प्रमुख, मेरठ। इस अवसर पर श्री संजीव श्रीवास्तव, उप अंचल प्रमुख, मेरठ, श्री निलेश कुमार, मंडल प्रमुख, मेरठ, पश्चिम' श्री पी. के. जैन, उप अंचल प्रमुख, मेरठ भी उपस्थित रहे।

अंचल/मंडल कार्यालयों में आयोजित महिला दिवस की झलकियाँ

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित राजभाषा संगोष्ठी के अवसर पर श्रीमती रिनीकी भूयान शर्मा प्रबंध निदेशक, प्राइड ईस्ट एंटरटैनमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड का स्वागत करते गुवाहाटी अंचल प्रमुख श्री शिव शंकर सिंह।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास, शामली में वॉशिंग मशीन व वाटर प्यूरीफायर प्रदान करते हुए श्रीमती बलजीत कौर (पत्नी श्री सुरिन्दर पाल सिंह, अंचल प्रबंधक एवं श्रीमती श्रद्धा रानी (पत्नी श्री निलेश कुमार, मंडल प्रमुख, मेरठ पश्चिम) तथा शामली जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी।

मंडल कार्यालय मेरठ (पश्चिम) द्वारा "अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस" के उपलक्ष्य में कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत शामली जिले के 'कस्तूरबा गांधी विद्यालय' के गर्ल्स छात्रावास परिसर मे 'पीएनबी प्रेरणा क्लब' के तत्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का नेतृत्व श्रीमति बलजीत कौर (पत्नी श्री सुरेन्द्र पाल सिंह, अंचल प्रमुख मेरठ), श्रीमति श्रद्धा रानी (पत्नी श्री नीलेश कुमार, मंडल प्रमुख मेरठ पश्चिम), द्वारा किया गया, इस अवसर पर बेसिक शिक्षा अधिकारी श्रीमति गीता भी उपस्थित रही।

मंडल कार्यालय, मुजफ्फरपुर द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के शुभ अवसर पर राजकीय विद्यालयों की कुल 6 छात्राओं को गोद लिया तथा कक्षा 10वीं तक उनके शिक्षा ग्रहण में आर्थिक सहायता प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर मुजफ्फरपुर जिला के जिला परियोजना पदाधिकारी श्री अमरेन्द्र पाण्डेय विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही इस कार्यक्रम में मंडल प्रमुख, मुजफ्फरपुर श्री अभिजीत सिन्हा, उप मंडल प्रमुख, मुजफ्फरपुर श्री अनिल कुमार, मुख्य प्रबंधक श्री अरुण कुमार झा, जिला समन्वयक अधिकारी श्री उत्तम कुमार एवं शाखा प्रबंधक श्री राजीव रंजन मौजूद रहे।

अंचल कार्यालय, देहारादून में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष पर "पीएनबी प्रेरणा" की अध्यक्षा श्रीमती सपना सेवक साथ में हैं अंचल प्रमुख श्री आर .डी. सेवक तथा महिला स्टाफ सदस्यगण।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित महिला सम्मान समारोह के दौरान इनोवेशन द बिजनेस स्कूल की प्रबंध निदेशक श्रीमती दीप्ति त्रिपाठी को सम्मानित करते हुए अंचल प्रमुख, भुवनेश्वर, श्री अश्वनी कुमार।

बैंकिंग व्यवसाय वृद्धि में महिलाओं की भूमिका

माधुरी कुमारी
शाखा प्रबंधक
शाखा- हनुमान नगर
मंडल कार्यालय, दक्षिण पटना

एक राष्ट्र तभी सशक्त बनता है जब उसका प्रत्येक नागरिक चाहे महिला हो या पुरुष सशक्त हो। किसी संस्कृति को अगर समझना हो तो सबसे आसान तरीका है उस संस्कृति में नारी की हालात को समझने की कोशिश की जाए। किसी भी देश के विकास संबंधित सूचकांक को निर्धारित करने हेतु उद्योग, व्यापार, खदान उपलब्धता, शिक्षा इत्यादि के स्तर के साथ ही देश की महिलाओं की स्थिति का भी ध्यान रखा जाता है। नारी की सूची एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नति, समृद्ध तथा मजबूत समाज की घोतक है।

वर्तमान में नारियां प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही हैं। भारत सरकार ने देश में महिलाओं की स्थिति सुधारने का लक्ष्य हासिल करने के लिए वर्ष 2001 में महिला सशक्तिकरण नीति जारी की, जिसका महत्वपूर्ण बिंदु है महिलाओं को देश के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक इत्यादि क्षेत्रों में बराबर का भागीदार बनाना। शिक्षा एवं आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं में नवीन चेतना भर दी है। आज महिलाएं राजनीतिक, कला, व्यापार, खेल, सहित रक्षा क्षेत्र में भी नए आयाम गढ़ रहीं हैं। यह उनकी कार्यक्षमता का घोतक है क्योंकि प्रायः कमजोर समझी जाने वाली महिलाएं आज कठिन माने जाने वाले क्षेत्रों में भी अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि "महिलाएं पुरुषों से बेहतर साबित हो सकती हैं बस उनको मौका देने की जरूरत है। आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के कारण महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है। देश के कई आर्थिक संस्थानों के शीर्ष पदों पर महिलाएं कार्यभार संभाल कर महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

महिलाएं मानसिक तौर पर ज्यादा सशक्त होती हैं, किसी विषय पर सही या संतुलित निर्णय लेने में महिलाएं पुरुषों से बेहतर साबित होती हैं, इसका कारण है यह भी है कि एक महिला पारिवारिक पृष्ठभूमि में ज्यादा जुड़ी रहकर मां, पत्नी, पुत्री तथा अन्य जिम्मेदारी पूर्ण कर्त्तव्यों का निर्वहन करती है।

यदि बात बैंकिंग व्यवसाय की जाए तो महिलाओं का कार्य बल 25 प्रतिशत है जोकि थोड़ा कम है। बैंकिंग क्षेत्र में महिलाओं का आगमन 70 के दशक के बाद प्रारंभ हुआ तथा वह भी लिपिक के पद पर ही। परंतु महिलाओं ने अपने अथक प्रयास एवं कार्य क्षमता से बैंकिंग क्षेत्र में पदोन्नति प्राप्त कर उच्च से उच्च पद की प्राप्ति की तथा बैंक में अपनी सहभागिता की छाप छोड़ी। जहां तक बात गुणात्मक एवं कुशल ग्राहक सेवा की हो, महिलाएं एक बेहतर ग्राहक सेवा देने में सफल होती हैं जहां धैर्य, कुशलता, वाकपटुता, मृदुलता, सजगता जैसी उपलब्धता ग्राहकों को बैंकिंग व्यवसाय से जुड़े रहने तथा प्रगति में मदद करते हैं। उच्च पदों पर स्थापित महिला अधिकारी बेहतर व्यापारिक निर्णय लेकर बैंकिंग व्यवसाय को एक नए आयाम तक पहुंचाने में सफल हो रही हैं।

जहां तक बात बेहतर समय प्रबंधन की कि जाए महिलाएं बेहतर समय प्रबन्धन कर हरेक बजट/टारगेट को सफलतापूर्वक हासिल कर रही हैं। कार्य क्षेत्र में सकारात्मक एवं शांतिपूर्वक वातावरण बनाकर महिलाएं कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी व्यवसाय को उन्नत बना रही हैं। विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्थिक तौर पर महिलाओं को सशक्त बनाने के मामले में दुनिया के 190 देशों में भारत का स्थान 117वां है, इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि महिलाओं के सक्षम एवं कुशल होने के बावजूद भी भारत में महिलाओं को दी जाने वाली आर्थिक समानता, आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता की कमी है। वहीं वैश्विक महिलाएं कार्यबल के प्रतिशत में भी भारत की स्थिति बेहतर नहीं है इनका समाधान तभी संभव है जब सकारात्मक आर्थिक और सामाजिक नीतियों के माध्यम से महिलाओं के विकास हेतु ऐसा वातावरण बनेगा जो उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता का अनुभव करने के लिए सक्षम बनाए।

शिक्षा की गुणवता का सम्मान उपयोग, कैरियर तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन, रोजगार में समान पारिश्रमिक, सामाजिक सुरक्षा, सार्वजनिक कार्यालय आदि तक समान पहुंच महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव के सभी रूपों का उन्मूलन, पुरुषों और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से सामाजिक व्यवहार और समुदाय प्रथाओं में परिवर्तन इन प्रमुख उपायों से ही महिला विकास व पूर्ण सहभागिता संभव है।

"अपने कर्तव्यों संग नारी, भर रही है अब उड़ान,
ना है कोई शिकायत, ना कोई थकान।
सशक्त नारी से ही बनेगा सशक्त समाज,
यही है नारी की पहचान !!"

सीएसआर गतिविधियाँ

अंचल कार्यालय, जयपुर के अंतर्गत सीएसआर गतिविधियों के तहत बालिका विद्यालय, मानसरोवर में सरकारी विद्यालयों में प्रयोगार्थ 150 पिन बोर्ड प्रदान करते हुए श्री बी. पी. महापात्र, अंचल प्रमुख, जयपुर तथा अन्य स्टाफ सदस्यगण।

जिला सैनिक कल्याण कार्यालय, सीकर में सीएसआर. गतिविधियों के तहत वाटर कूलर भेंट करते हुए जयपुर–सीकर मंडल प्रमुख श्री अभिनंदन कुमार सौगानी।

पीएनबी द्वारा गोद लिए गए गाँव सिंहासन के राजकीय आदर्श स्कूल में सीएसआर गतिविधियों के तहत बच्चों को स्पोर्ट्स किट भेंट करते हुए जयपुर अंचल प्रमुख श्री बी. पी. महापात्र, सीकर सांसद सुमेधानन्द एवं जयपुर–सीकर मंडल प्रमुख श्री ए.के. सौगानी।

पंजाब नैशनल बैंक की सामाजिक संस्था "पीएनबी प्रेरणा" की ओर से श्रीमती बलजीत कौर धर्मपत्नी श्री एस. पी. सिंह, अंचल प्रबंधक, मेरठ, श्रीमती आरती श्रीवास्तव धर्मपत्नी श्री संजीव श्रीवास्तव, उप–अंचल प्रबंधक व श्रीमती वीना भुटानी धर्मपत्नी श्री एच.के. भुटानी, प्रमुख, आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय, मेरठ के कर कमलों से ज्योति निवास अनाथ आश्रम, मेरठ में 30 बेसहारा कन्याओं को दैनिक जरूरत का सामान प्रदान किया गया।

मंडल कार्यालय राजकोट के मंडल प्रमुख श्री एस. के. राघव सीएसआर गतिविधियों के तहत गरीब तथा जरूरतमंद लोगों को खाद्य सामग्री का वितरण करते हुए।

नवनिर्मित मंडल कार्यालय जींद के उद्घाटन के अवसर पर मंडल कार्यालय, जींद के सौजन्य से दिव्यांग छात्रों को किताबें व स्टेशनरी वितरित की गई।

सीएसआर गतिविधियाँ

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, देहारादून ने "पीएनबी प्रेरणा" कार्यक्रम के तहत पीएनबी प्रेरणा की अध्यक्षा श्रीमति सपना सेवक ने राजकीय इंटर कॉलेज, किशनपुर की छात्राओं को स्कूल बेग प्रदान किए ।

दिव्य ज्याति फाउंडेशन पत्रपाड़ा भुवनेश्वर के आश्रय रहित बच्चियों को लेखन सामग्री भेंट करते हुए अंचल प्रमुख भुवनेश्वर श्री अश्विनी कुमार।

72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्री बी. पी. महापात्र, अंचल प्रबंधक जयपुर तथा श्री जी.आर.सोनी, उप अंचल प्रबंधक, जयपुर एनजीओ स्वावलंबन संस्थान के सदस्य श्री कौशल गुप्ता को जरूरतमंदों को वितरण के लिए कम्बल प्रदान करते हुए।

मंडल कार्यालय, नागपुर द्वारा स्वतंत्रता सेनानी बैंक के संस्थापक लाला लाजपत राय की जयन्ती के अवसर पर कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत जीवनाश्रम अनाथालय एवं वृद्धाश्रम के बच्चों के लिए 2 कंप्यूटर एवं वृद्धों को शयन हेतु पलंग भेंट किये गए।

कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व के तहत वृद्धाश्रम राजकोट में सारेगामा कारवां देते हुए श्री सुनील कुमार गोयल, अंचल प्रमुख अहमदाबाद, श्री आकाश वर्मा, सहायक महाप्रबंधक, एमसीसी राजकोट, श्री एस. के. राघव मंडल प्रमुख, राजकोट।

कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत मंडल कार्यालय, मुजफ्फरपुर द्वारा शाखा सोनबरसा साह में जरूरतमंदों को कंबल वितरित करते हुए मंडल प्रमुख श्री अभिजीत सिन्हा। साथ में हैं मुख्य प्रबंधक श्री अरूण कुमार झा, वरिष्ठ प्रबंधक श्री अरविन्द सिंह तथा शाखा प्रमुख श्रीमती कीर्ति बाला व अन्य स्टाफ सदस्य।

कृषि–वैश्विक महामारी के बाद उम्मीद की एक किरण

भारत एक वैश्विक कृषि पावरहाउस है, जो कृषि उत्पादन में दुनिया भर में दूसरे स्थान पर है। यह चावल, दूध, दाल और मसालों का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक तथा गेहूं, कपास, सब्जियों और चाय का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। कृषि ग्रामीण भारत में आजीविका का प्राथमिक स्रोत है। यह क्षेत्र न केवल कुल जीडीपी में 18% हिस्सेदारी प्रदान करता है, बल्कि भारत के 60–70% कर्मचारियों को रोजगार भी प्रदान करता है। कोविड–19 को SARS की तुलना में वैश्विक अर्थव्यवस्था पर अधिक प्रभाव डालने की भविष्यवाणी की गई है और भारत ऐसी अभूतपूर्व स्थितियों के तहत कोई अपवाद नहीं है। एक आसन्न आर्थिक संकट और मंदी की 'चिंता को कम करने' के जवाब में सरकार ने सीमा बंद की थी, यात्रा प्रतिबंधित थी और संगरोध (क्वारंटाइन) लागू था। चार उल्लेखनीय मुद्दे हैं जिन्होंने कृषि को प्रभावित किया है और उन्हें कोविड–19 की स्थितियों में संबोधित किया जाना चाहिए। सबसे पहले, कोविड–19 महामारी कृषि, खेती और प्रबंधन प्रथाओं के रास्ते में नहीं आई, लेकिन मजदूरों की अनुपलब्धता ने कटाई गतिविधियों को बाधित किया। दूसरे, खाद्य, मांग और आपूर्ति का संकट लोगों के एक वर्ग द्वारा अपनी नौकरी खोने के कारण उभरा है, जबकि समाज के अन्य वर्गों ने अपने घरों में खाद्य पदार्थों की खरीद–फरोख्त की है। तीसरा, सब्जियों, दूध और पोल्ट्री जैसी खराब होने वाली वस्तुओं पर प्रभाव, अनाज और दालों की तुलना में अधिक गंभीर और बदतर है। खासकर रेस्तरां और फूड मॉल बंद होने के कारण खराब होने वाले खाद्य पदार्थों की मांग को बड़ा झटका लगा। वर्तमान स्थिति हमें अनिश्चित परिस्थितियों में होने वाली परेशानियों के बारे में बताती है और भविष्य के संकटों को कम करने के लिए एक परिप्रेक्ष्य के साथ आधार बनाती है।

कोविड–19 के प्रकोप ने कृषि क्षेत्र के लचीलेपन (resilience) का परीक्षण किया है। दुनिया भर में एक ठहराव और सार्वजनिक जीवन में स्थिरता आ गयी है, इसीलिए सभी का ध्यान देश की स्वास्थ्य–देखभाल प्रणालियों (health-care systems) पर है। खाद्य और कृषि संगठन (FAO, 2020a) की रिपोर्ट है कि कोविड–19 महामारी कृषि को दो महत्वपूर्ण पहलुओं में प्रभावित करता है: मांग और खाद्य आपूर्ति। ये दोनों पहलू खाद्य सुरक्षा से सीधे जुड़े हुए हैं, इसलिए खाद्य सुरक्षा भी खतरे में है। वैज्ञानिक समुदाय और अधिकारीगण वर्तमान और भविष्य की महामारी के छोटे और दीर्घकालिक प्रबंधन के लिए ज्ञान और जानकारी जुटाने में लगे हुए हैं।

COVID–19, कृषि और आपूर्ति श्रृंखला गतिविधियों में से कुछ को बाधित करता है। रिपोर्टों से पता चलता है कि प्रवासी

श्रम की अनुपलब्धता फसल कटाई की गतिविधियों को बाधित कर रही है, विशेष रूप से उत्तर पश्चिमी भारत में, जहां गेहूं और दालों की कटाई की जाती है। परिवहन समस्याओं और अन्य मुद्दों के कारण आपूर्ति श्रृंखला बाधित होती है। हालांकि गेहूं, सब्जियों और अन्य फसलों की कीमतों में गिरावट आई है, फिर भी उपभोक्ता अक्सर अधिक भुगतान करते हैं। तालाबंदी (lockdown) के दौरान, मीडिया रिपोर्टों ने संकेत दिया कि होटल, रेस्तरां और चाय की दुकानों को बंद करने से दूध की बिक्री में कमी आई। कृषि उत्पाद ज्यादातर प्रकृति में जल्दी खराब होने वाले पदार्थ होते हैं, जिसके कारण किसान अपने बिना बिके उत्पादों को अधिक समय तक स्टोर करने के लिए मजबूर होते हैं। यह भोजन की गुणवत्ता में कमी और उत्पादन की लागत में वृद्धि की ओर इशारा करता है। घबराए हुए ग्राहक खाद्य पदार्थों का ढेर एकत्रित करना शुरू कर देते हैं जिससे भोजन की गुणवत्ता और कीमत प्रभावित होती है।

बिक्री और खरीद क्षमता कम होने से भोजन की मांग प्रभावित हुई है। कोविड–19 महामारी से नौकरी और आय में कमी तथा धंधे में नुकसान हुआ जिसके कारण किराने का सामान, रेस्तरां, खुदरा खाद्य दुकानों में मांग काफी प्रभावित हुई है।

नौकरी और काम के घंटों में कमी से खाद्य सुरक्षा पर असर पड़ा है क्योंकि घरेलू आय में कमी आई है। आपूर्ति पक्ष के पहलुओं में, कोविड–19 लॉकडाउन में कृषि मजदूरों की कमी के कारण खाद्य प्रसंस्करण और पैकेजिंग सुविधाओं में भी गिरावट आयी है। हालांकि केंद्र और राज्य सरकारें किसान की शिकायतों को दूर करने के लिए सामंजस्य से काम कर रही हैं, फिर भी बीज, उर्वरक और फसल उत्पादन एवं अन्य कृषि आदानों का किसानों तक पहुंचना चुनौतीपूर्ण है। परिवहन सुविधाओं की कमी ने भी कृषि क्षेत्र में बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न की है। कोविड–19 एक गंभीर महामारी, जिसके कारण श्रम की उपलब्धता में 25% से अधिक की कमी आयी, दुनिया भर में भोजन की महत्वपूर्ण कमी पैदा कर सकती है।

कोविड–19 का मानव स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव पड़ा है जिसके असर से कृषि और अर्थव्यवस्था भी वंचित नहीं है। जैसा कि वायरस ने हमारे आर्थिक और सामाजिक जीवन में विस्फोट किया है, कृषि क्षेत्र ने लगभग तत्काल पुनर्संरचना की। Ag Funder News के एक लेख के मुताबिक खाद्य और कृषि एक बहुत ही सुरक्षित क्षेत्र है क्योंकि "कोरोना महामारी के समय में केवल एक चीज जो हर व्यक्ति खरीद रहा है वह है भोजन।" कोविड–19 की वर्तमान परिस्थितियों में यह जानकारी अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि फसल की कटाई से लेकर आपूर्ति श्रृंखला तक कोविड–19 ने कई परतों में कृषि को प्रभावित किया है। अपना अस्तित्व बचाने की आवश्यकता हमें "संकट में अवसर खोजने" के लिए प्रेरित करती है। नई संभावनाएँ संकट में उभरती हैं और नए रास्ते खुलते हैं। कोविड–19 महामारी से मिली सबक के आधार पर, अब हम कोविड–19 के महामारी के बीच उम्मीद की किरण खोजने के उपाय कर सकते हैं और शायद भविष्य के दिनों में उन संकटों को कम कर सकते हैं। वर्तमान में, हमारे पास अवसर है कि हम पिछली गलतियों को सुधारें और एक अधिक स्वस्थ एवं टिकाऊ खाद्य प्रणाली बनाएं।

ज्ञानेश्वर झा और रवि मीणा
प्रायमिकता क्षेत्र एवं वित्तीय समावेशन प्रभाग
प्रधान कार्यालय, द्वारका

एक गोल चबूतरा

सतबीर सिंह
अधिकारी
मंडल कार्यालय- एसएएस नगर (मोहाली)

एक गोल चबूतरा है
जो सब देख रहा है...

समय का बदल जाना
कच्ची सड़कों का पक्की हो जाना
मिट्टी के घरों पे सीमेंट का चढ़ जाना
हमारे घरों में से तेरा और मेरा निकल जाना...

एक गोल चबूतरा है
जो सब कुछ देख रहा है...

वो मिलकर बैठने से अब अकेले समय बिताना
दिल खोलकर हंसने से अब ऊपर से मुस्कुराना
कपड़ों को ना बांटने से अब माँ बाप तक को बाँट लेना...

एक गोल चबूतरा है
जो सब देख रहा है...

कुछ ना होते हुए भी
वो सुकून के पल
अब सब कुछ होते हुए भी
हर रात बेचैनी के संग...

उस प्यार का दिखावे में बदल जाना
गुरूर में इंसान का खुदा बन जाना...

एक गोल चबूतरा है
जो सब देख रहा है...

वित्तीय समावेशन एवं कृषि का महत्व

बलदेव मुण्डा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, राँची दक्षिण

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कहने का अर्थ है कि भारत गावों का देश है और ग्रामीण समुदायों में अधिक मात्रा में कृषि कार्य किया जाता है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। देश में पहले पारंपरिक कृषि की जाती थी जिसमें उर्वरक के रूप में गाय के गोबर का उपयोग किया जाता था, न कोई सिंचाई व्यवस्था थी, न ही किसी प्रकार के कीटनाशक का उपयोग किया जाता था। जिसके कारण फसलों की उपज अपेक्षाकृत कम होती थी। लेकिन 1960 के दशक के बाद कृषि के क्षेत्र में आयी हरित क्रांति के साथ नया दौर प्रारम्भ हुआ। अब कृषि फसलों के पैदावार के लिए सिंचाई, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक का उपयोग किया जाने लगा जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ। देश में खाद्यान के उत्पादन में वृद्धि हुई और देश इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने लगा। आज देश में पर्याप्त मात्रा में खाद्यान मौजूद है। इसे सही तरीके से भंडारण और वितरण की जरूरत है ताकि सभी जरूरतमंदों को उनकी आवश्यकतानुसार खाद्य सामग्री प्राप्त हो सके। आज भी हमारे देश की आबादी का अधिकतर हिस्सा कृषि या कृषि संबंधी गतिविधियों से जुड़ा हुआ है या कहें तो इसी पर इनकी निर्भरता है। अपनी जीविका का अर्जन इसी क्षेत्र से अर्जित करते हैं। देश में साल भर कृषि कार्य और इससे संबंधी गतिविधियां चलती रहती हैं। लेकिन इस क्षेत्र से जुड़े लोगों की स्थिति उतनी अच्छी नहीं है कि कृषि संबंधी सारी आवश्यकताएँ स्वयं पूरी कर सकें। इन्हें आर्थिक सहायता की जरूरत होती है। यदि भारतीय अर्थव्यवस्था को देखा जाए तो पिछले कुछ वर्षों में कृषि क्षेत्र ने ही सकारात्मकता के साथ विकास किया है और भारतीय जीडीपी में अहम योगदान दिया है। इस क्षेत्र को और गति प्रदान करने के लिए वित्तीय समावेशन के माध्यम से छोटे और मझौले किसानों को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करने की आवश्यकता है।

देश में आज भी अधिकतर लोग गरीबी रेखा से नीचे अपना गुजर–बसर करते हैं और कृषि या इससे संबंधित कार्य

में संलिप्त रहते हैं। इन्हें अपना कार्य करने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है। पूंजी के अभाव में वे समय पर फसल की बुआई, सिंचाई, कटाई, डुलाई आदि नहीं कर पाते हैं। जिसके कारण फसल की पैदावार ठीक ढंग से नहीं हो पाती है। कृषि क्षेत्र भारत की जीडीपी में अहम भूमिका निर्वाह करता है। अतः इसका सीधा असर भारत की जीडीपी पर भी पड़ता है। हमारे देश में आज भी लोग साहूकार या अन्य धनी लोगों से ऋण लेकर अपना कृषि कार्य करते हैं और चुकौती न कर पाने की स्थिति में विभिन्न प्रकार की प्रताढ़ना के शिकार हो जाते हैं। ऐसे में वित्तीय समावेशन कार्यक्रम कृषि और कृषि गतिविधियों से जुड़े लोगों के लिए बहुत ही लाभकारी है। इसके माध्यम से लोगों को बैंकिंग सेक्टर से आसान और सस्ते दरों पर ऋण और अग्रिम प्राप्त हो जाता है। इसका लाभ उठाकर कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाले किसान समय पर फसलों की बुआई, सिंचाई, कटाई आदि कर सकते हैं। साथ ही बैंक के माध्यम से लिए गए ऋण के भुगतान के लिए काफी समय मिल जाता है और इस पर सरकार की सब्सिडी भी मिलती है।

किसी भी देश के आर्थिक विकास का मुख्य आधार उस देश का बुनियादी ढाँचा होता है। यदि बुनियादी ढाँचा ही कमजोर हो तो कितना भी प्रयास कर लिया जाए आर्थिक व्यवस्था को मजबूत नहीं बनाया जा सकता है। यही कारण है कि देश के आर्थिक विकास और उन्नति के लिए हमारे नीति निर्माताओं द्वारा ऐसे मार्ग निकाला गया जिसके माध्यम से सरकार आम आदमी को देश के आर्थिक विकास में शामिल कर सके। इसी को ध्यान

में रखते हुए सरकार द्वारा वित्तीय समावेशन कार्यक्रम लाया गया और इसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाने लगा कि अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी आर्थिक विकास के लाभों से जोड़ा जा सके, कोई भी व्यक्ति आर्थिक सुधारों से वंचित न रहे।

वित्तीय समावेशन का मुख्य उद्देश्य समाज के पिछड़े एवं कम आय वाले लोगों और समाज के वंचित लोगों को वहनीय लागत पर भुगतान, बचत, ऋण आदि वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना तथा उन प्रतिबंधों को दूर करना है जो वित्तीय क्षेत्र में शामिल होने से लोगों को बाहर रखते हैं और किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध कराना है। वित्तीय समावेशन की पहुँच बिना किसी रुकावट के विकास के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए सरकार द्वारा कई अभियान या योजनाएं प्रारंभ किए गए। जिनमें प्रधानमंत्री जन–धन योजना, प्रधानमंत्री जीवन सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना, प्रधानमंत्री अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना इत्यादि प्रमुख हैं। इसी कड़ी में सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान का प्रारंभ किया गया। इसके माध्यम से वित्तीय समावेशन के अधीन प्राप्त होने वाले आर्थिक लाभों को जरुरतमंदों के खातों में सरकारी सहायता के रूप में सीधे हस्तांतरित किया जाने लगा। इसका सीधा लाभ भारतीय किसानों को भी मिला।

हर साल प्राकृतिक आपदा के कारण हमारे देश में किसानों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है। बाढ़, आंधी, ओले और तेज बारिश या सूखा से उनकी फसल खराब हो जाती है। उन्हें ऐसे संकट से राहत देने के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की शुरुआत की गई है। इस योजना में प्राकृतिक आपदाओं के कारण खराब होने वाली फसलों के लिए बहुत कम प्रीमियम रखा गया है। इसके तहत किसानों को खरीफ फसल के लिए 2 प्रतिशत प्रीमियम और रबी फसल के लिए 1.5 प्रतिशत प्रीमियम का भुगतान करना पड़ता है। यह योजना वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के लिए भी बीमा सुरक्षा प्रदान करती है।

वित्तीय समावेशन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र से जुड़े किसानों के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की शुरुआत की गई है। इस योजना का लाभ उन किसानों को मिलता है जिनके पास 2 हेक्टेयर या उससे कम जमीन है। इसके तहत किसान परिवारों

को 6000 रुपये की सहायता राशि प्रति वर्ष किस्तों में प्रदान की जाती है। जिसके परिणामस्वरूप किसानों को समय पर फसलों के बीज, उर्वरक, कीटनाशक आदि की खरीद करने में सहायता मिलती है और इसका असर फसलों के पैदावार पर भी पड़ता है जो हमें जीडीपी में कृषि क्षेत्र के योगदान से पता चलता है।

सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई उपरोक्त सभी कृषि संबंधी योजनाओं का आंकलन करने से पता चलता है कि कृषि या इससे संबंधित कार्यों के लिए किसानों को पर्याप्त मात्रा में वित्तीय सहायता की जरूरत होती है जिसे वित्तीय समावेशन के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। कृषि संबंधी योजनाएँ और वित्तीय समावेशन एक दूसरे के पूरक हैं। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के उद्देश्यों को पूरा करने में सहायक हैं।

उद्घाटन

मंडल कार्यालय, उज्जैन एवं पीएनबी लोन पॉइंट (रैम) के नानाखेड़ा स्थित नवीन भवन का उद्घाटन करते हुए अंचल प्रमुख, भोपाल, श्री प्रवीण कुमार जैन तथा अन्य स्टाफ सदस्य।

शाखा कार्यालय, मीरा रोड, के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए अंचल प्रमुख, मुंबई (मुख्य महाप्रबंधक), श्री देबदत्त चाँद, साथ में हैं श्री अर्जुन मूलचंदानी, मंडल प्रमुख ठाणे तथा अन्य स्टाफ सदस्य।

मंडल कार्यालय, फाजिल्का के अंतर्गत बने रैम का उदघाटन करते हुए श्री डी. के. गुप्ता, अंचल प्रमुख, लुधियाना तथा श्री नरेश कुमार नागपाल, मंडल प्रमुख, फाजिल्का।

अयोध्या मंडल की शाखा रामापुर तरबगंज के नवसुसज्जित परिसर का उद्घाटन करते हुए श्री संजय गुप्ता, महाप्रबंधक, लखनऊ अंचल, साथ हैं माननीय विधायक श्री प्रेम नारायण पाण्डेय, श्री के. एल. बैरवा, मंडल प्रमुख, अयोध्या, श्री एन. बी. तिवारी, उप मंडल प्रमुख एवं श्री विशाल सिंह, शाखा प्रमुख रामपुर, तरबगंज, गोंडा।

मेरठ में पीएनबी लोन प्वाइंट का उद्घाटन करते हुए श्री सुरिंदर पाल सिंह, अंचल प्रमुख, मेरठ। साथ में हैं, श्री एस. एन. गुप्ता, मंडल प्रमुख, मेरठ पूर्व, श्री संजीव श्रीवास्तव, उप अंचल प्रमुख श्री निलेश कुमार, मंडल प्रमुख, मेरठ पश्चिम, श्री प्रभास चन्द्र लाल, सहायक महाप्रबंधक, रैम, मेरठ।

मंडल कार्यालय जींद के नवनिर्मित परिसर का उद्घाटन करते हुए डॉ. आदित्य दहिया (आईएएस), उपायुक्त जींद, श्री संदिप पाणिग्रही, अंचल प्रमुख, चंडीगढ़ तथा श्री दीपक तनेजा, मंडल प्रमुख, जींद।

उद्घाटन

चंडीगढ़ अंचल प्रमुख श्री संदिप पाणिग्रही के कर कमलों द्वारा जाट धर्मशाला, जींद के परिसर में पीएनबी एटीएम का उद्घाटन किया गया। जींद मंडल प्रमुख श्री दीपक तनेजा ने अपने डेबिट कार्ड का प्रयोग कर इसका शुभारंभ किया।

थाना भवन शाखा मेरठ की नई बिल्डिंग का उद्घाटन करते हुए श्री नीलेश कुमार मंडल प्रमुख, मेरठ (पश्चिम)।

प्रेरक प्रसंगः विवेक एवं भावनाओं का संतुलन

तान्या शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय, चंडीगढ

जीवन में दिल और दिमाग दोनों का अपना महत्व है, दिल जहां हमें भावना प्रधान बनाता है वही दिमाग हमें विचार करने, तर्क करने की शक्ति देता है, विवेक शक्ति इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायता करती है। भावनाएं कार्य करने के लिए ऊर्जा प्रवाहित करती हैं, बुद्धि संकल्प, विचार और तर्क शक्ति से निर्णय लेने में सहायक होती है। जीवन के हर पहलू में यदि हम तर्क, क्यों, कहां, कब, अर्थात हर समय गणना, मापना, अनुमान और हर चीज को लाभ–हानि के पैमाने पर आंकते रहेंगे तो जीवन नीरस एवं ऊबाऊ हो जाएगा और लोग हमें स्वार्थी भी कहने लगेंगे। ठीक इसी तरह यदि हर समय भावनाओं से प्रेरित हो, भावनाओं के उद्रेक में बहते रहेंगे तो व्यवहारिक भी नहीं रहेंगे और तनाव में भी रहेंगे। दोनों में संतुलन साधना जरुरी है और इनका आपस में सहयोग ही जीवन को समर्थ और सफल बनाता है।

एक अंधे और एक लंगड़े व्यक्ति की कहानी तो बहुत पुरानी है और बचपन में उनके सहयोग की कहानी हम सबने पढ़ी होगी। दो भिखारी जिनमें एक अंधा था और दूसरा भिखारी जिसकी टांगें नहीं थी, दोनों एक मंदिर के पास बैठ भिक्षा मांगते थे और उनके घर जो कि एक तरह की घास फूस की झोपड़ियां ही थी, उनमें रहा करते थे। दोनों में आपस में बहुत विरोध था और अक्सर बात बेबात आपस में झगड़ते रहते थे। एक दिन जब वो अपनी अपनी झोपड़ी में सोये हुए थे तो अचानक आग लग गई, आसपास के सब लोग अपनी जान बचा कर भाग गए। अंधे भिखारी को आग से निकलने का सुरक्षित रास्ता नहीं समझ आ रहा था और लंगड़ा भिखारी भी बेबस था क्योंकि वह टांगों के बिना दौड़े कैसे? उसने अंधे भिखारी का हाथ पकड़कर कहा कि मैं देख सकता हूं पर चल नहीं सकता, तुम चल सकते हों, पर रास्ता नहीं ढूंढ सकते, हम दोनों की जान को खतरा है, यदि हम आपस में सहयोग करें तो दोनों की जान बच सकती है। तुम मुझे उठा कर दौड़ो और मैं तुम्हें रास्ता बताता चलूं तो हम दोनों बच जाएंगे। उस सूरदास को उसकी बात ठीक लगी और उसने वह बात मान ली। परस्पर सहयोग से दोनों की जान बच गई और उस दिन के बाद दोनों मित्र बन गए।

इसी तरह ही जीवन में विवेक के बिना भावनाएं अंधी होती हैं और बुद्धि बिना भावनाओं के लंगड़ी होती है अर्थात उसमें गति नहीं होती। दिल और दिमाग के सहयोग और संतुलन से जीवन को सुखद और सफल बनाया जा सकता है, इसके विपरीत यदि हम ज्यादा भावना प्रधान यानी इमोशनल बने रहते हैं या फिर ज्यादा तर्क प्रधान अर्थात रेशनल बने रहते हैं तो जीवन दुखद और असफल बन जाता है। दिल रूपी पतंग को जितना मर्जी ऊंचे आसमान में उड़ाओ पर उसे विवेक रूपी डोर से खींच कर बांधे रखेंगे तो जीवन में खुश भी रहेंगे और सफल भी होंगे और यह आज के भौतिकतावादी युग में जीने का मंत्र भी है।

वित्तीय समावेशन

सोनम छोमो
राजभाषा अधिकारी
मंडल, कार्यालय शिमला

किसी भी देश की उन्नति व विकास में आर्थिक क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान होता है। आर्थिक विकास किसी देश की उन्नति का बुनियादी ढांचा होता है। यदि बुनियादी ढांचा कमजोर हो तो जितना भी कोशिश कर लें उस देश का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। इसलिए किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में विकास एवं उन्नति हेतू किए जाने वाले प्रयासों को बल प्रदान करने के लिए नीति निर्माताओं द्वारा एक ऐसे मार्ग का अनुसरण किया जाता है जिसके माध्यम से सरकार आम आदमी को अर्थव्यवस्था के औपचारिक माध्यम में शामिल कर सके। वित्तीय समावेशन का मतलब समाज के पिछड़े एवं कम आय वाले लोगों को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना है। कुछ प्रमुख वित्तीय सेवाएँ हैं – ऋण, भुगतान और धनप्रेषण सुविधाएँ। वित्तीय समावेशन शब्द को 2000 के दशक के आरंभ से प्रारम्भ माना जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य है कि, समाज के प्रत्येक वर्ग को अधिक से अधिक वित्तीय सेवाएँ प्रदान कराना। सच्चाई तो यही है कि, दुनिया में जितने भी विकसित व विकासशील देश हैं सब जगह अमीर या गरीब, शिक्षित व अशिक्षित वर्ग बना हुआ है। समाज के सभी वर्गों को उन सेवाओं का लाभ नहीं मिल पाता है। गरीब लोगों में अभी भी स्थायी वित्तीय सेवाओं तक पहुँच की कमी है, भले ही यह बचत हो, क्रेडिट या बीमा हो। हमारा कार्य है इन्हें सेवाओं का लाभ प्रदान कराना। बड़ी चुनौती उन बाधाओं को दूर करना है जो लोगों को वित्तीय क्षेत्र में पूर्ण भागीदारी से बाहर कर देते हैं। संयुक्त राष्ट्र वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को निम्नानुसार परिभाषित करती है –सभी परिवारों के लिए बचत या जमा सेवाओं, भुगतान और स्थानांतरण सेवाओं, क्रेडिट और बीमा सहित वित्तीय सेवाओं की पूरी श्रृंखला के लिए उचित लागत पहुंचे।

वित्तीय समावेशन के लाभ

1 वित्तीय समावेशन के अभाव में बैंकों की सुविधा से वंचित लोग मजबूरी में अनौपचारिक बैंकों से जुड़ने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इन क्षेत्रों में ब्याज की दरें भी अधिक होती हैं।

जिससे आर्थिक रूप से उनका नुकसान भी होता है और साथ ही वह सरकार द्वारा लागू उचित दर का लाभ भी नहीं उठा पाते हैं।

2. अनौपचारिक बैंकिंग ढांचा कानून की परिधि से बाहर होता है, अतः उधार देने वालों और उधार लेने वालों के बीच उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद का कानूनी तरीके से निपटान नहीं किया जा सकता है।

3. वित्तीय समावेशन से समाज के कमजोर तबके के लोगों को उनकी जरूरतों तथा भविष्य की आवश्यकताओं के लिए धन की बचत करने, विभिन्न वित्तीय उत्पादों जैसे कि– बैंकिंग सेवाओं, बीमा और पेंशन उत्पादों आदि में भाग लेकर देश के आर्थिक क्रियाकलापों से लाभ प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

4. इससे देश की 'पूंजी निर्माण' की दर में भी वृद्धि होगी। क्योंकि विश्व बैंक की वैश्विक वित्तीय समावेशन डेटाबेस या ग्लोबल फाईडेस्क रिपोर्ट 2017 के अनुसार वर्ष 2014 में अनुमानित 53% भारतीय वयस्कों की अपेक्षा वर्तमान में 80% वयस्कों के पास एक बैंक खाता है। जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

5. वित्तीय समावेशन से सरकार को सब्सिडी तथा कल्याणकारी कार्यक्रमों में अंतराल एवं हेराफेरी पर रोक लगाने में भी मदद मिलती है क्योंकि इससे सरकार उत्पादों पर सब्सिडी देने के बजाय सब्सिडी की राशि सीधे लाभार्थी के खाते में अंतरित कर सकती है।

6. सरकार द्वारा उठाएं जाने वाले विभिन्न कदमों में प्रधानमन्त्री जन–धन योजना भी है जो वित्तीय समावेशन का ही भाग है। इस योजना को 28 अगस्त, 2014 को औपचारिक रूप में शुरू किया गया और शहरी, अर्द्धशहरी व ग्रामीण करोड़ों लोगों के खाते खोले गए है। जिससे बैंक व ग्राहक दोनों को लाभ मिलता है।

इसके अतिरिक्त सभी नागरिकों को विशेषकर गरीब एवं सुविधा रहित लोगों को समाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं जिनमें प्रधामंत्री सुरक्षा बीमा योजना भी शुरु की गई।

अटल पेंशन योजना को वर्ष 2015 में 18 से 40 आयु वर्ग के सभी खाताधारकों के लिए शुरू किया गया। इसके तहत केंद्र सरकार द्वारा कुल अंशदान के 50% का योगदान दिया जाता है। बशर्ते यह 1000/– रुपए प्रतिवर्ष से अधिक न हो।

इसके अतिरिक्त देश में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए और भी बहुत सी योजनायें शुरू की गई। जिनमें जीवन सुरक्षा बंधन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, सामान्य क्रेडिट कार्ड और भीम ऐप जैसी योजनाएं शामिल हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो वित्तीय समावेशन का मुख्य उद्देश्य है समाज व देश के प्रत्येक नागरिक को वित्तीय लाभ प्रदान करना। समाज का एक बड़ा हिस्सा अभी भी बैंक रहित है। समाज के प्रत्येक नागरिक को बैंक से जोड़ना वित्तीय समावेशन का मुख्य लक्ष्य है। भारत में वित्तीय समावेशन की सफलता के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण होना चाहिए जिसके माध्यम से मौजूदा प्लेटफार्म बुनियादी ढांचे मानव संसाधन को मजबूत किया जा सके।

कठिन घड़ी

तरुण बंद
अधिकारी
मंडल कार्यालय, मुजफ्फरपुर

देखता हूँ खोल के, मैं जब घरों की खिड़कियाँ।
दूर तक फैली हुई थी, डरों की सिसकियाँ।
देखता हूँ खोल के, मैं जब घरों की खिड़कियाँ

थी सड़क सन्नाटों वाली, आसमां बदरंग था,
मन भरा बेचैनियों से, स्थिल पड़ा हर अंग था,
गिर रही थी शाखों से, सुखी हुई कुछ पत्तियाँ।
देखता हूँ खोल के, मैं जब घरों की खिड़कियाँ।

अन्न का दाना न होगा, पेट भर खाना न होगा,
भूख से तड़पती देखी, मुफलिसों की बस्तियाँ।
देखता हूँ खोल के, मैं जब घरों की खिड़कियाँ।

आपदा की इस घड़ी में, सद्भाव होना चाहिए,
धैर्य करुणा शांति का, प्रादुर्भाव होना चाहिए।
फिर भी देखो दिल बंटे हैं, बढ़ रही रुसवाईयाँ।
देखता हूँ खोल के, मैं जब घरों की खिड़कियाँ।

उम्मीदों की धूप देखी, जो आ रही थी आस्ते,
आरोग्य की बहती हवाएँ, हर गली, हर रास्ते,

जीतेगी इंसानियत ही, हारेंगी दुश्वारियां।
देखता हूँ खोल के, मैं जब घरों की खिड़कियाँ।
देखता हूँ खोल के, मैं जब घरों की खिड़कियाँ।

कृषि एवं वित्तीय समावेशन

हरगोविंद सी. मकवाना
अधिकारी
क्षेत्रीय वसूली केंद्र, अहमदाबाद

"भारत एक कृषि प्रधान देश है।" भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है तथा निरंतर आर्थिक विकास की राह पर अग्रसर है। देश की करीबन 80% जनसंख्या ग्रामीण विस्तारों में रहती है। पिछले पांच वर्षों का अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास बहुत धीमी दर से हो रहा है, यानि विकास की ओर देखें तो पता चलता है कि 8.50% से 9.00% की सामान्य दर से बढ़ोतरी हो रही है। कृषि विकास की ओर देखें तो पता चलता है कि केवल 2.00% की दर से बढ़ रहा है, जो देश के आर्थिक विकास एवं सामाजिक विकास के लिए एक कड़ी चुनौती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश का संतुलित विकास करने की दृष्टि से तथा अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से देश में विकास को गति प्रदान की है। कृषि, ग्रामीण विकास और लघु–उद्योगों को बढ़ावा देने तथा रोजगार सृजन हेतु सरकार ने **"प्राथमिकता क्षेत्र"** संकल्पना को मूर्त रूप दिया है।

प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के अंतर्गत कृषि और ग्रामीण विकास हमेशा से ही भारत–सरकार, राज्य–सरकारों और भारतीय रिजर्व बैंक की चिंता और चिंतन के दायरे में रहा है। बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात् देश के संपूर्ण विकास हेतु बैंकों द्वारा ऋण प्रदान करने की प्राथमिकताएं निश्चित की गई। बैंकों ने अपनी ऋण संबधी नीतियों को कृषि और ग्रामीण जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला है। इस कार्य के पीछे रिजर्व बैंक और भारत सरकार का सफल संचालन और कुशल मार्गदर्शन रहा है।

बैंकों द्वारा संस्थागत गारंटी की व्यवस्था शुरू की गई और कृषि–वित्त व्यवस्था में जोखिमों को घटाकर कृषि कार्यों के लिए कुल ऋणों का 18% हिस्सा सुनिश्चित किया गया है। भारत सरकार ने उपरोक्त बात को ध्यान में रखकर यह निर्णय लिया है कि यदि देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में वृद्धि करनी है, तो देश की कृषि व्यवस्था एवं देश के ग्रामीण–गरीब, कृषक, सीमांत कृषक, काश्तकारों और कृषि से संबंधित गतिविधियों जैसे पशुपालन, मछलीपालन, सुअर पालन, बकरी पालन, मुर्गीपालन डेयरी से जुड़े लोग आदि के आर्थिक विकास में वृद्धि करनी होगी। इस अवधारणा का आशय ग्रामीण कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। अतः इस अवधारणा का अमल करने के लिए भारत सरकार तथा भारतीय रिजर्व बैंक ने "वित्तीय समावेशन" पहलु पर अत्यधिक जोर दिया है।

वित्तीय समावेशन के अंतर्गत वित्तीय योजनाओं एवं वित्तीय सेवाओं से हमारा आशय न केवल बैंकिंग सेवाओं से है, बल्कि जो बैंकिंग के अलावा, बीमा–क्षेत्र, डाकघर तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा प्रदान की जाती हैं से भी है। देश की ग्रामीण, गरीब, कृषि से संबंधित आम जनता, जो वित्तीय सेवाओं तथा वित्तीय योजनाओं से अनजान है एवं वंचित भी है, जिनकी आमदनी बहुत कम है तथा सामाजिक लाभों से भी वंचित है, उनको बहुत ही कम लागत/ब्याजदरों पर सभी वित्तीय सेवाओं को बैंकिंग–क्षेत्र द्वारा उपलब्ध करवाना ही वित्तीय समावेशन है।

भारत के अधिकांश लोग ग्रामीण एवं अर्ध शहरी क्षेत्रों में गरीबी रेखा से नीचे रहने पर मजबूर हैं। भारत सरकार का यह एक अति महत्वपूर्ण कदम है कि उन्होंने भारतीय रिजर्व बैंक के माध्यम से सभी बैंकों को भारत के सभी गरीब कृषकों को उच्च स्तर पर लाने के लिए "वित्तीय समावेशन" द्वारा निर्देशित किया है।

"वित्तीय समावेशन" के अंतर्गत भारत सरकार तथा भारतीय रिजर्व बैंक का यह रवैया है कि देश का प्रत्येक व्यक्ति बैंक में अपना खाता खुलवाएं तथा बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं से अवगत हों तथा इन वित्तीय सेवाओं का लाभ प्राप्त करके अपना भी विकास करें तथा अपने देश के विकास में भी अपना सफल योगदान दें।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह देखा गया गया कि "वित्तीय समावेशन" का अमलीकरण करने के लिए जो देश जितना विकसित है, उसमें उतना ही अधिक वहां के साधारण आदमी व कम आय वाले लोगों को वित्तीय सेवायें प्रदान करने पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। इंग्लैण्ड और अमेरिका जैसे विकसित

राष्ट्रों ने भी इस तथ्य को आवश्यक एवं अति महत्वपूर्ण समझकर प्रत्येक व्यक्ति को बैंक तक पहुँचाने के लिए कई योजनाएं एवं सेवाएँ उपलब्ध करवाई हैं।

किसी भी देश को अपनी प्रगति में वृद्धि करनी है, तो यह एक निर्विवाद सत्य है कि वह अपने देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि करे। वर्तमान परिदृश्य में विकसित देशों के साथ गलाकाट प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि करना आवश्यक बन गया है। इस तथ्य को मद्देनजर रखते हुए हमारे भारत की वर्तमान सरकार में वित्तमंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने बताया कि देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए यह निर्णय लिया गया कि– अगले पांच वर्षों में भारतीय अर्थव्यस्था को 5 ट्रिलियन बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके परिमाणस्वरूप, भारत के मौजूदा सामाजिक एवं आर्थिक विकास में काफी मात्रा में सुधार होगा। विशेषकर कृषकों में सीमांत कृषक, कृषि से संलंग्न क्रियाकलापों में जुड़े लोग, काश्तकार, कृषि श्रमिक, गरीब तथा अन्य लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में वृद्धि होगी। अतः भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की कड़ी भूमिका होगी। अतः यह अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए भारत सरकार एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा "वित्तीय समावेशन" के तहत कृषि व्यवसाय को यानि कृषकों को बैंकों द्वारा तथा अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा ज्यादा से ज्यादा वित्तीय सेवाएं उपलब्ध करवानी पड़ेगी।

"वित्तीय समावेशन" को 2000 के दशक के आरम्भ से महत्त्व मिला है। "वित्तीय समावेशन" द्वारा कृषकों को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करके कृषि विकास में वृद्धि की जाती है। इसी तरह कृषि क्षेत्र में बढ़ती विकास की दर, देश की आर्थिक विकास में वृद्धि को दर्शाती है। इस प्रकार हमारे भारत वर्ष को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने में "वित्तीय समावेशन" अवधारणा का बहुत अधिक योगदान रहा है। अतः भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में वित्तीय समावेश की अवधारणा रामबाण अस्त्र एवं कामयाब अस्त्र भी माना जाता है।

वित्तीय समावेशन की परिभाषाएं एवं उद्देश्य

वित्तीय समावेशन का अर्थ निम्नानुसार परिभाषाओं से फलीभूत होता है।

- वित्तीय समावेशन से आशय है –समाज के वृहद, वंचित एवं अल्प आय वाले वर्ग को सुलभ यानि रियायती ब्याज दरों पर बैंकिंग वित्तीय सेवाएं उपलब्ध करना।
- वित्तीय समावेशन का अर्थ न्यूनतम लागत–मूल्य पर बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराना तथा वित्तीय अपोषित जन साधारण को बैंकिंग के दायरे में लाना है।
- वित्तीय समावेशन समिति के अध्यक्ष सी. रंगाराजन (भूतपूर्व गवर्नर भा. रि. बैंक) के अनुसार वित्तीय समावेशन एक प्रक्रिया है, जिससे समाज के कमजोर एवं कम आय वाले वर्ग के लोगों तक वित्तीय सेवाओं को पहुँचाना है।
- साधारण भाषा में वित्तीय समावेशन का अर्थ है "जहाँ बैंकिंग सुविध उपलब्ध नहीं है वहां कम लागत पर बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करवाना"।

देश की निर्धन एवं बैंकिंग सुविधाओं से वंचित जनता को बैंकिंग तथा वित्तीय सुविधाएं उनके दरवाजे पर उपलब्ध कराना अर्थात् निर्धन जनता का बैंकिंग सेवाओं में समावेश ही वित्तीय समावेशन है।

वित्तीय समावेशन के अर्थ विस्तार निम्न चार पंक्तियों में समाविष्ट है:–

कोई परिवार न रहे अछूता, जिसका कहीं न खाता हो।
जमा कराएं या लोन उठाएं, हर घर बैंक में जाता हो।।
फरमान हुआ शासन का जारी, बैंक को आया था आदेश।
हर व्यक्ति का हो बैंक में खाता, यही है वित्तीय समावेश।।

विश्व बैंक की रिपोर्ट "एडिंग पावर्टी इन साउथ एशिया" के अनुसार विश्व में सर्वाधिक गरीब लोग भारत में ही रहते हैं।

सार्वजनिक संपत्ति पर देश की जनता की पहुँच बिना किसी अवरोध के होनी चाहिए। चूंकि, बैंकिंग और भुगतान सेवाएँ भी सार्वजनिक संपत्ति के अंग हैं, अतः यह आवश्यक है कि देश की जनता के सभी वर्गों की बैंकिंग और भुगतान सेवाओं तक निर्बाध पहुँच हो".....**(श्री रमाकांत वर्मा, सेवानिवृत्त महाप्रबंधक, भा. रि. बैंक)**

प्रत्येक व्यक्ति की बचत व संस्थागत क्रेडिट तक पहुँच हो। यद्यपि हर व्यक्ति हर प्रकार की बैंकिंग सेवा हेतु पात्र नहीं होता तथापि ऐसी व्यवस्था, शिक्षण और प्रयास होने चाहिए कि समाज का हर वर्ग अपनी अपेक्षा के अनुरूप सेवा का चयन कर सकें।.....**(संयुक्त राष्ट्र संघ–UNO)**

श्री टी के. अरुण ने इकोनॉमिक्स टाइम्स (दिनांक 29.09. 2007) में इस प्रकार प्रभाषित किया है– वित्तीय समावेशन से केवल यह तात्पर्य नहीं है कि बैंक में बचत खाता हो तथा बैंकिंग प्रणाली से उधार लिया हो और भी विस्तृत और उन्नत होना चाहिए। गरीब एवं कृषकों को अवसर मिलना चाहिए कि वह अपनी बचत का निवेश अधिक ब्याज पर कर सकें।

वित्तीय समावेशन के उद्देश्यः– कमजोर कृषक एवं पिछड़े वर्ग के लोगों को आसान शर्तों पर बैंकिंग, बीमा आदि सुविधाएं उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से वित्तीय समावेश की आवश्यकता महसूस की गयी और वित्तीय समावेश की अवधारणा का जन्म हुआ। एक अनुमान के अनुसार देश के कुल 23 करोड़ परिवारों में से 15 करोड़ परिवार ग्रामीण क्षेत्रों में हैं तथा उनमें से भी 9 करोड़ परिवार कृषक वर्ग से संबंधित हैं। इनमें से भी 70% से अधिक वर्ग की अभी भी किसी औपचारिक ऋण दात्री संस्था तक कोई पहुँच नहीं है।

वित्तीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक बातेंः– वित्तीय समावेशन निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बहुत जरूरी है।

- प्रत्येक कृषक बैंक में अपना खाता रखते हुए, अपने धन का प्रभावी प्रंबधन एवं सुरक्षित रखने में समर्थ हो।
- प्रत्येक कृषक सुरक्षा के लिए भावी योजना का प्रबंध करने में समर्थ हो जो वित्तीय सेवा तथा बीमा उत्पाद सभी के लिए उपलब्ध हों।
- प्रत्येक कृषक के पास वित्तीय कठिनाईयों का सामना करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, सहकार एवं आत्मविश्वास होना चाहिए।

कृषि एवं वित्तीय समावेशनः–

देश के हर आदमी को, पीएनबी से जोडिए।
वित्तीय समावेशन के लिए गाँव-गाँव दौडिए।।
ग्राहक चाहे कोई भी हो, मुस्कुराकर बोलिए।
हर हृदय में, वित्तीय समावेशन की सेवा बताईये।।

उपरोक्त चार पंक्तियों में भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में कृषि क्षेत्र यानि ग्रामीण कृषकों के जीवनस्तर तथा आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में वृद्धि ये सभी क्षेत्र वित्तीय समावेशन का ही एक भाग हैं।

वित्तीय समावेशन की अवधारणाः– किसी भी राष्ट्र के विकास का मानदंड, उस राष्ट्र के कृषि क्षेत्र के कृषकों तथा अन्य नागरिकों का व्यक्तित्व, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से उन्नत और आत्मनिर्भर होना है। कृषक और गरीब से गरीब व्यक्ति को विकास के समान अवसर प्रदान कर मुख्य धारा से जोड़ने की दृष्टि से क्लासिक बैंकिंग से मास बैंकिंग का सूत्रपात हुआ। जो लोग औपचारिक वित्तीय प्रणाली से नहीं जुड़ पाए थे, उन्हें जोड़ने की आवश्यकता अनुभव की गई। इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति और लोक–कल्याणकारी गणराज्य की स्थापना के पश्चात् वित्तीय समावेशन की अवधारणा का जन्म हुआ।

कृषि क्षेत्र के विकास हेतु वित्तीय समावेशन की मुहिम की आवश्यकताः– कृषि प्रदान भारत देश में कृषकों का निवास स्थान ग्रामीण क्षेत्रों में ही है। अधिकतम कृषक एवं ग्रामीण लोग, अनपढ़ लोग बैंकिंग सेवाओं से वंचित थे। परिणामस्वरूप, ग्रामीण कृषकों एवं गरीब जनता का कृषि से संबंधित क्रियाकलापों में व्यस्त कृषि श्रमिकों तथा सीमांत कृषकों, भूमिहीन कृषकों का व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक विकास नहीं हो पा रहा था, जिसके फलस्वरूप देश के आर्थिक विकास में कई बाधाएं आती थी। वित्तीय सेवाओं से वंचित रहने के कई कारण थे। बैंकिंग सेवाओं के प्रति जागरूकता की कमी, अल्प आय, अशिक्षा आदि उसके प्रमुख अवरोधक हैं। इसी प्रकार, जटिल दस्तावेज प्रक्रिया, भाषाओं की भिन्नता, आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादों का नहीं होना आदि इसके बाह्य कारण हैं।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के 59वें दौर के आंकड़ों के अनुसार देश के कुल कृषक परिवारों में से 51.4% परिवार आज भी औपचारिक व अनौपचारिक वित्तीय–सेवाओं से वंचित हैं। इसमें से केवल 27% कृषक परिवार ही साख के औपचारिक साख–स्त्रोतों से ऋण प्राप्त करते हैं अर्थात समग्र रूप से 73% कृषक परिवार औपचारिक सुविधाओं से वंचित हैं। देश के केन्द्रीय, पूर्वी व उत्तरी भाग के 64% कृषक परिवार ही औपचारिक साख स्त्रोतों से ऋण प्राप्त कर सकते हैं। सीमांत परिवारों में से मात्र 20% कृषक परिवार ही औपचारिक साख स्त्रोतों से ऋण प्राप्त कर सकते हैं। शेष 80% सीमांत परिवार अनौपचारिक साख स्त्रोतों पर निर्भर हैं। अतः स्पष्ट है कि देश की जनसँख्या का एक बहुत बड़ा भाग यानी कि कृषि क्षेत्र बैंकिंग व वित्तीय सेवाओं से वंचित हैं। इस वंचित कृषि क्षेत्र को ही वित्तीय बैंकिंग की परिधि में लाने के लिए "वित्तीय समावेशन" की मुहीम की बहुत आवश्यकता है।

"वित्तीय समावेशन" की मुहीम का रथ आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त, 2014 को " जन–धन योजना" की घोषणा की थी। इस योजना के तहत प्रधानमंत्री ने यह आदेश दिया कि पूरे भारतवर्ष में प्रत्येक कृषक तथा अन्य गरीब परिवार के कम से कम एक सदस्य का बैंक खाता किसी भी बैंक में अनिवार्य रूप से होना चाहिए। दूसरी ओर लघु और सीमांत किसानों को साहूकारों, जमीदारों पर निर्भर रहना पड़ता है और साथ ही अनौपचारिक स्त्रोतों से उच्च ब्याज दर पर ऋण प्राप्त करना आवश्यक एवं मजबूरी थी।

अखिल भारतीय स्तर पर 14.80 करोड़ घरेलू परिवार हैं, जिनमें से कृषक परिवारों की संख्या 60% है, इनमें से अधिकतर कृषक परिवार बैंकिंग सेवाओं से वंचित थे। 51% किसान परिवार ऐसे हैं जिन्हें साख की प्रयोग एवं उपयोगिता की जानकारी नहीं थी। जिसमें लघु एवं सीमांत किसान हैं। कृषकों में वित्तीय शिक्षा के प्रचार–प्रसार का अभाव है। बैंकों एवं सरकारी संस्थानों द्वारा कृषक वर्ग की उपेक्षा की जाती थी। ऋणग्रस्त किसानों द्वारा उधार लिए गए अतिदेय ऋणों में बैंकों का योगदान मात्र 36% जबकि साहूकारों का योगदान 26% था। ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों का अभाव था, साथ ही सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन ठीक ढंग से नहीं हो रहा था।

उपरोक्त सभी मुद्दों को मद्देनजर रखते हुए भारत सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने देश के आर्थिक विकास की रीढ़ 'कृषि क्षेत्र' को वित्तीय समावेशन के तहत सबसे अधिक वित्तीय सहायता प्रदान करने का लक्ष्य रखा है।

कृषि क्षेत्र में वित्तीय समावेशन क्यों और कैसे ?

वित्तीय समावेशन कृषि क्षेत्र में क्यों? इस सवाल का तथ्य एवं तात्पर्य यह है कि कृषि क्षेत्र में वित्तीय समावेशन कितना लाभदायी है तथा इनकी कृषि क्षेत्र में क्या आवश्यकता है? कृषि क्षेत्र में इनका क्या महत्त्व है? अतः कृषि क्षेत्र में वित्तीय समावेशन बहुत आवश्यक एवं अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि एक कृषक किसी भी राष्ट्र के विकास की नींव एवं रामबाण अस्त्र है।

हमारा भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है और देश की जनसँख्या का बड़ा भाग कृषि एवं कृषि से संबंधित कार्यकलापों एवं गतिविधियों में कार्य कर रहा है। कृषक लोग बहुत गरीब होते हैं, उनको बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में कुछ भी जानकारी एवं ज्ञान नहीं होता है, क्योंकि वे लोग ज्यादातर अनपढ़ होते हैं।

गांवों से दूर होते हैं बैंकिंग संस्थानः– तमाम सरकारी कवायद और तामझाम के बावजूद भी आज स्थिति यह है कि बैंकिंग संस्थान आज गांवों से दूर होती जा रही हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में कहा है कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा सरकारी बैंको द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण में लगातार गिरावट आ रही है। 40% किसान अनौपचारिक स्त्रोतों से ऋण ले रहे हैं। इसका मुख्य कारण है कि ग्रामीण आबादी तक बैंकिंग संतोषप्रद तरीके से नहीं पहुँच पाई है।

अमर कथा शिल्पी मुंशी प्रमचंद का यह कथन कृषि समाज वर्ग के लिए है– **"भारतीय किसान और खेतिहर मजदूर गरीबी में पैदा होता है, गरीबी में जीता है और गरीबी की विरासत अपने बच्चों को सौंपकर इस संसार से विदा हो जाता है।"** यह उक्ति आज भी सही सिद्ध होती है। उपरोक्त परिस्थितियों में से भारतीय कृषक समाज को उपरी स्तर पर लाने हेतु तथा वित्तीय सेवाएं बैंकिंग संस्थान द्वारा उपलब्ध करवाने हेतु तथा शिक्षण प्रशिक्षण हेतु कृषि क्षेत्र के लिए वित्तीय समावेशन अत्यधिक आवश्यक है। कृषकों के लिए उपलब्ध ऋण /वित्तीय सेवाओं के बारे में जानकारी प्रदान करके कृषि–क्षेत्र से संबंधित कृषकों को लाभान्वित करके उनकी आमदनी बढ़ाई जा सकती है जिससे उनका जीवनस्तर अच्छा होगा। अतः कृषक, सीमांत कृषक, भूमिहीन कृषक आदि को अपनी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में बदलाव लाने के लिए 'वित्तीय समावेशन' अत्यंत आवश्यक है।

कृषि क्षेत्र में वित्तीय समावेशन कैसे?

वित्तीय समावेशन का शुभारंभः– वित्तीय समावेशन के शुभारंभ हेतु भारत सरकार तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सन 1968 में सभी वाणिज्यिक बैंकों से सामाजिक दायित्व की जिम्मेदारी सौंप दी गई थी। भारत सरकार ने वर्ष 1969 में बैंकिंग वित्तीय सेवाओं को प्रत्येक गाँव तथा प्रत्येक कृषक/गरीब तक पहुँचाने के लिए 14 बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण करके वित्तीय समावेशन की नींव डाली थी। यानी बैंकिंग क्षेत्र को "क्लास बैंकिंग" में से "मास बैंकिंग" में परिवर्तन किया गया। जिनके अंतर्गत समाज के कृषक वर्ग/कमजोर वर्गों को रियायती ब्याज दर पर ऋण प्रदान करके वित्तीय समावेशन की शुरुआत की थी। तत्पश्चात

सन 1970 में 'अग्रणी बैंक' योजना का प्रारम्भ किया गया। अग्रणी बैंक योजना के अंतर्गत जिला स्तर पर किसी एक बैंक को अग्रणी बैंक घोषित कर दिया गया जो अपने क्षेत्र अधिकार क्षेत्र जिले में आए हुए गांवों में कृषकों/कृषि योजनाओं के अमलीकरण पर ध्यान देगा और अपने जिले का विकास करने की भूमिका अदा करेगा।

वर्ष 1975 में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना की गई जो वित्तीय योजनाओं और वित्तीय सेवाओं को ग्रामीण कृषकों तथा कृषि से संबधित क्रियाकलापों से जुड़े लोगों को उपलब्ध करवाएँगे। स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने कृषि क्षेत्र/कमजोर वर्गों तक बैंकिंग सुविधाओं को उपलब्ध करवाने के लिए वर्ष 1980 में छः और बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया था। अतः बैंकों का राष्ट्रीयकरण का मलतब ही वित्तीय समावेशन और वित्तीय समावेशन के अमलीकरण की प्रगति में तीव्र वृद्धि है।

बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धताः— सार्वजानिक क्षेत्र की बैंकों ने वित्तीय समावेशन के उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति एवं अनुपालन में महत्वपूर्ण बलिदान दिया है। वित्तीय समावेशन की मुहिम की वजह से सार्वजानिक क्षेत्र की बैंकों ने कृषि क्षेत्र एवं समाज के गरीब वर्ग को विभिन्न प्रकार की ऋण सेवाएँ उपलब्ध करवाई हैं। जैसे कृषि क्षेत्र को फसल ऋण, लघु सिंचाई ऋण, डेयरी, पशुपालन, मुर्गीपालन, सूअर पालन, पॉवर टिलर, थ्रेसर, ट्रैक्टर तथा जंतुनाशक दवाईयों, बीज, खाद, उर्वरकों कीटनाशकों जैसी वस्तुओं को खरीदने के लिए ऋण उपलब्ध करवाए जाते हैं।

कृषकों एवं कृषि क्षेत्र के विकास में वृद्धिः— सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों द्वारा वित्तीय समावेशन के तहत विभिन्न प्रकार की ऋण/वित्तीय सुविधाएं एवं विशेष ऋण योजनाएं जैसे विभेदात्मक ब्याज दर योजना, आईआरडीपी, सेवा क्षेत्र दृष्टिकोण, प्राथमिकता प्राप्त ऋण क्षेत्र इत्यादि योजनाओं के तहत ग्रामीण कृषकों एवं कृषि–क्षेत्र को उपलब्ध करवाकर कृषकों एवं कृषि–क्षेत्र के विकास में काफी मात्रा में वृद्धि की जा सकती है, जो देश की अर्थव्यवस्था की प्रगति में महत्वपूर्ण एवं अहम् भूमिका निभाती है और देश की अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन डॉलर बनाने में भी कामयाब साबित होगा।

कृषकों के सामाजिक विकास एवं जीवनस्तर में वृद्धिः— वित्तीय समावेशन के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा सभी प्रकार की वित्तीय सेवाएं प्रदान करने से देश के ग्रामीण कृषकों के सामाजिक विकास में भी वृद्धि हुई साथ–साथ आय में वृद्धि होने से उनके जीवनस्तर में भी बड़ा सुधार हुआ है।

निजी साहूकारों/जमीदारों के जाल से मुक्तिः— वित्तीय समावेशन की अवधारणा के पहले गाँव के गरीब किसानों को अपनी आर्थिक सुविधाओं के लिए निजी साहूकारों तथा जमीदारों पर पूर्णत निर्भर रहना पड़ता था यानि कि कृषि के लिए बीज, खाद–कीटनाशक दवाईयों तथा अन्य सामाजिक जिम्मेदारियों जैसे शादी, बीमारियों तथा अन्य सामाजिक प्रसंगों के लिए आवश्यक आर्थिक सहायता निजी साहूकारों एवं जमीदारों से प्राप्त की जाती थी। अतः आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु साहूकार इन राशियों पर उच्चतम ब्याज लेते थे और आखिरी स्तर पर ग्रामीण कृषक उनके चंगुल/जाल में फंसे रहते थे। जिसके कारण किसानों का विकास नहीं होता था। अब वित्तीय समावेशन के अंतर्गत बैंकिंग सुविधाएं प्राप्त करके अच्छा विकास हुआ है।

बचत को बढ़ावाः— वित्तीय समावेशन से ग्रामीण किसानों के परिवारों का बैंक में खाता होगा तथा वे अपना बचा हुआ धन बैंक में जमा कराएंगे व आवश्यकता पड़ने पर ही निकलवाएंगे जिससे उनमें बचत की आदतों का विकास होगा व बचत को भी बढ़ावा मिलेगा।

बैंकिंग आदतों का विकासः— वित्तीय समावेशन के अंतर्गत देश का प्रत्येक किसान परिवार एवं कृषि से संबंधित गतिविधियों से जुड़े लोगों को बैंकिंग से जोड़ा जाएगा जिससे जिन्होंने कभी भी बैंक की ओर रुख नहीं किया था जो बैंकों में जाने से डरते हैं वे भी खाता होने पर बैंकों से जुड़ जाएंगे और उनमें बैंकिंग आदतों का विकास होगा।

सुरक्षित भविष्यः— 'आज की बचत, कल की सुरक्षा' कहावत पूर्णतः सत्य है, क्योंकि हम (किसान) बचत कर उस पैसे से अपना भविष्य सुरक्षित कर लेते हैं और आवश्यकता पड़ने पर यही बचत हमारे काम आती है तथा वित्तीय समावेशन के तहत वित्तीय संस्थाओं से और भी काफी लाभ उठा सकते हैं और अपना भविष्य भी सुनहरा बना सकते हैं।

राष्ट्र के विकास में अग्रसर सहभागिताः— वित्तीय सहायता प्राप्त करके देश के किसान न केवल अपना धन अपने बचत खातों में ही जमा करते हैं बल्कि बैंकों से ऋण सुविधाएं प्राप्त करके न केवल अपना विकास करते हैं बल्कि राष्ट्र के विकास में भी किसान अपना महत्वपूर्ण योगदान करते हैं, जो वित्तीय समावेशन की एक देन है।

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की स्थापनाः– भारत कृषि की विभिन्न योजनाओं के ऋणों पर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों तथा सार्वजानिक क्षेत्र की बैंकों को पुनर्वित प्रदान करने के उद्देश्य से जुलाई 1982 में इस बैंक की स्थापना की गई थी।

क्षेत्रीय, ग्रामीण बैंकों की स्थापना तथा कृषि का विकासः– भारत सरकार ने वित्तीय समावेशन के रथ को आगे बढ़ाने हेतु कृषि–क्षेत्र को प्राधान्य दिया है। भारतीय रिजर्व बैंक ने भी कृषि–विकास को अग्रिम स्थान दिया है। परिणामस्वरूप सन, 1975 में सभी सरकारी बैंकों को अपने अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को खोलने का आदेश दिया गया था। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक गाँव के गरीब तथा किसानों की कृषि से संबंधित वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध करवाके कृषि–क्षेत्र के विकास में अपनी अहम् भूमिका अदा करेंगी। आज कृषि–क्षेत्र का जो विकास हुआ है उसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष श्रेय बैंकों को जाता है।

कृषि एवं ग्रामीण विकास क्रांति का सूत्रपातः– कृषि निर्विवाद रूप से भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। सदियों से जीवन पद्धति एवं परंपरा में शामिल होते हुए भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था की पोषक रही है। प्रायः भारत में कृषि ही सामाजिक, आर्थिक विकास का मानदंड रही है। नीति निर्धारण में भी कृषि की केन्द्रीय भूमिका होती है। आजादी के बाद से देश में खाद्यान्न आत्मनिर्भरता हासिल करने तथा खाद्यान्न की कमी दूर करने में भारतीय कृषि का उल्लेखनीय योगदान रहा है। जहाँ आज कृषि के क्षेत्र में नई क्रांति की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। अतः कृषि क्षेत्र पर पर्याप्त ध्यान देकर ही भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार की गुंजाइश ढूंडी जा सकती है।

किसान क्रेडिट कार्ड योजनाः– वित्तीय समावेशन बढ़ाने के लिए किसानों को अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तथा धार्मिक कार्यों तथा सामाजिक कार्यों जैसे शादी–ब्याह का खर्चा, बीमारी जैसे खर्चों की पूर्ति तथा कृषि हेतु बीज खरीदना , खाद, दवाईयाँ खरीदने हेतु किसान क्रेडिट कार्ड उपलब्ध करवाया जाता है। इसका प्रारम्भ वर्ष 1998–99 में किया गया।

मोबाइल बैंकिंग सुविधाः– वित्तीय समावेशन के प्रसार हेतु बैंकिंग वित्तीय सेवाओं का लाभ प्रदान करने के लिए ग्रामीण विस्तारों में मोबाइल बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है। जिसके अंतर्गत मोबाइल वैन विभिन्न गांवों एवं विस्तारों में जाकर गरीब किसानों से जमासंग्रहण का कार्य करती हैं। मोबाइल बैंकिंग द्वारा वित्तीय योजनाओं के बारे में गाँव के किसानों को जानकारी प्रदान की जाती है।

ऋण माफी योजनाः– भारत में हर वर्ष भयंकर प्राकृतिक आपदायें घटित होती हैं। इससे प्रभावित किसानों तथा कृषि क्षेत्र से संबंधित लोगों को बैंकों द्वारा तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा ऋण माफी व पुनर्स्थापन में सहायता की जाती है तथा ये वित्तीय समावेशन के लिए सर्वथा उपयुक्त मामले हो सकते हैं।

पंजाब नैशनल बैंक का वित्तीय समावेशन में योगदानः– पंजाब नैशनल बैंक द्वारा हमेशा की तरह इस सामाजिक दायित्व को भी एक मिशन के रूप में लिया गया है। पंजाब नैशनल बैंक का उद्देश्य है कि– आम जनता, किसानों, ग्रामीण गरीबों के लिए प्यारा–न्यारा बनना। बैंकिंग सेवाओं से वंचित आम जनता तथा किसानों को उचित लागत पर वित्तीय सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से बैंक ने वर्ष 2008 को वित्तीय समावेशन का वर्ष घोषित किया था।

राजस्थान राज्य में घोषित भामाशाह योजना के तहत सभी खाते पंजाब नैशनल बैंक द्वारा खोले जाने का बीड़ा हमारे बैंक के स्वर्गीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के. सी. चक्रवर्ती ने उठाया था।

हमारे बैंक के स्वर्गीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के. सी. चक्रवर्ती द्वारा गाँधी जयंती के अवसर पर दिनांक 02.10.2007 को कृषक प्रशिक्षण केंद्र "नीमराना" में वित्तीय समावेशन हेतु एक गैर–सरकारी संस्था फिनो के सहयोग से वित्तीय समावेशन हेतु बिजनेस फेसिलिटेटर एवं कॉरस्पोडेंट मॉडल लांच किया गया था। इसके तहत फिनो के कार्यकर्ता कृषकों के घर–घर जाकर आवश्यक जानकारी एकत्रित करके हमारी संबंधित शाखाओं को उपलब्ध करवाके उनके बचत खाते खोले जाते थे और ऋण संबंधित जानकारी किसानों को उपलब्ध करवाई जाती थी।

पीएनबी कृषक कल्याण ट्रस्ट एवं पीएनबी किसान प्रशिक्षण केंद्र की स्थापनाः– पंजाब नैशनल बैंक ने किसानों की भलाई के उद्देश्य से एक ट्रस्ट की स्थापना भी की है जिसे सब रजिस्ट्रार के यहाँ विधिवत पंजीकृत कराया गया है। बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक इस ट्रस्ट के चैयरमैन हैं।

पीएनबी कृषक कल्याण ट्रस्ट के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न राज्यों में किसान प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करने का निर्णय लिया गया जहाँ किसानों को प्रशिक्षित किया जाता है।

दर्द क्या है, पीड़ा क्या है, जाके देखो गांवों को।।
होगा कांटों का अहसास, देखो छलनी पांवों को।।
अन्नदाता है किसान।
उनका बैंक करे कल्याण।।

बैंकों द्वारा कृषि–वित्तीय समावेशन में सहभागिताः– अन्य बैंकों द्वारा कृषि वित्तीय समावेशन की सफलता द्वारा कुल ऋण का 40% भाग कृषि क्षेत्र के लिए व कृषि का पुनः 50% भाग कमजोर किसानों को प्रदान किया जाता है। कमजोर वर्गों में अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित व्यक्ति आते हैं, जैसे छोटे एवं सीमांत किसान, भूमिहीन मजदूर, दस्तकार, इत्यादि को ऋण दिया जाता है। कृषि क्षेत्र एवं किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु इंडियन बैंक ने "ऋण परामर्श केंद्र", आंध्रा बैंक ने "विशेषज्ञ सेवायें", पंजाब नैशनल बैंक ने "पीएनबी कृषक कल्याण ट्रस्ट", किसान मित्र व किसान बंधु जैसी योजनाएं प्रारम्भ की हैं। एचडीएफसी बैंक ने स्वयं सहायता समूहों को माध्यम बनाया है।

किसानों के लिए राष्ट्रीय आयोग की रचनाः– कृषि क्षेत्र की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अधिकांश सहभागिता देखकर जाने–माने कृषि एवं आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ श्री देविन्दर शर्मा के अनुसार वर्ष 2003–04 के नैशनल सैंपल सर्वे संगठन के आंकडों के अनुसार एक किसान परिवार की औसत आमदनी मात्र 2115 रूपए थी। इसका अर्थ यह है कि लगभग 60 करोड़ किसान गरीबी रेखा से नीचे जीवन– यापन कर रहे हैं। यही कारण है कि सरकार और बैंक समावेशी विकास को ध्यान में रखकर वित्तीय समावेशन पर अधिक जोर दे रहे हैं। श्री देविन्दर ने किसानों के लिए एक अलग राष्ट्रीय आयोग बनाने का सुझाव दिया है, जिसकी जिम्मेदारी एक निश्चित जमींन में किसानों के लिए एक निश्चित आमदनी सुनिश्चित करना है।

निष्कर्षः– भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है तथा निरंतर आर्थिक विकास की राह पर अग्रसर है तथा देश का सर्वांगीण विकास खासकर कृषि क्षेत्र पर एवं कृषि से संबंधित गतिविधियों के विकास पर है। भारत सरकार द्वारा हमारी अर्थव्यवस्था का अगले पांच सालों में 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचने का लक्ष्य रखा है। अतः बैंकों द्वारा कृषि को हम वित्तीय समावेशन के तहत ज्यादा वित्तीय सहायता प्रदान करेंगे यानि की उपरोक्त सभी मुद्दों को ध्यान में रखकर कृषि क्षेत्र की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सहभागिता बढ़ाएंगे तो यह निर्विवाद है कि हमारा भारत वर्ष आने वाले वर्षों में विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में स्थान प्राप्त कर ही लेगा और अर्थव्यवस्था में विकास करके कृषि क्षेत्र, वित्तीय समावेशन का लाभ प्राप्त करके सफलता के शिखर जरुर सर रखेंगे।

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा प्रधान कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण।

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार द्वारा दिनांक 18.02.2021 को प्रधान कार्यालय, द्वारका का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। उक्त निरीक्षण श्री भीम सिंह (उप निदेशक–राजभाषा) तथा श्री राजीव कुमार (सहायक निदेशक–राजभाषा) द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा श्री बी. एस. मान, श्री आर. के. अरोड़ा महाप्रबंधक–राजभाषा, श्री विन्दर कुमार शर्मा, महाप्रबंधक–मानव संसाधन प्रभाग, श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबंधक–राजभाषा, श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा मुख्य प्रबन्धक–राजभाषा तथा राजभाषा विभाग के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। वित्त मंत्रालय के प्रतिनिधियों द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए बैंक की प्रशंसा की गई और भविष्य में इसी तरह राजभाषा के उत्थान के लिए कार्य करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान निरीक्षणकर्ता अधिकारियों ने कहा **"पीएनबी मुख्यालय के राजभाषायी निरीक्षण के दौरान मैंने अवलोकन किया कि मुख्यालय द्वारा राजभाषा के संबध में उत्कृष्ट और अनुकरणीय कार्य किया जा रहा है। आशा करता हूँ कि न केवल इसे बनाये रखा जायेगा बल्कि इसमें उत्तरोत्तर रूप में वृद्धि की जायेगी"।**

श्री भीम सिंह (उप निदेशक–राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार का प्रधान कार्यालय, द्वारका में स्वागत करते हुए श्री बी. एस. मान मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा।

श्री राजीव कुमार (सहायक निदेशक–राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार का प्रधान कार्यालय, द्वारका में स्वागत करते हुए श्री आर. के. अरोड़ा महाप्रबंधक–राजभाषा।

बैंक के संस्थापक पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी की प्रतिमा के साथ उपस्थित श्री भीम सिंह (उप निदेशक–राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार एवं श्री राजीव कुमार (सहायक निदेशक–राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार, सहायक महाप्रंधक–राजभाषा श्रीमती मनीषा शर्मा, मुख्य प्रबन्धक–राजभाषा श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा तथा राजभाषा विभाग के सदस्यगण।

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रधान कार्यालय, द्वारका के राजभाषायी निरीक्षण के दौरान समीक्षा बैठक करते हुए श्री भीम सिंह (उप निदेशक–राजभाषा) वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, भारत सरकार, श्री बी. एस. मान मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा, श्री आर. के. अरोड़ा महाप्रबंधक राजभाषा, श्री विन्दर कुमार शर्मा महाप्रबंधक, मानव संसाधन प्रभाग एवं श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रंधक–राजभाषा।

माननीय मुख्यमंत्री, असम का पीएनबी में आगमन

श्री सर्वानंद सोनोवाल, माननीय मुख्यमंत्री, असम द्वारा अंचल कार्यालय, गुवाहाटी माजुली तथा धारापुर का दौरा किया गया इस अवसर पर बैंक के एमडी एवं सीईओ श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव भी उपस्थित रहे। इस दौरान विभिन्न गतिविधियों का अयोजन किया गया।

"पीएनबी लाडली" योजना के तहत 20 लाभार्थियों को अध्ययन सामग्री का वितरण करते हुए श्री सर्वानंद सोनोवाल, माननीय मुख्यमंत्री, असम। साथ में हैं श्री कामाख्या प्रसाद तासा, राज्यसभा सदस्य, श्री सीएच. एस. एस मल्लिकार्जुन राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पंजाब नैशनल बैंक, श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पीएनबी मेटलाइफ, श्री शिव शंकर सिंह, अंचल प्रमुख, गुवाहाटी एवं श्री मनजीत सिंह, मंडल प्रमुख, जोरहाट।

माजुली, असम में मंडल कार्यालय, जोरहाट, द्वारा नवनिर्मित शाखा 'फुलोनी चरिआलि' का उद्घाटन करते हुए श्री सर्वानंद सोनोवाल, माननीय मुख्यमंत्री, असम, इस अवसर पर श्री कामाख्या प्रसाद तासा, राज्यसभा सदस्य तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव भी उपस्थित रहे।

माननीय मुख्यमंत्री, असम का पीएनबी में आगमन

'बैंक' की कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) गतिविधि के अर्तगत स्वास्थ्य विभाग, माजुली, असम को एम्बुलेंस प्रदान की गई। स्वास्थ्य विभाग, माजुली को एम्बुलेंस की चाबियां सौंपते हुए श्री सर्वानंद सोनोवाल, माननीय मुख्यमंत्री, असम, साथ में उपस्थित श्री कामाख्या प्रसाद तासा, राज्यसभा सदस्य, श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पीएनबी मेटलाइफ, श्री विवेक झा, मुख्य महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली, श्री शिव शंकर सिंह, अंचल प्रमुख, गुवाहाटी।

सीएसआर कार्यक्रम के तहत मुख्यमंत्री राहत प्रकोष्ठ के लिए श्री सर्वानंद सोनोवाल, माननीय मुख्यमंत्री, असम को 25.00 लाख रूपए का चेक सौंपते हुए अंचल प्रमुख, गुवाहाटी, श्री शिव शंकर सिंह।

गुवाहाटी अंचल की प्रथम पत्रिका "पीनबी इंद्रधनुष संवाद" का अनावरण करते हुए माननीय मुख्यमंत्री, असम श्री सर्वानंद सोनोवाल, गुवाहाटी अंचल प्रमुख श्री शिव शंकर सिंह एवं राजभाषा अधिकारी सुश्री श्वेता कुमारी।

ज्ञान प्रश्नोत्तरी

1. भारत में हरित क्रांति की शुरूआत कब हुई?

क. 1960–61	ख. 1964–65
ग. 1967–68	घ. 1966–67

2. इनमें से कौन सी खरीफ की फसल है?

क. मूंगफली	ख. मक्का
ग. धान	घ. उपरोक्त सभी

3. 'पीली क्रांति' का संबंध किससे है?

क. तिलहन उत्पादन से	ख. मक्का उत्पादन से
ग. टमाटर उत्पादन से	घ. इनमें से कोई नहीं

4. 05 जून को विश्वभर में कौनसा दिवस मनाया जाता है।

क. महिला दिवस	ख. **ओजोन दिवस**
ग. मजदूर दिवस	घ. **पर्यावरण दिवस**

5. सीढ़ीनुमा कृषि कहां पर की जाती है?

क. शुष्क क्षेत्रों में	ख. छतों पर
ग. पहाड़ों की ढलानों पर	घ. इनमें से कोई नहीं

6. भारतीय संविधान में नीति–निर्देशक सिद्धांत किस देश से लिए गए हैं?

क. आयरलैंड	ख. अमेरिका
ग. जापान	घ. फ्रांस

7. खालसा पंथ की स्थापना किसने की थी?

क. गुरू नानक देव जी	ख. गुरू गोविन्द सिंह जी
ग. गुरू अंगद देव जी	घ. इनमे से कोई नहीं

8. वर्ष 2021 में आईपीएल का कौन सा संस्करण आयोजित किया गया?

क. 12वां	ख. 11वां
ग. 13वां	घ. 14वां

9. कबड्डी किस देश का राष्ट्रीय खेल है?

क. भारत	ख. पाकिस्तान
ग. नेपाल	घ. बांग्लादेश

10. पीएनबी सामाजिक सुरक्षा अभियान की समयावधि क्या है?

क. 15 अप्रैल, 2021 से 15 जून, 2021	ख. 09 अप्रैल, 2021 से 01 जून, 2021
ग. 16 अप्रैल, 2021 से 01 मई, 2021	घ. 01 अप्रैल, 2021 से10 जून, 2021

11. सुकन्या समृद्धि योजना के अंतर्गत वर्ष में अधिकतम कितनी राशि जमा की जा सकती है?

क. ₹ 50 हजार	ख. ₹ 1 लाख 50 हजार
ग. ₹ 70 हजार	घ. ₹ 2 लाख

12. इनमें से किस पर जीएसटी नहीं लगेगा ?

क. टेलीविजन खरीदने पर	ख. नमक खरीदने पर
ग. फ्रिज खरीदने पर	घ. इनमें से कोई नहीं

13. सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2020 की थीम क्या थी?

क. सतर्क भारत–समृद्ध भारत	ग. 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत'
ग. भ्रष्टाचार हटाओ देश बचाओ	घ. मेरा देश–भ्रष्टाचार मुक्त

14. निम्नलिखित में से केंद्रीय बजट 2020–21 में कर स्लैब की दर नहीं है?

क. 10%	ख. 20%
ग. 30%	घ. 40%

15. 'विवाद से विश्वास' योजना किससे संबंधित है?

क. अप्रत्यक्ष कर	ख. प्रत्यक्ष कर
ग. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों	घ. न तो प्रत्यक्ष और न ही अप्रत्यक्ष

16. निम्नलिखित में से कौन–सी एक साधारण बैंक ग्राहक की सामान्य बैंकिंग गतिविधि नहीं मानी जा सकती है?

क. एटीएम का प्रयोग	ख. टेली बैकिंग
ग. बैंकर चेक का उपयोग	घ. पीएलआर घटाना या बढ़ाना और ऋण नीति की घोषणा

17. 'वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट' निम्नलिखित में से किस संस्था का प्रकाशन है?

क. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष	ख. विश्व व्यापार संगठन
ग. विश्व बैंक	घ. इनमें से कोई नहीं

18. विश्व बैंक का मुख्यालय कहाँ है ?

क. वाशिंगटन डी.सी.	ख. जेनेवा
ग. हेग	घ. पेरिस

19. भाषायी वर्गीकरण के अनुसार 'केरल' राज्य किस क्षेत्र में आता है?

क. 'ग' क्षेत्र	ख. 'ख' क्षेत्र
ग. 'क' क्षेत्र	घ. इनमें से कोई नहीं

20. वर्तमान समय में राजभाषा विभाग, भारत सरकार का प्रभार किसके पास है?

क. श्री नरेन्द मोदी, प्रधानमंत्री	ख. श्रीमती निर्मला सीतारमण, वित्त मंत्री
ग. श्री अमित शाह, गृहमंत्री	घ. श्री राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

(उत्तर इसी अंक में पृष्ठ 59 पर दिए गए हैं।)

गणेश
प्रबंधक-राजभाषा
राजभाषा विभाग, प्र.का. द्वारका

किसान क्रेडिट कार्ड (KCC)

ज्ञानेश्वर झा

प्रबंधक (कृषि)

प्राथमिकता क्षेत्र एवं वित्तीय समावेशन प्रभाग

प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है जिसकी शुरुआत 1998 में की गई थी यह योजना हमारे देश के कृषक समुदाय को ऋण सुविधा प्रदान करने के लिए नैशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (NABARD) द्वारा तैयार की गई थी। यह योजना कृषि क्षेत्र की व्यापक ऋण आवश्यकता को पूरा करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी।

यह योजना दो प्रकार से किसानों को ऋण प्रदान करती है:–

1. फसल उत्पादन के लिए अल्पकालिक नकद ऋण सीमा।
2. खेती से संबंधित गतिविधियों जैसे पंप सेट स्थापन, सिंचाई गतिविधियों, भूमि विकास, वृक्षारोपण आदि के लिए सावधि ऋण (term loan)।

इसमें भाग लेने वाले संस्थानों में सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, राज्य सहकारी बैंक आदि संस्थान शामिल हैं। केसीसी की वैधता पांच साल की है और ऐसे खातों में साधारण ब्याज लिया जाता है।

केसीसी योजना में, बैंक द्वारा किसानों को 3 लाख रुपये तक के केसीसी ऋण प्रदान करने पर, सरकार द्वारा बैंकों को 2% का ब्याज उपदान (interest subvention) दिया जाता है, जिससे बैंक 7% प्रतिवर्ष की ब्याज दर पर किसानों को केसीसी ऋण प्रदान करता है। 2008 के बाद से, शीघ्र पुनर्भुगतान करने वाले किसानों को एक अतिरिक्त 3% उपदान प्रदान किया जा रहा है। इस प्रकार से किसानों द्वारा भुगतान किया गया प्रभावी ब्याज 4% हो जाता है।

हाल ही में, सरकार ने कृषि में लागत कार्यशील पूंजी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पशुपालन किसानों और मत्स्यपालन किसानों (AH&F) को किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) की सुविधाएं देने की शुरुआत की है। इसके अतिरिक्त, केसीसी स्कीम के तहत मत्स्यपालन और पशुपालन करने वाले किसानों के लिए ब्याज उपदान (interest subvention)% 2% और शीघ्र चुकौती प्रोत्साहन [Prompt Repayment Incentive (PRI),% 3% का लाभ भी दिया गया है। सस्ते ऋण के अलावा, केसीसी लेने वाले सभी किसानों की फसल का बीमा फसल बीमा योजना जैसे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) द्वारा किया जाता है।

2019 के दौरान, सरकार द्वारा पीएम–किसान सम्मान निधि योजना शुरू की गई जिसके तहत सरकार छोटे और सीमांत किसानों को रु 6000 प्रति वर्ष की वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इस योजना के एक साल बाद सरकार ने भारत के सभी पीएम किसान (PM KISAN) लाभार्थियों को केसीसी प्रदान करने के लिए एक अभियान शुरू किया है और इस अभियान के तहत बैंकिंग संस्थान, केंद्र और राज्य सरकार की सक्रिय भागीदारी के साथ सरकार द्वारा एक केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया गया है।

केसीसी योजना (KCC) में, 31.12.2020 तक, हमारे बैंक में 3661833 केसीसी कार्ड धारक है जिसकी बकाया राशि (outstandingamount) रु 60463 करोड़ है जोकि कुल कृषि लोन पोर्टफोलियो का 52% हिस्सा है।

KCC स्कीम के पुनर्भुगतान/रिकवरी/एनपीए परिदृश्य को देखते हुए, केसीसी के तहत एनपीए रु 7004.65 करोड़ है जोकि कुल केसीसी लोन पोर्टफोलियो का 11% है।

KCC योजना को बेहतर बनाने और बेहतर पुनर्भुगतान/रिकवरी रूपरेखा के लिए, सरकार द्वारा निम्नलिखित चरणों पर विचार किया जा सकता है:–

- सरकार केसीसी के सावधि ऋण घटक (term loan component) पर ब्याज उपदान (interest subvention) के लिए भी विचार कर सकती है।
- केसीसी ऋण के अंतर्गत संपार्श्विक मुक्त ऋण (collateral free loans), अर्थात रु. 1.60 लाख की ऋण राशि को सुरक्षित करने के लिए एक विशेष क्रेडिट गारंटी योजना को अनुकूलित किया जा सकता है।
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के लिए देय प्रीमियम की सरकार द्वारा पूरी तरह से प्रतिपूर्ति की जा सकती है।
- सरकार मौजूदा ढाँचा के समान पंचायत स्तर पर कृषि ऋणों की वसूली के लिए एक मंच का गठन कर सकती है जो राजस्व प्राधिकरण, जिला प्रशासन और कृषि विभाग की मध्यस्थता के साथ केसीसी की संतृप्ति के लिए बनाया गया है।

केसीसी (KCC) योजना एक तरफ खेती की गतिविधियों के लिए वित्त की जरूरत में किसानों को लाभ प्रदान करता है और दूसरी तरफ केसीसी वित्तपोषण से बैंक के कृषि पोर्टफोलियो को बढ़ावा देता है जिससे आरबीआई द्वारा तय प्राथमिकता वाले क्षेत्र में ऋण मानदंडों के तहत कृषि लक्ष्य पूरा होता है।

भागीरथी

युगांत जोशी
मंडल कार्यालय, उज्जैन

भागीरथी तुम जो पथ विमुख हो गयी,
तो अवद्ध ब्रह्मपुत्र को कौन समझायेगा?
तुम्हारी अगणित गहनता के इस लोप में,
हर अभिमानी सिंधु अब इतरायेगा।

आश्चर्य अचरज अकल्पनीय, तुम्हारी कलकल की रागिनी,
जो कृष्ण कुटिल कर्कश मेघों से है टकराती।
अपनी आरोही से ही जो तुम अनभिज्ञ हो गयी,
तो इस कटु शांति की जटिलता कौन सुलझाएगा?

प्राण दात्री! दुर्गमता से अठखेली करती
हे सरस्वती! निर्जल कंठ गंतव्य तुम्हारे।
मलिन पाषाण भी जिसे मैला न कर सके,
तुम्हारी धारा में धरा तो क्या, नभ भी दिख जायेगा।

श्वेत श्याम की नगण्यता से परे,
तुम्हारे ममत्व में अनंत भी समाहित है।
क्या तुम्हे बांध सकता कोई बांध भला?
जब निश्चय भर में तुम्हारे, हर परिणाम निहित है।

बरखा की आस तो निर्बल निर्झर करते रहेंगे,
क्योंकि निरंतर बहना हर कोई कहाँ सीख पायेगा?
भागीरथी तुम जो पद विमुख हो गयी,
तो अवद्ध ब्रह्मपुत्र को कौन समझायेगा?

(ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर)

1	घ	2	घ	3	क	4	घ	5	ग	6	क	7	ख	8	घ	9	घ	10	क
11	ख	12	ख	13	क	14	घ	15	ख	16	घ	17	ग	18	क	19	क	20	ग

खुशबू ऐसे फैली

रतन दुरेजा
प्रबन्धक (सेवानिवृत्त)
सिरसा, हरियाणा

"अच्छा, मेरा स्टेशन आ गया है, मैं चलता हूँ। ईश्वर ने चाहा तो फिर मुलाकात होगी "इतना कह कर वो अपना बैग उठाकर ट्रेन के डिब्बे के दरवाजे तक पहुँच गए।

मैं अवाक् हो उनका सीट से उठना और दरवाजे की और जाना देख रहा था। इतने समय का साथ और उनसे बातचीत का दौर अब अंतिम पड़ाव पर था। रेलगाड़ी की रफ्तार धीरे–धीरे कम होती गई और वारंगल स्टेशन का प्लेटफोर्म आ गया। ट्रेन के रुकते ही उन्होंने मुझे एक बार देखा और एक मधुर मुस्कान के साथ हाथ हिला कर उतर गए। मेरी नजर उनका पीछा करती रही थी, पर कुछ ही क्षण में वो मेरी आँखों से ओझल हो गए। रेलगाड़ी कुछ समय के पश्चात चलने लगी और फिर उसने गति पकड़ ली। मैं बीते हुए समय के भंवर से बाहर आया और अपने आसपास देखा कुछ नहीं बदला था बस वो नहीं थे, जो पिछले 9–10 घंटे से मेरे साथ यात्रा कर रहे थे। अचानक मुझे उनके बैठे हुए स्थान से खुशबू का एक झोंका आता प्रतीत हुआ। आश्चर्य से एक स्लीपर क्लास रेलगाड़ी के डिब्बे में फैली खाने की बू, टॉयलेट से आती बदबू और सहयात्रियों के पसीने की बदबू की जगह एक भीनी महक से मेरा मन प्रसन्न हो गया। परन्तु सवाल ये था कि इस बदबू भरे वातावरण में यह खुशबू कैसे फैली?

ये जानने के लिए आप को मेरे साथ दस घंटे पहले के क्षणों में जाना होगा। मैं चेन्नई में कार्यरत था और मेरा पैतृक घर भोपाल में था। अचानक घर से पिताजी का फोन आया कि तुरंत घर चले आओ, कोई अत्यंत आवश्यक कार्य है। मैं आनन–फानन में रेलवे स्टेशन पहुंचा और तत्काल रिजर्वेशन की कोशिश की परन्तु गर्मी की छुट्टियाँ होने से एक भी सीट उपलब्ध नहीं थी। सामने ग्रैंड ट्रंक एक्सप्रेस खड़ी थी और उसमें भी बैठने की जगह नहीं थी परन्तु मरता क्या नहीं करता, घर तो कैसे भी जाना था। बिना कुछ सोचे समझे सामने खड़े स्लीपर क्लास के डिब्बे में घुस गया। मैंने सोचा इतनी भीड़ में टीटी कुछ नहीं कहेगा। डिब्बे के अन्दर भी बुरा हाल था जैसे–तैसे जगह बना कर एक बर्थ पर एक सज्जन को लेटे देखा तो उनसे याचना करते हुए बैठने के लिए जगह मांग ली। सज्जन मुस्कुराये और उठकर बैठ गए और बोले "कोई बात नहीं आप यहाँ बैठ सकते हैं।" मैं उन्हें धन्यवाद दे वहीं कोने में बैठ गया। थोड़ी देर बाद ट्रेन ने स्टेशन छोड़ दिया और रफ्तार पकड़ ली। कुछ मिनटों में जैसे सभी लोग व्यवस्थित हो गए और सभी को बैठने का स्थान मिल गया और लोग अपने साथ लाया खाना खोल कर खाने लगे। पूरे डिब्बे में खाने की बू भर गयी। मैंने अपने सहयात्री को देखा और सोचा बातचीत का सिलसिला शुरू किया जाये। मैंने कहा "मेरा नाम आलोक है और मैं इसरो में वैज्ञानिक हूँ आज जरुरी काम से अचानक मुझे घर जाना था इसलिए स्लीपर क्लास में चढ़ गया, वरना मैं एसी से कम में यात्रा नहीं करता।" वो मुस्कुराये और बोले –वाह तो मेरे साथ एक वैज्ञानिक यात्रा कर रहे हैं। मेरा नाम जग मोहन राव हैं, मैं वारंगल जा रहा हूँ। उसी के पास एक गाँव में मेरा घर है। मैं अक्सर शनिवार को घर जाता हूँ। इतना कह उन्होंने अपना बैग खोला और उसमें से एक डिब्बा निकाला। वो बोले "ये मेरे घर का खाना है, आप लेना पसंद करेंगे?" मैंने संकोचवश मना कर दिया और अपने बैग से सैंडविच निकल कर खाने लगा। जग मोहन राव, ये नाम कुछ सुना और पहचाना लग रहा था, परन्तु याद नहीं आ रहा था।

कुछ देर बाद सभी लोगों ने खाना खा लिया और जैसे–तैसे सोने की कोशिश करने लगे। हमारी बर्थ के सामने एक परिवार बैठा था जिसमें एक पिता, माता और दो बड़े बच्चे थे। उन लोगों ने भी खाना खा कर बिस्तर लगा लिए और सोने लगे। मैं बर्थ के पैताने में उकडू बैठ कर मोबाइल में गेम खेलने लगा। रेलगाड़ी तेज रफ्तार से चल रही थी। अचानक मैंने देखा की सामने वाली

बर्थ पर 55–56 साल के जो सज्जन लेटे थे वोह अपनी बर्थ पर तड़पने लगे और उनके मुंह से झाग निकलने लगा। उनका परिवार भी घबरा कर उठ गया और उन्हें पानी पिलाने लगा, परन्तु वो कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं थे। मैंने चिल्ला कर पूछा "अरे कोई डॉक्टर को बुलाओ, एमरजेंसी है"। रात में स्लीपर क्लास के डिब्बे में डॉक्टर कहाँ से मिलता। उनके परिवार के लोग उन्हें असहाय अवस्था में देख रोने लगे तभी मेरे साथ वाले जग मोहन नींद से जाग गए। उन्होंने मुझसे पूछा क्या हुआ? मैंने उन्हें सब बताया। मेरी बात सुनते ही उन्होंने लपक के अपने बर्थ के नीचे से अपनी सूटकेस को निकाला और खोलने लगे। सूटकेस खुलते ही मैंने देखा उन्होंने स्टेथेस्कोप निकाला और सामने वाले सज्जन के सीने पर रख धड़कने सुनने लगे। एक मिनट बाद उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें दिखने लगी। उन्होंने कुछ नहीं कहा और सूटकेस में से एक इंजेक्शन निकाला और सज्जन के सीने में लगा दिया और उनका सीना दबा दबा कर मुंह से मुंह लगा कर सांस देने लगे। कुछ मिनट तक सीपीआर देने के बाद मैंने देखा की सज्जन का तड़फना कम हो गया। उन्होंने सूटकेस से कुछ और गोलियां निकाली और परिवार के बेटे से बोले "बेटा, ये बात सुनकर घबराना नहीं। आपके पापा को मेसिव हृदयाघात आया था, पहले उनकी जान को खतरा था परन्तु मैंने इंजेक्शन दे दिया हे और ये दवाईयां उन्हें दे देना।" उनका बेटा आश्चर्य से बोला "पर आप कौन हों"। वो बोले "मैं एक डॉक्टर हूँ, मैं इनकी केस हिस्ट्री और दवाईयां लिख देता हूँ अगले स्टेशन पर उतर कर आप लोग इन्हें अच्छे अस्पताल ले जाइएगा। उन्होंने अपने बैग से एक पेड निकाला और जैसे ही मैंने उस पेड का हेडिंग पढ़ा, मेरी याददाश्त वापस आ गयी। उस पर लिखा था डॉक्टर जग मोहन राव, हृदय रोग विशेषज्ञ, अपोलो अस्पताल चेन्नई। मुझे याद आ गया कि कुछ दिन पूर्व मैं जब अपने पिता को चेकअप के लिए अपोलो हस्पताल ले गया था वहा मैंने डॉक्टर जगमोहन राव के बारे में सुना था। वो अस्पताल के सबसे बड़े हृदय रोग विशेषज्ञ थे व उनका अपवाईंटमेंट लेने के लिए महीनों का समय लगता था। मैं आश्चर्य से उन्हें देख रहा था। एक इतना बड़ा डॉक्टर स्लीपर क्लास में यात्रा कर रहा था। मैं एक छोटा सा वैज्ञानिक घमंड से एसी में चलने की बात कर रहा था और ये इतने बड़े आदमी इतने सामान्य ढंग से पेश आ रहे थे। इतने में अगला स्टेशन आ गया और वो परिवार टीटी की मदद से उतर गया। रेल वापस चलने लगी, मैंने उत्सुकता वश उनसे पूछा "डॉक्टर साहब आप तो आराम से एसी में यात्रा कर सकते थे फिर स्लीपर में क्यूँ? वो मुस्कुराये और बोले– मैं जब छोटा था और गाँव में रहता था तब मैंने देखा था कि रेल में कोई डॉक्टर उपलब्ध नहीं होता है खासकर दूसरे दर्जे में। इसलिए मैं जब भी घर या कहीं जाता हूँ तो स्लीपर क्लास में सफर करता हूँ। न जाने , कब किसे मेरी जरुरत पड़ जाए। मैंने डाक्टरी मेरे जैसे लोगों की सेवा के लिए ही की थी। हमारी पढ़ाई का क्या फायदा यदि हम किसी के काम न आ पाए। "इसके बाद सफर उनसे यूं ही बात करते बीतने लगा। सुबह के चार बज गए थे वारंगल आने वाला था। वो यूं ही मुस्कुरा कर लोगो का दर्द बाँट कर गुमनाम तरीके से मानव सेवा कर अपने गाँव की और निकल लिए और मैं उनके बैठे हुए स्थान से आती हुई खुशबू का आनंद लेते अपनी बाकी यात्रा पूरी करने लगा। अब मेरी समझ में आया था कि इतनी भीड़ के बावजूद डिब्बे में खुशबू कैसे फैली। ये उन महान व्यक्तित्व और पूण्य आत्मा की खुशब थी जिसने मेरा जीवन और मेरी सोच दोनों को महका दिया। वाहेगुरु जी..

बैंक ने फिनटेक इनोवेशन सेंटर स्थापित करने के लिए आईआईटी कानपुर और फर्स्ट के साथ गठबंधन किया

हमारे बैंक ने प्रतिष्ठित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT), कानपुर और फर्स्ट (फाउंडेशन फॉर इनोवेशन एंड रिसर्च इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी) के साथ संयुक्त रूप से आईआईटी परिसर में पंजाब नैशनल बैंक–आईआईटी कानपुर इनोवेशन सेंटर स्थापित करने के लिए गठबंधन किया है।

हमारे एमडी एवं सीईओ श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव और बैंक तथा आईआईटी कानपुर एवं फर्स्ट के उच्चाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली में एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

इस साझेदारी के अन्तर्गत, पीएनबी और आईआईटी कानपुर "फिनटेक इनोवेशन सेंटर (एफआईसी)" की स्थापना करेंगे जो चुनौतियों का समाधान करने और बीएफएसआई में अवसरों का पता लगाने के लिए नवीन समाधान को प्रोत्साहित करने के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करेगा। बैंक, आईआईटी कानपुर में फिनटेक इनोवेशन सेंटर बनाकर आईआईटी कानपुर के अनुभवी संकाय सदस्य एवं फर्स्ट की मदद से तकनीकी चुनौतियों का सामना करने के लिए कुछ आर एंड डी सिस्टम और नए उत्पाद बनाना और विकसित करना चाहता है।

आईआईटी कानपुर के तकनीकी कौशल और पीएनबी की वित्तीय विशेषज्ञता की साझेदारी इसे एक उपयुक्त "फिन–टेक" साझेदारी बनाती है जो नवाचारों और उद्यमशीलता की उत्कृष्टता में मदद करेगी। फिनटेक इनोवेशन सेंटर को वित्तीय संस्थानों के समग्र इको सिस्टम, शिक्षाविदों, वी सी फंड प्रौद्योगिकी कंपनियों और प्रमुख सरकारी संगठनों के द्वारा समर्थित किया जाएगा।

इस अवसर पर हमारे बैंक के एमडी एवं सीईओ श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव ने कहा कि "यह पीएनबी और आईआईटी कानपुर के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है, जहां हम देश के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों को बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में विशेषज्ञता लाने के लिए एक साथ आए हैं। यह पंजाब नैशनल बैंक और वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए तकनीकी समाधान विकसित करने हेतु आईआईटी कानपुर द्वारा शुरू की गई स्टार्ट–अप और फिनटेक कंपनियों को एक अवसर प्रदान करेगा। हमें ग्राहकों के विभिन्न क्षेत्रों अर्थात रिटेल, कृषि, एमएसएमई आदि को फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंकेज के साथ सर्वोपयोगी समाधान प्रदान करने की आवश्यकता है। प्रत्येक लिंक पर डिजिटल या भौतिक स्पर्श बिंदुओं के माध्यम से ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने में अंतिम मील कनेक्ट और टर्न अराउंड टाइम (टीएटी) सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर आईआईटी कानपुर के प्रोफेसर अमिताभ बंद्योपाध्याय ने कहा, "आईआईटी कानपुर में पीएनबी–एफआईसी की स्थापना के साथ, बैंक के लिए उन्नत समाधान विकसित करने के लिए फिनटेक से संबंधित नव–तकनीकों में विश्व स्तरीय अनुसंधान किया जाएगा"।

पीएनबी ने युद्ध नायकों के लिए 6 शाखाएं समर्पित की

पंजाब नैशनल बैंक ने **15 जनवरी, 2021** को सशस्त्र सेना दिवस की पूर्व संध्या पर सशस्त्र बल वेटरन्स दिवस मनाया। हमारे बैंक द्वारा दिल्ली कैंट में स्थित अपने डीजी हट को शहीद कैप्टन अनुज नय्यर, एमवीसी (17 जाट) के सम्मान में श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित किया। पीएनबी ने युद्ध नायकों के सम्मान में अन्य पाँच शाखाओं को अर्थात जयपुर झोटवाड़ा शाखा को कम्पनी हवलदार मेजर पीरूसिंह शेखावत पीवीसी, आगरा पीआरटीसी को ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान एमवीसी, लखनऊ सदर बाजार को कैप्टन मनोज कुमार पांडेय पीवीसी, जम्मू कैंट को नायब सूबेदार बाना सिंह पीवीसी और जालंधर कैंट को फ्लाइंग ऑफिसर निर्मलजीत सिंह सेखोन पीवीसी को समर्पित किया।

कैप्टन नय्यर, 17 जाट रेजिमेंट, को 1999 में कारगिल विजय में उनके सर्वोच्च बलिदान के लिए मरणोपरांत भारत के दूसरे सबसे बड़े वीरता पुरस्कार, महावीर चक्र से सम्मानित किया गया था।

सम्मान समारोह में कप्तान अनुज नय्यर एमवीसी की माँ सुश्री मीरा नय्यर को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मेजर जनरल, दीपक सपरा, एमडी सेना कल्याण प्लेसमेंट संगठन, ब्रिगेडियर आकाश जौहर, ब्रिगेडियर डीआयएवी, कर्नल बृज मोहन कपूर 1971 के युद्ध के वेटरन, 1965 के युद्ध के कर्नल हांडा वेटरन और सेना के एक अनुभवी लेफ्टिनेंट कर्नल शीतल बोस उपस्थित थे।

इस अवसर पर नई दिल्ली अंचल के अंचल प्रबन्धक, श्री रामकुमार, ने सभा को संबोधित करते हुए पीएनबी द्वारा रक्षाबलों के लिए किए गए महत्त्वपूर्ण योगदान से अवगत कराया एवं रक्षाबलों को दी जा रही रक्षाप्लस सैलरी अकाउंट की जानकारी भी प्रदान की।

इस अवसर मुख्य महाप्रबंधक श्री विवेक झा ने कप्तान अनुज नय्यर, एमवीसी की माँ को सम्मानित किया और कहा, "सर्वप्रथम मैं रक्षा परिवार

के सदस्यों का उनके अतुल्य बलिदान के लिए आभार व्यक्त करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ। पीएनबी आज रक्षाबलों को राष्ट्र की सेवा में उनके अतुल्य योगदान के लिए सल्युट करता है। पीएनबी का एक लंबा और शानदार इतिहास है और हमे गर्व है कि हम रक्षाबलों के साथ जुड़े है। हम लगातार रक्षाबलों को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।"

पीएनबी ने सभी रक्षाकर्मियों, वेटरन्स और प्रशिक्षुओं के लिए एक विशेष योजना "रक्षक प्लस सैलरी आकाउंट" की पेशकश करके सशस्त्र बलों की वीरता और असीम प्रतिबद्धता का सम्मान किया। पीएनबी अपनी 10,900 शाखाओं के माध्यम से सेवाएं प्रदान कर रहा है और 118 शाखाओं को विशेष रूप से सशस्त्र बलों के लिए नामित किया गया है जो पूरे देश में छावनी क्षेत्रों में स्थापित की गई हैं।

'आर्म्ड फोर्सेज वेटरन्स डे के अवसर पर सदर, लखनऊ शाखा को 'रक्षक प्लस शाखा' के रूप में री–मॉडेल किया गया। उक्त शाखा को अमर शहीद कै. मनोज कुमार पांडेय, परम वीर चक्र को समर्पित किया गया। 'रक्षक प्लस शाखा' के रूप में री–मॉडेल की गई सदर शाखा का उद्घाटन, कै. मनोज कुमार पांडेय के पिताजी, श्री गोपीचंद्र पांडेय एवं उनके भाई, श्री मनमोहन पांडेय की गरिमामयी उपस्थिति में कर्नल सतेन्द्र सिंह नेगी, उप महाप्रबंधक,पूर्व सैनिक कल्याण निगम द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में बैंक के अंचल प्रमुख, लखनऊ श्री स्वरूप कुमार साहा (मुख्य महाप्रबंधक), महाप्रबंधक, श्री संजय गुप्ता एवं लखनऊ (पश्चिम) मंडल के मंडल प्रमुख, श्री ए.एच. किंडर उपस्थित थे।

पंजाब नैशनल बैंक अपने 127 वे स्थापना दिवस के सुअवसर पर हमारे बहादुर सेना नायकों और पूर्व सैनिकों की राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ सेवा और बलिदान के सम्मान में मेरठ (पश्चिम) के शैतान सिंह शाखा को परमवीर चक्र सम्मानित मेजर शैतान सिंह को समर्पित किया है। रक्षक प्लस शाखा का उद्घाटन करते हुए श्री सुरिंदर पाल सिंह अंचल प्रमुख मेरठ, श्री नीलेश कुमार मण्डल प्रमुख, मेरठ (पश्चिम)।

पंजाब में होली बन जाती है होला महल्ला

सुमित्रा देवी
स. प्रबन्धक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, फाजिल्का

रंगों का पर्व होली जब पंजाब में मनाया जाता है तो उसमें वीरता का रंग सबसे अहम हो जाता है, इसीलिए कहा जाता है कि **'लोकां दियां होलियां, खालसे दा होला ए'**। गुरबाणी में कहा गया है, **'होली की नीसंत सेव, रंगुलागा अतलाल देव...'** श्री गुरुगोबिंद सिंह जी के ये शब्द पर्व के मर्म को बखूबी समझाते हैं।

रंगों से आगे शौर्य व पराक्रम का भाव इन में स्पष्ट झलकता है। यहां के किला आनंदगढ़ में होली की मध्यरात्रि 12 बजकर 1 मिनट पर परंपरागत तरीके से नगाड़े बजाकर होला महल्ला का आगाज किया जाता है। यहां हर वर्ष इस तीन दिवसीय महापर्व में न केवल प्रदेश व देश के कोने–कोने से, बल्कि विदेश से भी लाखों श्रद्धालु पहुंचते हैं।

संत सिपाही श्री गुरुगोबिंद सिंह जी ने कहा था, 'चिड़ियन

ते मैं बाज लड़ाऊं... सवा लाख से एक लड़ाऊं.. तबै गोबिंद सिंह नाम कहलाऊं।' इसे सार्थक करने के लिए उन्होंने दलित–शोषित मानवता को प्रबल सैन्य–शक्ति में परिवर्तित करना शुरू कर दिया था। भले ही छठे गुरु हरगोबिंद साहिब के समय में ही सिख शस्त्र धारी बन गए थे, परंतु दशमेश पिता के काल में सिखों के सैन्यीकरण में बहुत ही तेजी आ गई थी। इसी शौर्य को युद्ध के अलावा भी प्रदर्शित करने का मौका उन्होंने अपनी लाडली फौज (निहंगसिहों) को होला महल्ला के जरिये 319 साल पहले दिया

था और तभी से यह भव्य पर्व मनाया जा रहा है।

होला महल्ला का अर्थ

होला महल्ला में 'होला' शब्द होली का 'खालसाई' भाषा में बोला जाने वाला रूप है, जबकि 'महल्ला' अरबी के शब्द 'मयहल्ला' यानी 'आक्रमण' का क्षेत्रीय तद्‌भव रूप है। अर्थात होला–महल्ला का अर्थ हुआ– होली के अवसर पर आक्रमण आदि युद्ध–कौशल का अभ्यास।

विभिन्न आकर्षण

श्री आनंदपुर साहिब शहर की लगभग सभी इमारतें सफेद रंग की हैं, इसीलिए इस शहर को 'व्हाइट सिटी' भी कहा जाता है। रंगों के पर्व पर इस व्हाइट सिटी का दृष्य देखते ही बनता है क्योंकि इस दौरान खालसा के प्रतीक नीला व केसरी रंग मेले में हर ओर दिखाई देते है और साथ ही हवा में उड़ता रंग–बिरंगा गुलाल माहौल को और आकर्षक बना देता है। गुलाल से रंगे चेहरों के अलावा नगर कीर्तन में शामिल होने वाले घोड़ों व ऊंटों को भी रंग–बिरंगे 'फुम्मनों' व झालरों से सजाया जाता है, जो मौके को और मनमोहक बना देते हैं।

भव्य नगर कीर्तन

खालसा पंथ के हर कार्य को शुरू करने से पहले नगाड़ा बजाने की परंपरा सदियों से रही है। दशमेश गुरु ने किला आनंदगढ़ साहिब में रणजीत नगाड़ा बजाकर इस रिवाज को

शुरू किया था। नगाड़ा शौर्य व सतर्कता का प्रतीक है। औरंगजेब के समय में जब मुगल सेनाएं व उसके बाद अंग्रेज सेनाएं हमला करती थीं, तो नगाड़ा बजाकर सिख सेनाओं को सतर्क किया जाता था।

उस वक्त किला आनंदगढ़ साहिब सहित किला हौलगढ़ साहिब, किला तारापुर साहिब, किला लोहगढ़ साहिब व किला फतेहगढ़ साहिब के अलावा निगरान चौकी निरमोहगढ़ बूंगा साहिब में एक साथ नगाड़े गूंजा करते थे। होला महल्ला के दौरान भी नगाड़े की चोट पर 'बोले सो निहाल' और 'सत श्री अकाल' के जयकारे गूंजते हैं और तभी नगर कीर्तन की शुरूआत होती है।

इस नगर कीर्तन को महल्ला चढ़ना कहते हैं। गुरु के पांच प्यारे अरदासा सोध कर आनंदपुर किले से 'निशान साहिब' लेकर चढ़ते हैं। साथ निहंग सिंह शस्त्र–धारण कर घोड़ों व हाथियों पर सवार होते हैं। आनंदगढ़ से चला यह नगर–कीर्तन माता जीतो जी के देहरे, किला होलगढ़ से होता हुआ 'चरण गंगा' पार कर मैदान में पहुंचता है।

यहां एक युद्ध अभ्यास के रूप में 'सिख सेनाएं' अपने युद्ध कौशल का प्रदर्शन करती हैं। कहीं दो से चार घोड़ों की पीठ पर एक घुड़–सवार संतुलन व प्रतिभा का अद्भुत जौहर दिखाता है तो कहीं गतका खेलते युवा अपने हुनर व साहस से दर्शकों को दांतों तले उंगलियां दबाने पर मजबूर कर देते हैं। अजब–गजब करतबों के बीच यह पर्व एक अनोखा, अलौकिक नजारा प्रस्तुत करता है।

विभिन्न आकर्षण

बाद दोपहर यह नगर–कीर्तन तख्त श्री केसगढ़ साहिब की ओर चलता है। यहां पहुंचकर इसकी समाप्ति होती है, दीवान सजाए जाते हैं, गुरबाणी कीर्तन होता है और अरदास होती है। आनंदपुर साहिब का होला महल्ला सिखों को शस्त्र–संचालन में प्रवीणता के लिए प्रेरित करता है और याद दिलाता है कि इनसे मानवता, देश एवं धर्म की रक्षा करनी है।

होला महल्ला की शुरूआत

गुरुगोबिंद सिंह जी ने पहला होला–महल्ला चौत्र प्रतिपदा सम्वत् 1757 यानि सन् 1700 ई. में किला होलगढ़ में मनाया था। इसमें उन्होंने सिख सेना के दो दल बनाए और उनके बीच

बनावटी युद्ध करवाया। यह आयोजन होली से अगले दिन हुआ और तभी से यह परंपरा चली आ रही है। विजेता दल को दीवान में पुरस्कार–स्वरूप सिरोपा भेंट किया जाता था।

दीवान में गुरबाणी का पाठ होता और कड़ाह–प्रसाद और गुरु का लंगर वितरित किया जाता। इस प्रकार गुरुगोबिंद सिंह जी ने होला महल्ला पर्व के माध्यम से सिखों को 'कीरत' के जरिए बदी पर नेकी की जीत का गुर सिखाते हुए युद्ध–कौशल के प्रदर्शन को भी होली के उल्लास में शामिल कर लिया और मानवता की रक्षा की प्रेरणा भरने का पक्का प्रबंध कर दिया।

रोजाना दस क्विंटल देग

होला मोहल्ला को लेकर पंजाब ही नहीं पूरी दुनिया की संगत में उत्साह है। होला महल्ला के दिनों में तख्त श्री केसगढ़ साहिब में ही रोजाना करीब आठ से दस क्विंटल की देग (कड़ाह प्रसाद) तैयार की जाती है। तख्त श्री केसगढ़ साहिब में तड़के से ही संगतों का आगमन शुरू हो जाता है।

शरदई और सुख निधान

गुरु द्वारा शहीदी बाग में शरदई और सुख निधान आकर्षण का केंद्र होते हैं। यह बादाम, खसखस, इलाइची पीसकर मीठे दूध में बनाई जाती है। इसकी छबील होला महल्ला के दौरान निरंतर चलती रहती है। सुखनिधान में उपरोक्त चीजों के साथ भांग भी शामिल होती है। यह निहंग सिंहों का पसंदीदा पेय है। कहा जाता है कि जब गुरु की लाडली फौज जंग में थककर लौटती और घायल भी होती तो यह पेय उन्हें राहत दिलाता था। तभी से इसकी परंपरा चली आ रही है।

बैंक की प्रमुख चुनौती एनपीए का प्रबंधन

वर्तमान में बैंकिंग उद्योग के सामने सबसे प्रमुख समस्या एनपीए है। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार एनपीए की पहचान के लिए मार्च 31, 2014 से यह नियम बनाया गया है कि यदि किसी मियादी ऋण पर एक वर्ष में एक तिमाही या 90 दिनों से अधिक होने के बावजूद भी इस राशि पर बैंक को ना तो ब्याज और ना ही मूलधन की किस्त अदा की गयी हो तो इस प्रकार का ऋण एनपीए कहलाता है। कृषि ऋणों के संबंध में किसी ऋण को एनपीए तब कहा जाता है जब ब्याज तथा मूलधन की किस्त का भुगतान, इसकी अदायगी कि तिथि के बाद दो फसलों तक नहीं हो सके।

भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार बैंकिंग क्षेत्र में कुल एनपीए एक लाख करोड़ से ज्यादा है और इसमें भी 90% एनपीए सिर्फ सरकारी बैंकों में ही है। इन आँकड़ों को नजर में रखकर एक अनुमान लगाया जा सकता है कि एनपीए की समस्या कितनी विकराल है। अतः एनपीए का उचित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है।

एनपीए रोकने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समय–समय पर विभिन्न दिशानिर्देश दिए जाते हैं। किसी भी ऋण को एनपीए होने से रोकने के लिए मुख्यतः तीन स्तरों पर कदम उठाए जा सकते हैं– ऋण–स्वीकृति से पहले, ऋण–स्वीकृति के बाद व खाता एनपीए होने से पहले तथा खाता एनपीए होने के बाद।

ऋण–स्वीकृति से पहले– एनपीए खातों में मुख्यतौर पर देखा गया है कि इन ऋणों की स्वीकृति ऋणदार की गहन जांच के बगैर की गई है। शाखा प्रभारी प्रतिस्पर्धा, वेतन–वृद्धि, लापरवाही, अज्ञानता व उच्च अधिकारियों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने की विवशता के चलते अनुचित ऋण स्वीकृत कर देता है, जिसका परिणाम इन खातों के एनपीए में बदलकर सामने आता है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि ऋण देने वाला अधिकारी योग्य हो व अनुकूल माहौल में फैसले ले सके। उच्च अधिकारियों द्वारा ऋण अधिकारी को पूर्ण सहयोग प्राप्त हो। ऋण देने वाले अधिकारी का ईमानदार होना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा वह उचित फैसले नहीं लेगा। बैंकों द्वारा ऐसी प्रणाली विकसित करनी होगी जिससे बेईमान बैंक अधिकारियों को पकड़ा जा सके।

ऋण–स्वीकृति के बाद व खाता एनपीए होने से पहले– ऋण स्वीकृति के बाद बैंक अधिकारी ऋण खाते में होने वाले लेनदेन की जाँच करके यदि कुछ लेनदेन व्यवहार के विपरीत पाए जैसे कि खाते का बार–बार अतिदेय होना, प्रविष्टियों को घुमाना इत्यादि से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि ऋणदार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। खातेदार की अन्य गतिविधियाँ जैसे उसका बैंक से बार–बार नए ऋण के लिए अनुरोध करना, ऋण–सीमा बढ़ाने का अनुरोध इत्यादि भी उसकी आर्थिक स्थिति के बारे में संकेत करते हैं। इस तरह की अवस्था में बैंक द्वारा समय रहते वसूली का दबाव बनाया जा सकता है व जरूरत से ज्यादा ऋण देने से बचा जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार जोखिम खातों को एस.एम.ए 0,1,2 में वर्गीकृत किया गया है। एस.एम.ए वे खाते हैं जिनमें ब्याज में मूलधन कि राशि 30 दिन तक बकाया है, एस.एम.ए 1 में राशि 31 से 60 व एस.एम.ए 2 में 61 से 90 दिन तक बकाया है। एस.एम.ए खातों का सही तरीके से फॉलोअप करके व जरूरत के अनुसार कदम उठाकर खातों को एनपीए होने से रोका जा सकता है।

खातों के एनपीए होने के बाद– भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देशों के अनुसार सब स्टैंडर्ड खातों में सुरक्षित भाग के लिए 15% व असुरक्षित भाग के लिए 25% की प्रोविजनिंग करनी पड़ती है। संदिग्ध खातों में सुरक्षित भाग के लिए 40% व असुरक्षित भाग के लिए 100% व लॉस खातों में सभी खातों के लिए 100% की प्रोविजनिंग की जाती है। वसूली के लिए सरकार

द्वारा समय–समय पर नए–नए नियम बनाए जाते हैं। विभिन्न न्यायालय, अधिकरण, मंचों का गठन मुख्यतः बैंक वसूली के लिए किया जाता है। ऐसे ही लोक अदालतों के माध्यम से बैंक वसूली कर सकते हैं।

आई.बी.सी. 2016– आई.बी.सी. 2016 को भारत सरकार द्वारा 2016 में पास किया गया जिसके अंतर्गत एनपीए अधिकरण की स्थापना की गई। अब बैंक किसी भी कम्पनी या फर्म का ओवरड्यू एक लाख से ज्यादा हो व किसी व्यक्ति का दस हजार से ज्यादा तो एन.सी.एल.टी. में इनके खिलाफ वसूली की अर्जी दी जा सकती है। 2016 से अब तक 90000 से ज्यादा वादों का निपटारा एन.सी.एल.टी. द्वारा किया गया है।

सरफेसी अधिनियम 2002– सुरक्षित सम्पत्तियों के जल्द निष्पादन के लिए सरफेसी अधिनियम 2002 एक ऐसा साधन है जिससे बैंक एनपीए खातों में बहुत जल्दी से वसूली कर सकते हैं। सरफेसी अधिनियम से ऋणदारों पर काफी दबाव बनाया जा सकता है।

डी.आर.टी. 1993– 20 लाख से ऊपर के एनपीए खातों की वसूली के लिए डी.आर.टी. में वाद दायर किया जा सकता है। डी.आर.टी. की स्थापना सिर्फ बैंक वसूली के वादों के लिए की गई थी। अतः डी.आर.टी. में सिविल न्यायालय की अपेक्षा जल्द फैसला हो जाता है।

सिविल न्यायालय– 20 लाख से नीचे की वसूली के लिए सिविल न्यायालय में अर्जी लगाई जा सकती है।

लोक अदालत– एनपीए खातों को छूट का प्रलोभन देकर लोक अदालत में निपटाया जा सकता है। लोक अदालत में हुए समझौते से यदि ऋणदार पीछे हटता है तो अदालतों में बिना वाद दायर किए वसूली प्रक्रिया शुरू की जा सकती है।

लुभावने ओ.टी.एस. जारी करके– विभिन्न एनपीए खाते जहां बैंक के पास कोई प्रतिभूति नहीं है और यद्यपि है भी तो बहुत कम कीमत की है, इन खातों को विशेष छूट देकर निपटाया जा सकता है। ऋणदार भी विशेष छूट मिलने पर एनपीए खातों को जल्दी बंद करवाने की कोशिश करता है।

अतः ऊपरलिखित माध्यमों से एनपीए की समस्या को काफी हद तक काबू किया जा सकता है। हालांकि बैंक का व्यवसाय ही ऋण देकर ब्याज अर्जन करना है। अतः इस व्यवसाय में ब्याज व ऋण मूलधन की हानि का खतरा रहता ही है व कई बार बाजार के उतार–चढ़ाव, सरकारी फैसलों व बिना सोची हुई आपदा के आने से भी एनपीए बढ़ जाता है, जिसे रोकना बहुत मुश्किल है।

पंकज वालिया
विधि अधिकारी
मंडल कार्यालय, जालंधर पूर्व

माँ चोटिला

अंशुप्रसाद
प्रबंधक
पीएलपी रेम, हल्दानी

"नमस्कार चामुंडा माता। तीनों लोक मई मई विख्याता।।
चोटिला मई पवित्रा धाम है। महाशक्ति तुमको प्रणाम है।"

गुजरात के प्रमुख धार्मिक स्थलों में माँ चामुंडादेवी का मंदिर प्रसिद्ध है। सौराष्ट्र क्षेत्र के सुरेन्द्र नगर जिले के अंतर्गत चोटिला नामक गाँव में 1250 फीट की ऊंचाई पे स्थित माँ चामुंडा का यह आलोकिक मंदिर विध्यमान है। मंदिर में पहुचने के लिए श्रद्धालुओं को 700 के करीब सीडियाँ चढ़नी होती हैं। यहाँ का नजदीकी हवाई अड्डा राजकोट में है। राजकोट से मंदिर की दूरी 60 कि. मी. व अहमदाबाद से 170 कि. मी. है। यह मंदिर मार्ग एनएच 8 ए पर आता है।

चोटिला पर्वत पर विराजमान देवी चामुंडा के मंदिर के निर्माण के पीछे पौराणिक कथा है– कई वर्ष पूर्व यहाँ के पुजारी के स्वप्न में माँ चामुंडा आई व चोटिला पर्वत पर अपने स्थान के बारे में कहा। जब पुजारी समेत अन्य लोग पर्वत पर माँ के स्थान को खोजने गए तो उन्हें माँ चामुंडा के साक्षात दर्शन हुए। तभी से यहाँ माँ के भवन का निर्माण शुरू हुआ।

माँ चामुंडा शक्ति और संहार की देवी है, वह तो स्यंभू है। पर्वत पर बनी त्रिशूलधारी माँ शब्द की प्रतिमा दूर से ही दिखाई पड़ती है जिसे देख ऐसा प्रतीत होता है मानो सिंह पर बैठी माँ पहाड़ की चोटी से अपने भक्तों को आशीर्वाद दे रही हो और भक्तों के संकट दूर करने के लिए हाथ में त्रिशूल धारण किए हो। माँ चामुंडा कल्याणकारी व रक्षा करने वाली है। इस अद्भुत दृश्य को देखकर आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति होती है।

दुर्गा शप्तशती के अनुसार –

'पृथ्वी पर जब अत्याचार बढ़ने लगे तब देवताओं ने माँ दुर्गा की आराधना की। माँ ने वरदान दिया की वह देत्यों से उनकी रक्षा करेगीं। माता ने महाकाली रूप धारण कर चंड–मुंड दानवों का वध किया। उनका संहार करने के कारण माँ का नाम चामुंडा पड़ गया।

"पापियों का कर दिया निस्तारा। चंड-मुंड दोनों को मारा।।
हाथ मई मस्तक ले मुस्काई। पापी सेना फिर घबराई।।
सरस्वती माँ तुम्हें पुकारा। पड़ा चामुंडा नाम तिहारा।।"

यहाँ नवरात्रि का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। मंदिर परिसर में नवरात्रों में विशेष पूजा, हवन व गरबा का आयोजन किया जाता है। मंदिर का वातावरण सुगंधित और मनमोहक हो जाता है, आरती के दौरान स्वयं माँ की अनुभूति होती है। दूर–दूर से भक्त यहाँ माता की झलक पाने व अपनी फरियादें लिए पैदल चल कर आते हैं व घंटों कतार में खड़े रहते हैं। बदले में माँ सबकी झोलियाँ खुशियों से भर देती है।

"सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके,
शरण्ये न त्रयंबिके गौरीनारायणी नमोस्तुते"।।

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अतिथि घर, भोजनालाय, फ्री पार्किंग, पेयजल की भी सुविधा है। माता का आशीर्वाद पाने के लिए यहाँ हर मौसम में भक्त आते रहते हैं। और माँ के दर्शन पाकर सबकी यात्रा शुभ और मंगलमय हो जाती है।

'शरणागत को शक्ति दो, हे जग की आधार।
ये नैया दौलती कर दो भव से पार"।।

माफी

रसायन विभाग प्रमुख संजीव अपने घर से कॉलेज सही समय पर पहुँच जाते हैं, सेकंड ग्रेड की नौकरी और समय से मिलने वाली अनायास छूटियाँ और भला एक इंसान को और क्या चाहिए।

व्यक्तिगत केबिन और किसी भी प्रकार की जरूरत के लिए व्यक्तिगत सहायक!!

संजीव की तो मौज थी। साथ ही संजीव अपने काम के प्रति बहुत जिम्मेदार था। और हो भी क्यों न..आखिर ये उसके सपनों की नौकरी जो थी। पर संजीव शुरू से इतना समझदार नहीं था।

आज सुबह उसका पहला दिन था अपने विभाग में, लोगों से परिचय करते वक्त उसे एक जाने पहचाने सूरत से रूबरू होना पड़ा।

"कॉलेज के पहले दिन आपका स्वागत है सर" हाथ में फूल का गुलदस्ता लिए वो इंसान संजीव का स्वागत कर रहा था।

देखते ही देखते अतीत की कुछ धूममल सी यादें उस चेहरे को देखते ही ताजा हो गयी।

अपने कॉलेज के दिनों में संजीव बहुत शरारती हुआ करता था। हर महीने किसी न किसी शरारत की वजह से उसकी क्लास लगती ही रहती थी।

ऐसे ही एक दिन रसायन विज्ञान की प्रयोगशाला में, वो और उसके कुछ दोस्त मिलकर कुछ प्रयोग कर रहे थे। पर क्लास के तय समय में काम खत्म करना संभव नहीं था अतः क्लास के खत्म होने पर उन्होंने चुपके से अंदर जाकर प्रयोगशाला का दरवाजा खोला और सभी मिलकर काम खत्म करने में जुट गए।

काम को खत्म करने के बाद वापिस जाते हुए उन्हें अंदाजा भी नहीं था कि ऐसा हो जाएगा...! जाने की जल्दी में वो लोग प्रयोगशाला में बर्नर खुला छोड़ आये, जिसकी वजह से प्रयोगशाला में आग लग गयी।

श्रीमान के पूछने पर कि ऐसा किसने किया, संजीव में यह बात बताने की हिम्मत नहीं हुई। उसे ड़र था कि कहीं इसकी वजह से उसे कॉलेज से न निकाल दिया जाए।

उसकी इस भूल का खामियाजा प्रयोगशाला के अटेंडेंट को चुकाना पड़ा। उसे कॉलेज से निलंबित कर दिया गया और दूसरी जगह स्थानांतरण कर दिया गया।

अपनी इस भूल का संजीव को बेहद अफसोस हुआ, उसने अपनी इस भूल कि माफी मांगनी चाही पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। बस उस दिन से संजीव काफी समझदार और जिम्मेदार हो गया।

"आज जब इतने सालों बाद उसने उस व्यक्ति को देखा, जिसके निलंबित होने का कारण वो खुद को मानता आ रहा था"।

लगा कि आज ही उससे माफी मांग ले, पर शायद उसका पद और अपनी गलती सामने आने के ड़र ने उसे यह करने नहीं दिया। लेकिन धीरे–धीरे यह ड़र उस पर हावी होता जा रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर वो क्या करे।

एक दिन किसी महत्वपूर्ण काम के चलते उसे दफ्तर में देर तक रुकना पड़ा। काम खत्म होते शाम के 7 बज चुके थे।

वापिस घर के लिए निकलते वक्त उसने उस अटेंडेंट को देखा। समान्यतः वह 5:15 बजे ही चला जाता था क्योकि 5:40 बजे उसकी ट्रेन होती थी।

संजीव : आप घर नहीं गये...?

अटेंडर : नहीं सर मैं आपके जाने का इंतजार कर रहा था।

संजीव को यह बात अच्छी नहीं लगी, क्योंकि उसकी वजह से उसकी ट्रेन छुट चुकी थी।

संजीव : चलिए मैं आपको घर छोड़ देता हूँ।

अटेंडर : नहीं सर मैं चला जाऊंगा।

संजीव के थोड़ा जोर देने पर वह मान गया।

कुछ देर औपचारिक संवाद के बाद बातों ही बातों में उसके निलंबन और स्थानांतरण के बारे में जानना चाहा। जो कि उसे पहले से पता था। अटेंडर की पूरी कहानी सुनने के बाद संजीव ने पूछा "किसी और की गलती पर क्या आपने उसे क्षमा कर दिया है..?

अटेंडर ने कहा " गलतियाँ करना और गलतियाँ हो जाना दोनों अलग अलग चीजे होती हैं। अगर उस बच्चे को अपनी गलती का एहसास हो गया होगा तो वह एक जिम्मेदार और समझदार व्यक्ति बन गया होगा। और अगर ऐसा हुआ होगा तो मैं उसके लिए बेहद प्रसन्न हूँ।

उसके मुंह से ऐसा जवाब सुनकर संजीव के अंदर चल रही सारी कश्मकश समाप्त हो गयी। अपने लिए इस तरह के जवाब सुनकर वो खुद को कश्मकश से बिल्कुल ही आजाद महसूस कर रहा था।

अनिल कुमार शिवमुनी पाल
एस.डब्लू.ओ-बी
लालगेट, सूरत

मैली कमीज

दरवाजे पर दस्तक हुई और माँ ने रसोई से ही सोहन को आवाज लगते हुए कहा –" बेटा दरवाजा खोल दो, पिताजी आए हैं"।

दरवाजे के खुलते हीं सोहन पिताजी की ओर बढ़ा और उनके हाथ से दफ्तर का सूटकेस और लंच बॉक्स अपने हाथ में लेते हुए कहा – "क्या पिताजी? आज फिर मैले कपड़े?"

सोहन का यह वक्तव्य अभी समाप्त भी नहीं हुआ होगा की रसोई से माँ अपने गीले हाथों को अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछती हुई दरवाजे की ओर बढ़ी और पिताजी को इस अवस्था में देखते ही बोली – "अजी आज फिर से मैले कपड़े? मैं तो तंग आ गई हूँ आपसे, कहने के लिए कंपनी के मैनेजर हो, पर क्या केबिन से निकलकर सीधा मजदूरी करने जाते हो?"

यह सुनकर सोहन के पिताजी मुस्कुराते हुए बाथरूम की ओर बढ़े और दरवाजा बंद करने के पहले माँ को चिढ़ाने वाले स्वर में बोले – "अरे अब छोड़ो भी भाग्यवान, और एक कप गरमा–गरम चाय पीला दो"।

इतना सुनते ही माँ का पारा और तेजी से ऊपर चढ़ा और फिर शुरू हो गया आकाशवाणी कानपुर केंद्र से संगीत माला श्रृंखला का एक और अध्याय।

दरअसल यह घटना हफ्ते में हर तीसरे दिन की थी और इससे परेशान होकर एक दिन सोहन ने अपने पिताजी से ये बात पूछ ही डाली – "पिताजी, क्या है ये सब? इतने मैले कपड़े आप कहाँ से लाते हो? मैं भी तो खेलने जाता हूँ, पर मेरे कपड़े तो इतने गंदे नहीं होते कभी... और क्या है ये, ये क्या लिखते रहते हो अपनी डायरी में, आपको जरा भी खबर है, मेरे बोर्ड की परीक्षा पास आ चुकी है?"

इस पर पिताजी ने उत्तर दिया– "मालूम है बेटा, मालूम है। मेरी मानो तो एक बात जरूर याद रखना – "चाहे तन कितना भी मैला हो जाए, मन मैला कभी न होने पाये"।

पिताजी की यह घुमावदार पहेली सोहन के बिलकुल पल्ले न पड़ी, और उसका मन इस रोजमर्रा के सवाल का उत्तर तलाशने के लिए नित एक नवसीखिए गोताखोर की भांपत, अपने मन में गोते लगाता है। यह सिलसिला कई वर्षों तक चलता रहा, और आखिरकार जीवन ने एक ऐसे पड़ाव पर कदम रखा, जहां इस आकाशवाणी के कार्यक्रम का अंत होने वाला था।

सोहन के पिताजी, अपने जीवन के आखरी समय में थे और इस समयान्तर में सोहन और उसके पिताजी के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हो चुका था। मृत्युशय्या पर लेटे अपने पिता के समीप बैठ कर सोहन ने कहा –" यूं तो बड़ी बड़ी बातें सिखाई हैं आपने, पर क्या जाते–जाते कुछ और नहीं सिखाओगे?

इतना सुनकर मंद मुस्कान लिए पिताजी बोले – "यार अब कुछ बोलने की ताकत तो नहीं बची, पर जो जिंदगी में सीखा है, उसे उस डायरी में लिख दिया है। कभी मौका मिले तो पढ़ लेना, पुरानी वाली अलमारी में रखी है।"

इतना कहकर पिताजी ने दुनिया से विदा लिया।

घर पर विलाप का माहौल बन चुका था और पिताजी के चाहने वालों का तांता लगना शुरू हो चुका था। कहने को तो घर का एकलौता बेटा सोहन ही था, पर उस दिन एकलौते बेटे वाली कोई भी जिम्मेदारी उसने नहीं निभाई। हर कोई इतना दुखी था मानो उनके घर का ही कोई अब नहीं रहा हो। कोई उनको सादे लिबास में लपेट रहा था, तो कोई उनको नहला रहा था, कोई उनकी अर्थी सजा रहा था, तो कोई नम आँखों से शवयात्रा की ऐसे तैयारी कर रहा था, जैसे वो कोई कसर ही न रहने दे। ये सब देखकर सोहन को बड़ा आश्चर्य हुआ, आखिर ऐसा क्या हुआ इन सबको जो ये इतने विचलित हो रहें हैं।

क्रिया–क्रम के पश्चात जब सोहन घर लौटा तो अपनी माँ को पिताजी की उसी मैली कमीज को हाथ में लेकर रोते देखा। यह सब देखकर सोहन सीधा कमरे में गया और पिताजी की डायरी निकालकर पढ़ने लगा।

डायरी के पन्ने जैसे–जैसे पलटते गए कहानी आईने की तरह साफ होती चली गयी।

दरअसल सोहन के पिताजी किसान के बेटे थे, पढ़ाई में अच्छा होने के कारण शहर आने पर नौकरी मिलने में ज्यादा जद्दोजहद नहीं करनी पड़ी, और कुछ ही सालों में कंपनी के मैनेजर बन गए। पर मन में हमेशा दूसरों की सेवा करने का मलाल रहता। अतः जब भी काम से मौका मिलता, निकल पड़ते किसी न किसी की सेवा करने। अब मालूम चला की क्यों पास के मिश्रा जी, जिनको शुरुआती दिनों में पिताजी हर रोज अपने घर पर खाने के लिए बुलाया करते थे, आज पूरे घर के लिए भोजन लेकर आए हैं। अब पता चला की पड़ोस के मदन जी, जिनकी नौकरी पिताजी ने ही लगवाई थी, आज उनके शव को किस तरह

सजा रहे थे। यहाँ तक की बगल के अब्दुल चाचा, जिनके चाय की दुकान चौराहे पर लगवाने लिए पिताजी पूरे मुहल्ले से लड़ गए थे, आज नम आँखों से उनकी अर्थी को कंधा देने सबसे पहले पहुंचे। तथा इस प्रकार की कई और घटनाएँ जिसकी वजह से सोहन की नजरों में उसके पिता के लिए इज्जत और अधिक बढ़ गयी थी।

अगले कुछ दिनों तक घर में रिश्तेदारों का मजमा लगता रहा तथा हर कोई सोहन के पिताजी के देहांत से गंभीर नजर आ रहा था।

हिन्दू रीति–रिवाज के अनुसार आज तेरहवें दिन, सोहन अपने पिता को अपने हांथों में लिए, उनकी स्मृतियाँ संजोए, मन ही मन उनसे बात करते हुए उनकी अर्थी को नदी में प्रवाहित कर रहा था। लौटते समय उसने वहाँ की कुछ मिट्टी अपने हाथों में ली, और अपनी कमीज को मैला कर लिया।

निखिल राज
अधिकारी
शाखा कार्यालय रिंग रोड, सूरत

नेत्रदान महादान

अर्चना कोचर
प्रबन्धक
मंडल कार्यालय, रोहतक

दीप में ज्योति जलें, राह में भरे उजास
उजास भरी राह को, कहें तमस सूरदास।

दुनिया सूरदास की आबाद करें, करके नेत्रदान
जीवन में उसके शाद भरें, करें जब जग से प्रस्थान।

सूरदास को दृष्टि मिली, मिला उसे दर्जा ईशान
मर कर भी जिंदा रहें, आँखें जिसकी देखें जहान।

दो नयन दृष्टि का आधार धरें, दृष्टि से जग गुलजार
दृष्टि को ना बेकार करें, करें नेत्रदान से तम उद्धार।

दानपात्र में दो नयन धरे, करें कर्म महान
देही अग्नि खाक करें, आँखें देखे जहान।

ज्योति का मान करें, करके ज्योति दान
अँधे को आँखें मिलें, प्राण पहुँचे शमशान।

अनुरोध

पीएनबी स्टाफ जर्नल/प्रतिभा के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं के बारे में यदि आप अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएंगे तो हम इसके लिए आपके आभारी होंगे। निःसंदेह इससे पत्रिका के आगामी अंकों को और सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण बनाने में हमें सहायता मिलेगी। आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका में सभी स्टाफ सदस्यों, उनके परिवारजनों तथा सेवानिवृत स्टाफ सदस्यों की रचनाएँ भी स्वीकार्य हैं। आप सभी के सहयोग से हम इस पत्रिका को एक पारिवारिक पत्रिका बनाने की ओर अग्रसर रहेंगे।

अंचल कार्यालयों में नियुक्त पीएनबी स्टाफ जर्नल के प्रतिनिधियों से अनुरोध है कि वे अपने संबंधित मंडल कार्यालयों में नियुक्त अधिकारियों से पत्रिका में प्रकाशन योग्य सामग्री एकत्रित करके ई-मेल pnbstaffjournal@pnb.co.in *पर या सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, द्वारका, नई दिल्ली को भिजवाना सुनिश्चित करें।*

पीएनबी प्रतिभा के आगामी दो अंक मानव संसाधन विशेषांक (अप्रैल-जून, 2021) व राजभाषा विशेषांक (जुलाई-सितम्बर, 2021) के रूप में प्रकाशित किए जाएंगे।

कोरोना वॉरियर

भरत ठाकुर
मुख्य प्रबंधक AEC-ITEC
अंचल कार्यालय, जोधपुर

भीमा रोज की तरह सुबह जल्दी उठ गया। वह अपने बच्चों के कमरे में गया। दोनों बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे। वह बच्चों के पास जाकर बैठ गया। उसने बच्चों को बड़े ध्यान से देखा। उसे एक लड़का और एक लड़की थी। दोनों गहरी नींद में सो रहे बच्चे किसी ऐन्जल के समान लग रहे थे। कुछ देर बाद उन्हें जी भर कर देखने के बाद, वह बच्चों से दूर हुआ और किचन की तरफ गया। वैसे वह कभी किचन की तरफ नहीं जाता, पर पता नहीं क्यों आज वह किचन में गया और जाते ही गैस पर चाय चढ़ा दी। उसने चाय–पत्ती और शक्कर जल्द ही ढूंढ ली। काफी टाइम के बाद उसे चाय बनाने का मौका मिल रहा था। शादी के बाद उसकी बीवी अंजना जैसे उसे घर का कुछ काम करने ही नहीं देती थी। भीमा ने चाय के दो कप बनाए और प्लेट में अपनी चाय लेकर अंजना के पास गया।

"उठो! अंजना!! वेक अप! आज चाय मेरी तरफ से!" भीमा ने प्यार से अंजना को पुकारा। अंजना एक ही पुकार में उठ गई।

"अरे देवा! आज आपने क्यों कष्ट किया! मुझसे कह देते! मैं बना देती आपके लिए चाय!" अंजना ने हड़बड़ी में उठते हुए कहा।

"अरे! जानु! कोई बात नहीं! आज चाय मेरी तरफ से! कभी–कभी मेरे हाथों का भी स्वाद लेकर देखो! शायद फिर समय मिले या न मिले!" भीमा ने कहा।

"कैसी बाते कर रहे हो? समय क्यों न मिलेगा जी! ऐसे बातें क्यों कर रहे हो? मैं तो आपके साथ ही हूँ!" अंजना ने जवाब दिया।

"मैं तो ऐसे ही कह रहा था। लो चाय पियो!" भीमा ने बात को टालते हुए कहा।

भीमा और अंजना ने बेड पर बैठ कर ही चाय पी। अंजना को अजीब लग रहा था पर उसे अच्छा भी लग रहा था। शादी के बाद पहली बार भीमा ने अपने हाथों से चाय बनाकर पिलाई। भीमा ने अपनी चाय खत्म की!

"कल शाम की न्यूज देखी थी!" भीमा ने पूछा।

"नहीं! कल तो मैं काम में इतनी बीजी थी की देख ही नहीं पाई! कुछ खास था क्या?"

"नहीं! ऐसे ही पूछ रहा था।"

"क्या बात है आज परेशान लग रहे हो!" अंजना ने पूछा।

"नहीं! परेशान और मैं! बिल्कुल नहीं!"

"तो क्या था न्यूज में! कोई बात थी क्या?"

"हाँ! मुख्यमंत्री साहब ने कल एक मेसेज दिया है!"

"कौन सा मेसेज?" अंजना अचरज में थी।

"यही की लॉकडाउन फिर से लागू हो रहा है। अभी शाम को लगेगा और अगली सुबह तक रहेगा। बाद में शायद.."

"शायद.. फिर क्या?"

"शायद फिर से पूरा लॉकडाउन हो!" भीमा ने कहा।

"क्या? वापस! पूरा लॉकडाउन" अंजना परेशान हो उठी।

"हाँ! कोरोना के केसेस बहुत बढ़ रहे है। और इस बार पहले से भी खतरनाक तरीके से बढ़ रहा है। इस बार बच्चों को भी ज्यादा हो रहा है।" भीमा ने कहा।

अंजना चुप हो गई। अंजना ने दीवार पर टंगी तस्वीर को देखा। भीमा के साथ उनका भाई किशन, दोनों की हँसती हुई तस्वीर लगी हुई थी। यह तस्वीर उन दिनों की है जब दोनों ने साथ में अपनी नौकरी को जॉइन किया था। किशन और भीमा, दोनों की ड्यूटी एक ही शहर में थी। पिछले साल किशन की ड्यूटी क्वारंटीन सेंटर में लगी हुई थी।

वहाँ पर लोग इतने लापरवाह थे की उन मरीजों को क्वारंटीन सेंटर किसी जेल की तरह लग रहा था। किशन ने रात दिन एक कर दिए। सभी को बार–बार समझाना उन्हें डांटना तो कभी उन्हें उत्साहित करना। सभी तरह के काम पूरी शिद्दत से किशन ने निभाए। जब थालियाँ बजी, जब दिए जले... किशन ने सभी मरीजों के साथ मिलकर इस कार्य को पूरा किया। कई बूढ़े कोरोना पॉजिटिव मरीज बहुत सीरियस थे, उन मरीजों के घरवालों ने भी उन्हें छोड़ दिया था। पर किशन ने एक नर्सिंग स्टाफ होते हुए भी उनका पूरे मन से ध्यान रखा। उन्हें उनकी इस गंभीर बीमारी से उबारा। वो हमेंशा कहता था कि 'लोग डॉक्टर में भगवान देखते है..और भगवान किसी का साथ नहीं छोड़ता'.... पर खुद इस बीमारी से लड़ते–लड़ते हार गया। आज किशन की तस्वीर पर चंदन का तिलक लगा हुआ है। कोरोना काल की ड्यूटी के दौरान किशन उसकी चपेट में आ गया और हमेंशा के लिए अपने परिवार को छोड़ कर चल गया।

"अंजना! कहाँ खो गई!" भीमा ने यकायक अंजना से पूछा।

"हम्म! यही हूँ! ऐसे ही किशन भैया की याद आ गई!" अंजना ने अपने नम होते हुए आँखों को किसी बांध की तरह रोका।

भीमा ने कुछ नहीं कहा। वह भी किशन की तस्वीर को देखने लग गया।

कुछ ही देर में वह नहा धोकर तैयार हो गया। उसने अपनी वर्दी पहन ली थी। बच्चे जाग गए थे। अंजना ने जानबूझकर जगा दिया था। वैसे भी ऑनलाइन क्लास आजकल लेट ही लगती थी। बच्चे भीमा के पास आए। एक बच्चे के पास मास्क था तो दूसरे के पास सेनीटाइजर की छोटी बोतल थी। दोनों ने अपने हाथों से भीमा को मास्क और सेनीटाइजर दिया। भीमा के चेहरे पर हल्की मुस्कान उभर आई। उसने प्यार से अंजना की ओर देखा। अंजना का हँसता हुआ चेहरा उसे अलग ही प्रेरणा दे रहा था। अंजना ने ही बच्चों के हाथों में मास्क और सेनीटाइजर दिया था।

"पापा! इस बार कोरोना को पूरी तरह खत्म कर देना!" बच्ची ने भीमा से पूरे जोश में कहा।

"हाँ! बेटा!! इस बार कोरोना को पूरी तरह खत्म कर देंगे! तुम और मैं.. और मम्मी.. हम .. सभी मिलकर खत्म कर देंगे।" भीमा के चेहरे पर एक अलग ही मुस्कान थी। उसने अपने चेहरे पर मास्क लगाया। उसने दोनों बच्चों की तरफ देखा। दोनों बच्चों में बच्ची किशन की थी। किशन के कोरोना पॉजिटिव आने से उसकी बीवी भी चपेट में आ गई थी। किशन के जाते ही वह भी कोरोना की वजह से जिंदा नहीं रह पाई। पीछे किशन के परिवार की निशानी के तौर पर सिर्फ यही बच्ची रह गई थी। भीमा ने भी उसकी परवरिश में कोई कमी नहीं छोड़ी। उसे अपने बच्चे से भी ज्यादा प्यार दिया। वहीं, बच्ची की आँखों में चमक थी। उसे विश्वास था की 'ये वाले पापा कोरोना को खत्म कर देगें।'

"पापा! कब आओगे!" भीमा के बच्चे ने पूछा।

"पापा! अब कोरोना को बुरी तरह हराकर ही आएंगे! पिछली बार की तरह..." बच्ची ने तुरंत जवाब दे दिया।

"बेटा! जल्दी ही आयेगें पापा! पिछली बार भी जीतकर आए थे और इस बार भी जीत कर ही आएंगे!" अंजना ने बच्ची की बात को काटते हुए कहा।

भीमा घर के बाहर गया। उसने आखिरी बार घर की तरफ देखा। दोनों बच्चे और अंजना दरवाजे की ओट पर ही खड़े थे। पिछली बार भी लॉकडाउन के समय भीमा घर के बाहर ही बैठकर खाना खाता था। उसने अपने परिवार से एक निश्चित दूरी बना ली थी। इस बार भी शायद यही करना पड़ेगा। भीमा यही सोचते हुए पुलिस स्टेशन के लिए निकाल पड़ा। पीछे से अंजना की आँखों में आँसू आ गए थे। अब वह बांध को ज्यादा देर रोक नहीं पाई।

रास्ते में भीमा ने लोगों को देखा। भीड़ में तादाद उन लोगों की ज्यादा थी जिन्होंने मास्क नहीं लगाया हुआ था। करीब–करीब सभी लोग सोशल डिस्टेंसिंग का मजाक उड़ा रहे थे।

जल्द ही भीमा अपनी बाइक से पुलिस स्टेशन पहुँच गया। उसके मित्र प्रशांत ने उसे बताया की साहब एक मीटिंग ले रहे है। दोनों जल्दी से कॉन्फ्रेंस रूम में पहुँच गए। कॉन्फ्रेंस चालू हो गई थी। चौकी इन चार्ज आठवले ने अपनी स्पीच देनी शुरू कर दी थी।

"न जाने कितने डॉक्टर! कितने पुलिसवालों ने अपनी जान गंवाई है.. पिछली कोरोना की लहर में! हम लोग कोरोना वॉरियर हैं! हमें लोगों को बार बार चेताना है। उन्हें समझाना है कि जीवन बहुत कीमती है। इस बार का कोरोना और ज्यादा घातक है। इस बार ये छोटे बच्चों पर भी घात लगा रहा है। अभी तो नाइट लॉकडाउन ही लगा है। पर ऐसे ही लोग लापरवाही करते रहे तो पूरा लॉक डाउन भी लग सकता है। इसलिए अपनी पूरी ताकत लगा दीजिए। एक बार फिर बता दीजिए कि हम लोगों की सेवा के लिए अपनी जान की बाजी भी लगा सकते हैं। सभी भीड़ भरे जगहों पर जाइए.. वहाँ लोगों को पाबंद कीजिए। दो गज की दूरी.. मास्क है जरूरी। पर ध्यान रहे कि हमें लोगों तक सही जानकारी पहुचानी है और एक बात का खास ख्याल रहे कि हमें भी कोरोना से बचकर रहना है। अगर हम में से कोई भी संक्रमित हो या उसे कोरोना के सिंपटम लगे तो तुरंत अपने आपको आइसोलेट कर ले! तो आओ एक बार फिर हम अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। अपनी ड्यूटी पर जाने से पहले आए हम अपने साथियों के लिए दो मिनट का मौन रखे जिन्हें हम पिछली कोरोना काल में खो चुके हैं और प्रण लें कि इस बार भी हम इसका डटकर सामना करेगे।" इतना कहकर चौकी इन चार्ज ने दो मिनट का मौन रखा।

भीमा और प्रशांत, दोनों ने किसी मार्केट का रुख किया जहां के लिए उन्हें अब ड्यूटी देनी थी। मार्केट बुरी तरह से लोगों से अटा पड़ा था। फिर भी भीमा और प्रशांत एक–एक के पास जा–जाकर लोगों को मास्क बाँट रहे थे और उन्हें सतर्क रहने का संदेश भी दे रहे थे। पर कुछ लोग तब भी बिना मास्क लगाए घूम रहे थे। उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि लोग उनकी बात मान क्यों नहीं रहे हैं? कुछ लोगों ने तो मास्क लेना ही बंद कर दिया।

"यार! ये लोग मास्क न तो पहन रहे है! और न ही हमसे ले रहे है! क्या करे अब! यहाँ तो लोगों को कोरोना का डर ही खत्म हो गया। अब इतने लोगों पर डंडा तो नहीं चला सकते हैं। इन्हें ही अपनी जान की फिकर नहीं है।" प्रशांत ने भीमा से कहा। भीमा ने कुछ सोचा। उसे जल्द ही एक आइडिया आया।

भीमा ने कोरोना का ड्रेस पहने हुए एक आदमी को बीचों बीच खड़ा कर दिया। कोरोना की सूट बड़ी थी और उसकी भयावह तरीके से आँखे लाल थी। भीमा ने अपने हाथ में एक माइक लिया। प्रशांत ने स्पीकर का और माइक का बंदोबस्त कर दिया था।

"भाइयों! ये कोरोना का वायरस फिर से हमारे बीच आ गया है। देखो पहले से भी कितना बड़ा हो गया है। ये हमें डरा रहा है। देखो कैसे घूर रहा है! इसकी आँखे कितनी भयावह है!"

पूरी भीड़ यकायक थम सी गई। उन्होंने ध्यान से देखा की वाकई एक कोरोना की बड़ी सी सूट पहने हुए एक आदमी उनके बीचों बीच खड़ा था। भीड़ अब भीमा की बात को ध्यान से सुन रही थी। भीमा ने कहना जारी रखा।

"क्या ये कोरोना हमसे इतना बड़ा है.. जिससे डरकर हम.. हम लोग मास्क पहने! हम लोग क्यों डिस्टेंस का पालन करे! हमें क्या है अगर हमारा अपना कोई खो जाए। कोई.. जिसके साथ हमने जीवन भर साथ चलने का वादा किया था! वह छोड़कर चला जाए! अपने माता–पिता, जिनकी उंगली पकड़कर हमने चलना सीखा था.. वह हमें छोड़कर चले जाएं! हमारे नन्हे बच्चे जिन्होंने हमारे हाथों में अपनी जिंदगी सुरक्षित महसूस की थी.. वे भी हमें छोड़कर चले जाए! हमें क्या फरक पड़ता है? किस बात का फरक पड़ता है हमें? हम मास्क नहीं पहनेंगे तो नहीं पहनेंगे! हम डिस्टेंसिंग का पालन नहीं करेंगे तो नहीं करेंगे! परिवार के लोग जाए तो जाए मेरी वजह से। आज मुझे कोरोना हो गया तो मेरी तो फिकर है ही नहीं मुझे! अब जिस परिवार के लिए मैं बिना काम इस मार्केट में घूम रहा हूँ उसकी भी परवाह नहीं रही मुझे!"

कुछ लोग अपने बच्चों के साथ थे। उन्होंने बच्चों की तरफ देखा। बच्चों ने अपने पापा को मास्क लगाने का इशारा किया। वहीं कुछ बुजुर्ग भी शर्मसार हुए जा रहे थे। उन्होंने जल्द से गमछा लपेट लिया। पर भीमा ने कहना जारी रखा।

"ये कोरोना क्या है? सिर्फ हल्की खांसी बुखार ही तो है! लेकिन हम बाहर आकर पानी पूरी की स्टॉल से लेकर सभी ठेलियों, रेस्टोरेन्ट जायेगे.. यहाँ वहाँ घूमेंगे पर मास्क का ध्यान नहीं रखेंगे। हम लोग इस वायरस से दबकर थोड़े ही न रहेंगे! हम लोग तो एक दूसरे के साथ ही चिपकते हुए चलेंगे ताकि हमें

वायरस लगे और हम जल्दी ही और लोगों को ये वायरस दान में दें दें। क्योंकि न तो हमें अपनी फिकर है और न ही अपने परिवार वालों की! तो क्या खाक हम दूसरों का ध्यान रखेंगे जो इस वक्त हमारे साथ चिपक कर खड़ा है! हमें मृत्यु से भी डर नहीं लगता!"

इतना कहते ही लोगों ने उचित दूरी बना ली! जैसे उन्हें आभास हो गया कि वे क्या गलती कर रहे थे।

"पर हम वायरस से डरते नहीं है! अब देखो न भाई.. हमारे साथ खड़े इन भाईसाहब को कोरोना है। पर हमने.. हमने इन्हें क्वारंटीन सेंटर भेजा ही नहीं! आपके पास खड़ा कर दिया। आओ भाइयों.. आओ ले लो अपना अपना कोरोना का गिफ्ट! और आ जाओ क्वारंटीन सेंटर में जहां का खाना किसी जेल की तरह स्वादिष्ट है! इसने ड्रेस पहना हुआ है पर मास्क नहीं!" इतना कहते ही कोरोना सूट पहने हुए व्यक्ति अब हिलने डुलने लगा। बच्चे तो डर से गए। पहले उन्हें कोरोना का सूट पहने हुए व्यक्ति किसी बड़े से खिलौने के समान लग रहा था। अब वह किसी डर की दुकान सा लग रहा था जहां कोरोना मुफ्त में बँट रहा हो! बड़े लोगों ने भी मास्क पहनना शुरू किया और उस कोरोना के सूट वाले से उचित दूरी बना ली। उन्हें समझ आ गया था कि कोरोना से उचित दूरी बनाकर तथा मास्क पहन कर ही जीता जा सकता है।

पर फिर भी कुछ लोग अब भी ढीठ बने हुए थे। भीमा ने प्रशांत को देखा और आँख मारी। प्रशांत ने फोन घुमाया। जल्द ही दनदनाती एम्बुलेंस कि सायरन बजने लगी। भीड़ को जैसे पता ही नहीं चल रहा था कि हो क्या रहा है? भीमा ने माइक दुबारा उठाया।

"प्रशांत ये पीली शर्ट वाले ने अब भी मास्क नहीं पहना है! इसने ठान लिया है की वह कोरोना को आत्मसात करके रहेगा। एक काम करो इसका काम आसान कर देते है। एम्बुलेंस में बैठे हुए कोरोना के मरीज को नई प्रकार के कोरोना के वेरिएन्ट ने झकड़ा हुआ है! उसको बाहर निकालो और इनसे गले मिलवाओ! और हाँ वो पीली शर्ट के पीछे जो लाल शर्ट में टोपी लगाकर खड़े है न भाई साहब इनको भी ले लो! इन दोनों को हम नए प्रकार के वेरिएन्ट से मिलाते हैं जिनसे साँस भी ऑक्सीजन मास्क के बगैर ले नहीं सकते! इन्हे अब कपड़े का मास्क प्यार नहीं है! इन्हे तो ऑक्सीजन वाला मास्क चाहिए! बहुत ट्रेंडी है ऑक्सीजन वाला मास्क!"

एम्बुलेंस से ऑक्सीजन सिलेन्डर के साथ ऑक्सीजन का मास्क लगाते हुए एक दुबला पतला व्यक्ति निकला! जिसके बाल बुरी तरह उलझे हुए थे। दिखने में वो वाकई किसी कोरोना मरीज की तरह लग रहा था। प्रशांत जैसे ही पीले और लाल शर्ट वाले के पास पहुंचा! दोनों ने जट से मास्क लगा दिए और उलटे पाँव वहाँ से भाग खड़े हुए! देखते ही देखते जो बाकी लोग बचे तो जिन्होंने मास्क नहीं लगाया था उन्होंने भी मास्क लगा दिया। जल्द ही भीड़ लगभग–लगभग कम हो गई थी। बाकी लोगों ने सोशल डिस्टेंसिग का अच्छे से पालन किया। लोगों ने भीमा के मेसेज को समझ लिया था।

"यार! तू ये आइडिया कहाँ से लाता है?" प्रशांत ने पूछा।

"जब सीधी उंगली से घी ना निकले तब उंगली को टेढ़ा करना पड़ता है।" भीमा ने कहा।

इतने वो एम्बुलेंस से उतरा हुआ मरीज बोल पड़ा।

"सर! अब जाऊँ मैं... वो पाटील साहब दूसरे मार्केट में समझा रहे हैं तो वहाँ भी बुलाया है!"

"जाओ! विट्ठल! पर तेरी गेटअप शानदार था!" भीमा ने कहा।

"वो सर! टीवी–फिल्म सब बंद हो गए है! हम जैसे जूनियर आर्टिस्ट के पास काम कहाँ है! चलो सर चलता हूँ!" इतना कहते ही वह एम्बुलेंस की तरफ मुड़ा ही था कि उसके कानों में आवाज आई।

"अरे! मैं भी आता हूँ!" कोरोना की ड्रेस पहना हुआ व्यक्ति बोल पड़ा।

"अरे! तू जॉनी! तू भी इधर है क्या?"

"यार काम ही नहीं है आजकल फिल्म वालों के पास!"

"चल आ जा मेरे साथ! डर के आगे ही जीत है!" विट्ठल ने कहा।

इतना कहते ही दोनों साथ में उसी एम्बुलेंस में बैठकर चले गए।

"मास्क पहने और दो गज की दूरी बनाए रखे! यही संदेश देने मैं आया हूँ! मैंने भी अपनो को खोया है इस कोरोना की बीमारी से! नहीं चाहता कि कोई और भी खोए अपने अपनों को!" भीमा ने माइक से आखिरी शब्द निकाले और प्रशांत के साथ उस मार्केट से निकल कर दूसरे मार्केट की तरफ चला गया।

महात्मा बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता

लक्ष्मी मीना
राजभाषा अधिकारी
मंडल कार्यालय, कपूरथला

भारत भूमि प्राचीनकाल से ही महापुरुषों एवं वीरों की भूमि रही है। ऐसे महापुरुष और वीरपुरुष जिन्होनें अपने जीवन के महान कार्यों से समस्त मनुष्यों को जीवन से संबन्धित नई राह दिखाई। ऐसी राह जो मनुष्य के जीवन का कल्याण करने वाली हो। ऐसे वीर और महापुरुष भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। और उनके द्वारा दिये गए विचार/उपदेश न सिर्फ प्राचीनकाल में अपितु आधुनिक समय में भी प्रासंगिक बने हुये हैं। ऐसे ही अनेक महापुरुषों में एक महापुरुष महात्मा बुद्ध हुये जिन्होनें अपने जीवन में मोह–माया को त्याग कर सत्य का बोध किया और फिर मानव जाति को सही राह दिखाने के लिए निकल पड़े।

महात्मा बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता पर विचार करने से पहले उनके जीवन का एक संक्षिप्त जीवनवृत्त जान लेना चाहिए। गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. लुम्बिनी नामक स्थान पर वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। उनका प्रारम्भिक नाम सिद्धार्थ था। उनकी माता का नाम महामाया था और पिता राजा शुद्धोधन थे। सिद्धार्थ का विवाह यशोधरा के साथ हुआ। विवाह के बाद 6 वर्षों तक भी वह तपस्या में लीन थे। 16 साल बाद उनके एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम राहुल था। लेकिन एक दिन अचानक सिद्धार्थ रात्रि में घर छोड़कर चले गए।

6 साल बाद जब सिद्धार्थ ज्ञान प्राप्त करके घर आए तो वह बुद्ध के रूप में आए। उन्हें ज्ञान भी वैशाख पुर्णिमा के दिन 528 ई.पू. बोध गया में पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुये प्राप्त हुआ। बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद लोगों को उपदेश देना शुरू किया जिसे बुद्ध के अनुयायी "संबोधि" कहते हैं। धीरे–धीरे उनके उपदेशों को सुनकर लोग उनके शिष्य बनने लगे और ये शिष्य, बुद्ध जो उपदेश देते उसे लिखते जाते और उनके उपदेशों को संहिताबद्ध कर दिया। इन उपदेशों/शिक्षाओं को पिटक के नाम से जाना जाता है, जिसे तीन भागों में होने के कारण त्रिपिटक कहा जाता है:–

विनय पिटक– बौद्ध मतांवलंबियों के लिए व्यवस्था
सुत्त पिटक– बुद्ध के उपदेश सिद्धान्त
अभिधम्म पिटक – बौद्ध दर्शन (तीनों की भाषा पाली है)

जब महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ तो उन्होनें मानव जाति का हित करने का विचार बनाया और इसी उद्देश्य से उन्होनें धर्म प्रचार का निश्चय किया, जिसे धर्म चक्र परिवर्तन कहा जाता है। धर्म प्रचार का पहला उपदेश उन्होनें सारनाथ के 5 ब्राह्मणों को दिया और वैशाख पुर्णिमा के दिन ही 483 ई.पू. कुशीनगर नामक स्थान पर महात्मा बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ।

आरंभिक काल से ही यदि हम देखें तो पाएंगे की राजा अशोक ने अपने जीवन में बौद्ध धर्म अपनाया था। वहीं मध्यकाल में कबीर के विचारों में भी बौद्ध धर्म की छाप दिखाई पड़ती है। डॉ. अंबेडकर ने भी अपने जीवन के अंतिम समय से पूर्व बौद्ध धर्म अपना लिया था। आज विश्व में बौद्ध धर्म अपनाने वालों की संख्या लगभग 500 मिलियन है। आज बौद्ध धर्म किसी एक जगह पर सीमित ना रहकर विश्व के विभिन्न भाग जैसे श्रीलंका, कंबोडिया, चीन, म्यांमार, थाइलैंड और भारत में भी जगह–जगह फैला हुआ है। बुद्ध की मृत्यु के लगभग 2500 वर्षों बाद भी न सिर्फ उनकी शिक्षाएं/उपदेश जीवित हैं अपितु उस धर्म को अपनाने वाला एक वर्ग भी जीवित है। यह स्वंय ही विचारणीय

हो जाता है कि आखिरकार उनके उपदेशों में ऐसी क्या खास बात थी?

बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता पर विचार करें तो उनका सबसे मत्वपूर्ण विचार है "आत्म दीपो भव" यानि "अपना दीपक स्वंय बनो" है। बुद्ध कहते हैं कि व्यक्ति को अपने जीवन में क्या करना है इसका फैसला स्वंय लेना चाहिए। जैसे की आज का समय भाग–दौड़ भरा है। आजकल लोगों को दूसरों की तो छोड़ो खुद का भी सोचने के लिए समय नहीं है। आजकल स्कूल, कॉलेज, ऑफिस सभी जगह व्यस्तता है। यदि किसी व्यक्ति को कोई कार्य करना है तो उसके पास सोचने तक का समय नहीं है और वह दूसरों से सलाह लेकर उसके दूरगामी परिणाम पर विचार नहीं करता है और उस सलाह को अपना लेता है। यहाँ बुद्ध का "आत्म दीपो भव" विचार स्वतः ही प्रासंगिक हो जाता है कि व्यक्ति को अपने जीवन में नैतिक–अनैतिक का फैसला स्वयं को करना चाहिए। महान अंग्रेज विचारक ने कहा है कि चाहे किसी व्यक्ति के विचार समाज में खड़े किसी भी व्यक्ति के विचारों से ना मिलें, तब भी उसे अपनी बात कहने का मौका दिया जाना चाहिए, क्योंकि किसी भी विचार कि उत्पत्ति पहली बार ऐसे ही होती है। जो भी समाज या देश नए विचारों का सम्मान नहीं करेगा वह कभी सफलता की राह पर आगे नहीं बढ़ पाएगा।

जैसा आजकल का दौर है कि पढ़ाई में बच्चे मेरिट लिस्ट में आने की भेड़ चाल में आँख बंद करके दौड़ते रहते हैं और ऐसे में प्रत्येक माँ–बाप अपने बच्चों से भी यही उम्मीद करता है, लेकिन बच्चे की इच्छा क्या है यह जानने में कभी रुचि नहीं दिखाते हैं जबकि सभी की अपनी कुछ सृजनात्मक क्षमताएं होती हैं। हमें ऐसी क्षमताओं को पहचानना चाहिए, उन्हें आगे आकर अपनी बात रखने का मौका देना चाहिए, उन्हें बढ़ावा देना चाहिए। हम तभी विकास के रास्ते पर आगे बढ़ पाएंगे जब हम अनुकरण अपनाना बंद करेंगे।

बुद्ध का अगला विचार जो उन्हें प्रासंगिक बनाता है वह है प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत। इस सिद्धांत में दुःख की समस्याओं पर विचार करके बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का प्रतिपादन किया– दुःख, दुःख समुदाय, दुःख निरोध, दुःखागामिनी प्रतिपदा। बुद्ध मानते थे कि जैसे कोई व्यक्ति बीमार है और जब तक उसकी बीमारी का पता नहीं चल जाता तब तक उसे कोई दवा नहीं दे सकते वैसे ही यदि हमें कोई दुःख है और हम जब तक दुःख के कारण का पता नहीं लगा लेते तब तक उसका निदान जान लेना मुश्किल है। आज के समय में जब सभी जगह व्यस्तता है तो लोगों में अंधानुकरण की समस्या बढ़ गयी है। आज शरीरी आधुनिकता होते हुये भी लोग मानसिकता से रूढ़िवादी परम्पराओं में ही जकड़े हुये हैं। जब हम किसी चीज पर बिना सोचे समझे अंधानुकरण करते हैं तो वह कट्टरता का रूप धारण कर लेती है जो कि न सिर्फ खुद के लिए बल्कि समाज और देश हित के लिए भी अच्छा साबित नहीं होता है। इसीलिए किसी भी बात/परंपरा पर विश्वास करने से पहले उस पर सोच–विचार करके एक समझ बनाना बेहद आवश्यक है। जैसा की उन्होनें कहा भी है कि भलाई से भलाई पैदा होती है और बुराई से बुराई। यह व्यक्ति के स्वविवेक पर निर्भर करता है कि उसे क्या चाहिए।

ऐसे ही आगे उन्होनें मध्य मार्ग का संदेश दिया। मध्य मार्ग अर्थात व्यक्ति को अपने जीवन में एक संतुलन बनाकर रखना चाहिए। यह विचार जितना बुद्ध के समय में प्रासंगिक रहा होगा उतना ही आज है। क्योंकि इससे सभी भलीभाँति परिचित हैं कि किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती है। जैसा की आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि उसके पास जितनी भोग–विलास की वस्तु हो उतनी ही कम। चाहे वह उन सभी का उपयोग नहीं भी कर पा रहा है लेकिन एक संचय करने वाली बात है जो व्यक्ति के दिलोदिमाग में बैठी हुई है। लेकिन व्यक्ति को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करके अपने जीवन में संतुलन बनाए रखना चाहिए, जैसे की वीणा के तार, यदि वीणा के तारों को अत्यधिक खींच लिया जाए यह सोचकर कि ध्वनि बहुत अच्छी निकलेगी तो वह टूट जाएंगे और उन्हें ढीला छोड़ दिया जाए तो उनसे ध्वनि ही नहीं निकलेगी– इसीलिए एक संतुलन बेहद आवश्यक है और हमें अपने जीवन में इसे बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए।

बुद्ध ने अपने विचारों में परलोकवाद के बजाय इहलोकवाद पर जो बल दिया, वह आज भी प्रासंगिक बन बैठता है। जैसे की हम प्राचीनकाल से वेदों में या अन्य धर्मों में देखते आ रहे हैं कि सभी ने लगभग परलोकवाद के सिद्धांत पर जोर दिया है। मनुष्य इहलोक को मिथ्या मानकर और परलोक में जीवन खुशहाल रहे इसी भ्रम में अनेक धार्मिक अनुष्ठान और कर्मकांड करवाता है। इससे धार्मिक आडम्बरों को बढ़ावा मिलता है। लेकिन बुद्ध ने इन सभी का खंडन किया। उन्होनें आत्मा के अजर–अमर का भी खंडन किया। वास्तविकता यही है कि व्यक्ति को जो जीवन मिला है उसे ही सुधारना चाहिए, उसे खुशहाल करने की कोशिश करनी चाहिए ना की परलोक की सोचकर, जो पैसा या

समय व्यक्ति परलोक को सुधारने में लगाता है, वही पैसा और समय यदि व्यक्ति इहलोक में लगाए तो ज्यादा खुशहाल रहेगा।

साथ ही बुद्ध व्यक्ति को अहंकार की भावना से मुक्त होने और अहिंसा का मार्ग अपनाने पर जोर देते हैं। बुद्ध कहते हैं कि व्यक्ति को अहंकार में मैं की भावना का त्याग करना चाहिए। इस संदर्भ में एक कथा भी प्रचलित है कि एक बार एक दुखी आदमी बुद्ध की शरण में गया। बुद्ध को कहा कि मैं खुशी हासिल करना चाहता हूँ और पूछा कि मुझे इसके लिए क्या करना चाहिए ? बुद्ध ने उसे कहा कि यदि तुम "मैं" जो कि अहंकार है और "हासिल करना चाहता हूँ" क्योंकि यह लालसा है, इन दोनों को छोड़ दो तो सिर्फ खुशी शेष बचेगी और इसके लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ेगा। अहंकार की भावना से युक्त होने पर व्यक्ति को सामने वाले में अपना प्रतिद्वंदी ही नजर आता है, शुभचिंतक नहीं। इसीलिए व्यक्ति को हमेशा अहंकार की भावना से मुक्त रहना चाहिए।

ऐसे ही बुद्ध के अन्य अनेक विचार हैं जैसे–विचारों और बातचीत द्वारा किसी व्यक्ति का ह्रदय परिवर्तन और मनुष्य को संवेदनशील होना इत्यादि। बुद्ध के विचार तात्कालिक समय में भी प्रासंगिक थे और आज भी उतने ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक बने हुये है। बुद्ध कहते हैं कि व्यक्ति की संवेदनशीलता इतनी होनी चाहिए कि यदि सामने वाला व्यक्ति दुःखी है तो वह महसूस कर सके की वह दुःखी है। लेकिन आजकल लोगों की जैसे जिंदगी है कि वह अपने आस–पास क्या बल्कि अपने परिवार के लोगों के दुःखों को ही नहीं समझ पाता है। आज के समय में व्यक्ति को संवेदनशील होना बहुत जरूरी है।

साथ ही बुद्ध ह्रदय परिवर्तन पर जोर देते हुये कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में परिवर्तन की अनेक संभावनाएं होती हैं, बस उसको समझना जरूरी है। विचारों के आदान–प्रदान द्वारा अच्छे से अच्छा व्यक्ति बुरा और बुरे से बुरा व्यक्ति भी अच्छा बन सकता है। उस व्यक्ति को बदलने के लिए उस पर विश्वास करना, उसे समझना आवश्यक है। ह्रदय परिवर्तन के ऊपर बुद्ध की एक कथा भी प्रचलित है जो की एक अंगुलिमान जैसे डाकू की है। वह जो भी हत्या करता उसकी अंगुली काटकर उसकी माला पहनता था। और जब बुद्ध को यह आभास हुआ कि अगली हत्या वह अपनी माता की करना चाहता है तो बुद्ध ने उसके पास जाकर उससे बातचीत की और देखते ही देखते थोड़े ही समय में बुद्ध के विचारों से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने डाकू का रूप त्याग दिया और बुद्ध का अनुयायी बन गया।

महात्मा बुद्ध ने अपने समय में जो भी विचार/उपदेश दिये वह आज भी उतने ही प्रासंगिक बने हुये हैं। क्योंकि किसी भी विचार की उपयोगिता तभी तक महत्वपूर्ण है जब तक वह मानवता की भलाई के लिए है। उन्होनें इहलोक में रहकर मानव कल्याण की सेवा हेतु और उनके दुःखो को दूर करने के लिए मार्ग बताया। उन्होनें मध्य मार्ग का विचार रखते हुये जीवन को संतुलित बनाए रखने और आदर्शवाद एवं यथार्थवाद का समन्वय किया है। महात्मा बुद्ध आज भारतीय मनीषा के कीर्ति कलश है। और मैथ्यु अर्नाल्ड ने उन्हें एशिया का प्रकाश कहा है, क्योंकि वे कहते हैं आप जानते हैं कि कल मृत्यु निश्चित है तो आज कुछ ना कुछ नया सीखिये।

अतः, हम सभी को महात्मा बुद्ध के द्वारा दी गयी शिक्षा का अनुपालन करना चाहिये एवं उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिये।

कौन हूँ मैं?

निहारिका 'हयात'
लिपिक
शाखा कार्यालय: जालंधर रोड, कपूरथला

ये रात की चांदनी
ये तारों की नुमाइश
उस नुमाइश के बीच खड़ी
एक बादल सी मैं

ये यादों को टटोलता दिल
यह बेबाक मन की भावनाएं
उन भावनाओं के बीच अटकी
एक घड़ी की सुई सी मैं....

एक तुम से फासले
एक खुद से तन्हाई
उस तन्हाई में भटकती
एक आवारा सी मैं....

कुछ ख्वाब अधूरे से
कुछ धड़कनें अधूरी सी
उन धड़कनों के बीच शामिल
कुछ पूरी सी मैं.....

विवेक कुमार शर्मा
मुख्य प्रबंधक
रैम, अयोध्या

इस सुबह की रोशनी में भी है छिपा बहुत कुछ
महज स्याह रात में ही नहीं हुआ है सब कुछ।

रात तो आयी थी कि सब ठहर जाए
मगर लोगो ने माना है ये अवसर नए प्रतिघात का
दुर्दिनों की पैठ थी, जहां तक रोशनी ना पहुंच पाई
फिर किसी बनिए ने लाभ की जुगत लगाई
आटे की कीमत किसी ने अपनी देह से चुकाई
मौन किस्मत के लपेटे में किसी की अस्मत है आयी।

है सवाल उस कलम से जो सो गई इस दोपहर में
स्याही खत्म हुई या फिर हिम्मत ही उसकी चूक गई,
उस कलम को ही तोड़ दो जो ना आवाज बन सके
हुक्मरानों की टोली भी है यही चाहती
यह नहीं करना हमें है संगत कलम की बदलनी होगी
वरना मौन कलम की आड़ में सरेआम कुछ नई आप बीती होगी।

कलम को जगना ही होगा, इस तिमिर को छटना ही होगा
राजपथ से निकल कर पगडंडी पर चलना होगा
तब यह जानेगी व्यथा इंसान की
भूख में लिपटे हुए किसान की
बेबस माँ के संताप को
बच्चो के बदन के ताप को
खुद को जाने बगैर जो लिख दिया उसका प्रतिकार होगा
शब्द–शब्द अब किसान की आवाज होगा
जागती कलम के साए में अब हर नयी सुबह होगी।

सब छीन के प्रकृति की गोद से
अपनी असीमित खोट की चाहत से
नन्हें परिंदो के आसमां को
जंगल की जमीं को
मूक जानवरों के घर को
बहती नदी के रेत को
बड़े जंगल के छोटे पंछियों के घोसले को
पाटकर इन्हें सीमेंट की चादर से
लगाया है घर पर बोनसाई को
बनाने घर को इको वाला
काट डाला है आज एक पीपल को,
यह बोनसाई कितने परिंदो को घर देगा
या किसी राहगीर को छाव देगा
या खेत से लौटे किसान को सुकून देगा
या गांव के बुजुर्गों को ताश खेलने देगा,
नहीं यह कुछ नहीं देगा
जंगल के विनाश का प्रतीक होगा
विकास की अंधी दौड़ का नमूना होगा
अपने अपराधों का गवाह होगा।
किसी पीपल या आम की सहादत की नजीर होगा।

हिन्दी की पुकार

तरुण शर्मा
लिपिक
फगवाड़ा जीटी रोड,

दीप से दीप जलाएंगे।
हिन्दी सहित देश बनाएगे।।

हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई।
मिलकर करें हिन्दी की बढाई।।

हिन्दी को फैलाएंगे।
उन्नत देश बनाएगे।।

इक्कीसवीं सदी की यही पुकार।
हिन्दी को मिले उसका अधिकार।।

हिन्दी को मिले सम्मान।
यही संकल्प यही अभियान।।

हिन्दी को प्यार दो।
अपनाकर उसे अधिकार दो।।

आओ करे यूनाइटेड नेशन में मीट।
हिन्दी को दिलाए उसकी सीट

खुशियों की बोतल...।

ईशिता वर्मा
पुत्री श्री दीपक कुमार
उप मंडल प्रमुख (मुख्य प्रबंधक)
मंडल कार्यालय, मऊ

"माँ मैं चलती हूँ, कॉलेज के लिए देर हो रही है।"

"तुमने अपना टिफिन और पानी की बोतल ली, बाहर का कुछ मत खाना पीना।" माँ ने बालकनी से चिल्लाते हुए बोला।

"ठीक है माँ, आप अपना ख्याल रखना।"

मैं यह बोल कर अपने अपार्टमेंट के गेट पर पहुंच गई जहाँ से मैंने कॉलेज के लिए ऑटो लिया। मैं अक्सर 8 बजे तक घर से निकल जाती थी क्योंकि रास्ते में दो बार ऑटो बदलना पड़ता था और घर से कॉलेज का रास्ता लगभग 20 मिनट का था। जल्दी कॉलेज पहुंचने का असल तात्पर्य यह था कि अपने दोस्तों के आने से पहले अंतिम पंक्ति में अपनी मनपसंद जगह पर बैठना ताकि वे न बैठ सकें। एक और वजह यह भी थी कि उस समय डिपार्टमेंट में एक भी शिक्षक नहीं होते थे और आप अपनी मर्जी से कुछ भी कर सकते थे, कभी बोर्ड देखना, कभी शीशे में खुद को निहारना और खुलकर फोन इस्तेमाल करना। जब मैं क्लास में पहुंची तो 2 लड़कियां बैठी थीं। मैं भी अपनी जगह पर जा बैठी और चुपके से अपने दोस्तों को कॉल कर जल्दी बुलाने लगी (चुपके से इसलिए क्योंकि हमारे कॉलेज में फोन लाना सख्त मना था)। सब करीब 8:40–8:50 तक पुहंच गए, मगर प्रियांशी रोजाना की तरह 9 बजे के बाद पहुंची। इस बात पर उसका मजाक बनाना हमारा पसंदीदा काम था।

क्लास की शुरुआत मेरे सबसे पसंदीदा शिक्षक अमिताभ सर से हुई, क्योंकि दिन भर में सिर्फ उनकी क्लास ध्यान देने लायक होती थी। उस दिन उनके बाद कोई भी शिक्षक हमें पढ़ाने के मकसद से नहीं आए बल्कि हमारी क्लास को हिंदी में मछली बाजार बनाने की वजह से आए (हिंदी बोलना हमारे डिपार्टमेंट में सख्त मना था)। हमारी क्लास 3 बजे तक चली और फिर सब घर को लौटने लगे। मैं थक गई थी, टिफिन भी छीना–झपटी में कब खत्म हुआ पता ही नहीं चला। मेरे बैग में पड़ी भरी बोतल भी मेरी सहायता करने में असक्षम थी क्योंकि मुझे प्यास ही नहीं लगती थी, लेकिन भूख लगी थी और दोबारा ऑटो से भीड़ में जाने का मेरा मन भी नहीं था। इसलिए मैं अपनी सहेली प्रज्ञा के घर चली गई, कुछ समय व्यतीत करने ताकि उसके बाद पापा को बुला कर गाड़ी से जा सकूँ।

मैंने माँ को कॉलेज से ही फोन कर अपनी इस योजना के बारे में बता दिया था ताकि वो निश्चिंत रहे। हम घर गए, आंटी ने स्वादिष्ट व्यंजन बना रखे थे। जोरों की भूख भी लगी थी तो वह हमारे लिए सोने पे सुहागा हो गया। हम दोनों ने खाया, फिर गप्पें लड़ाने लगे। मुझे प्यास लगी थी, मैं बोतल निकालने ही वाली थी कि प्रज्ञा ने घर से ही एक बड़ा गिलास पानी का लाकर मुझे दे दिया। उस समय भी मेरी बोतल मुझे असहाय देखती रही। मैंने उससे

नजरें चुरा किसी तरह उसे बैग के आखिरी खाने में रख दिया। गप्पें करते–करते कब शाम हो गई पता ही नहीं चला। मैंने घड़ी देखी तो 5 बज रहे थे। पापा के ऑफिस से निकलने का समय हो गया था। उन्हें जल्दी से कॉल किया और नियमित जगह पर आने को बोल दिया। वो जगह पटना की सबसे अशांतिपूर्ण, भीड़–भाड़ वाली मगर व्यवस्थित जगह है – डाक–बंगला चौराहा। उसके बाद मैं भी प्रज्ञा के घर से सबको नमस्ते कर निकल गई। मुझे पहुंचने में 15 मिनट लगते और पापा को 30 मिनट।

मैं पहले पहुंच गई थी। भीड़ से बचने के लिए डिवाइडर पर चढ़ कर उनका इंतजार करने लगी। पापा अपने निर्धारित समय से 10 मिनट देर से पुहंचे। गाड़ी में बैठते ही मानो मेरी थकान दूर हो गई। मुझे दोबारा भूख लगने लगी थी। पापा से खाने को मांगा तो उनके पास एक सेब रखा हुआ था, मैंने झट से उसे खाना शुरू कर दिया। हमारी गाड़ी ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी हुई थी। पटना में उस जगह पर बैलून्स बहुत मिलते है और मुझे बैलून का बहुत शौक है। कोई मुझे खुश करना चाहता है तो मुझे बैलून तोहफे में दे दे। मैंने एक बहुत ही छोटे बच्चे को बैलून बेचते देखा। मुझसे रहा नहीं गया, सोचा एक खरीद ही लेती हूँ। उस बच्चे को बुलाया और उससे दाम पूछा, यही कोई 10 रुपए का एक बैलून था। पापा ने पीछे से टोका भी, "क्या करेगी बैलून का अभी तक बचपना नहीं गया है" और वो हँसने लगे। फिर भी मैंने उनकी एक न सुनी और एक बैलून खरीद ही लिया। मैंने बैलून अपने बचपने की वजह से नहीं बल्कि उस मासूम की मेहनत देख खरीदा था।

मेरे एक हाथ में सेब था और मैं दूसरे हाथ से पैसे निकाल रही थी। पैसे देते वक्त उस बच्चे ने सेब देख लिया और कहा कि "दीदी कुछ खाने को है?" मेरा दिल ठहर सा गया क्योंकि मैंने अभी–अभी इकलौता बचा सेब खाया था और मैं उसे जूठा दे भी नहीं सकती थी। मैंने पापा की तरफ देखा, उन्होंने कहा बैग में देखो कुछ होगा। मैंने अपना और उनका दोनों का बैग टटोला मगर हाथ कुछ भी नहीं आया। मेरे साथ यह पहली बार ऐसा हुआ था कि किसी बच्चे ने कुछ मांगा हो और बदकिस्मती से मैं उसे कुछ दे नहीं पाई। बहुत नम आँखों से मैंने फिर उसकी तरफ देखा और कहा "नहीं बाबू, कुछ नहीं है मेरे पास।"

"कोई बात नहीं दीदी, कुछ पीने को मिल जाएगा पानी ही सही।" उसने कहा।

मेरा दिमाग खनका और मेरे अंदर जैसे खुशी की एक लहर दौड़ उठी, उस समय ऐसा ही अनुभव हुआ। मैंने तुरंत ही अपने बैग के आखरी खाने से पानी से भरी बोतल निकाली और पापा की तरफ देखा। उन्होंने भी हामी भरी, फिर मैंने उल्लासपूर्वक वह बोतल उसे दे दी। वो मेरी पसंदीदा बोतल थी मगर मैं उसके भोलेपन के आगे विवश हो गई थी। तभी सिग्नल लाल से हरा हुआ। वह बच्चा दूसरी ओर जा डिवाइडर पर खड़ा हो गया और मुझे हँसते हुए टाटा–बाय करने लगा। फिर मैंने भी हाथ हिला कर उसे बाय किया। वह दिन मेरे लिए बहुत आम था लेकिन उस बच्चे की मुस्कुराहट ने उसे मेरे लिए आज तक का सबसे खास दिन बना दिया।

निवेदन: अगर आप कभी भी किसी ऐसे बच्चे या जरूरतमंद से मिलें तो उन्हें पैसे देने की जगह उनका पेट भरने की कोशिश करें। आपकी एक कोशिश किसी के कई दिनों की मुस्कुराहट की वजह बनेगी। और आपको भी असीम संतोष की अनुभूति होगी।

पीएनबी प्रतिभा का वेब संस्करण

सभी स्टाफ सदस्यों एवं प्रिय पाठकों की सुविधा हेतु पीएनबी प्रतिभा का ऑन–लाइन संस्करण नॉलेज सेंटर पर उपलब्ध है। पीएनबी प्रतिभा तक निम्न नेविगेशन से पहुँच सकते हैं–

पीएनबी नॉलेज सेंटर → ई–सर्कुलर → मैगज़ीन → पीएनबी प्रतिभा

इस पत्रिका को अधिक बेहतर तथा उपयोगी बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

कपूरथला– एक नज़र में

सतीश कुमार अरोड़ा
मुख्य प्रबन्धक
मण्डल कार्यालय, कपूरथला

कपूरथला भारत के राज्य पंजाब का एक जिला है। यह खेलकूद का सामान बनाने वाले शहर जालंधर से 25 किलोमीटर एवं प्रसिद्ध धार्मिक स्थल अमृतसर से 68 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कहने के लिए यह एक जिला है लेकिन इसका इतिहास बहुत प्राचीन है। कपूरथला जिले का नाम इस शहर के संस्थापक नवाब कपूर सिंह के नाम पर है। ब्रिटिश राज के समय यह एक रियासत रही है। बाद में यह रियासत राजा फतेह सिंह आहुलवालिया की राजधानी थी। यह रजवाड़ा रियासत आहूलवालिया मिसल के राजाओं द्वारा संचालित थी। राजाओं के समय यहाँ पर बनी एक से एक भव्य और विभिन्न इमारतें उस समय की कलाकृतियों, सामाजिक, धार्मिक संस्कृति को दर्शाती हैं। सभी शाही महल कला की अनूठी दास्तां को बयां करते हैं। यहाँ की शिल्प कला फ्रेंच तथा इंडो सारसैनिक डिजाइन पर आधारित है। कपूरथला को महलों और बगीचों का शहर भी कहा जाता है। इसे अपनी सुंदर इमारतों और सड़कों के लिए भी जाना जाता है। एक समय ऐसा भी था जब यहाँ की साफ–सफाई देखकर इसे पंजाब का पेरिस कहा जाता था। यहाँ के महाराजा जगजीत सिंह ने बहुत सी इमारतों का निर्माण करवाया जो इसके इतिहास को आज भी जीवंत रूप में उजागर करती हैं।

यहाँ की जनसंख्या की बात करें तो आश्चर्यजनक है कि 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का सबसे कम जनसंख्या वाला जिला है। प्रशासनिक ढांचे को देखा जाए तो कपूरथला जिले में 4 तहसील (भोलथ, कपूरथला, फगवाड़ा, सुल्तानपुर लोधी) एवं इसके अंतर्गत 618 गाँव हैं। जहां पर जिले का प्रशासनिक कार्य किया जाता है। कपूरथला के सरकारी कार्यालयों की कामकाजी भाषा पंजाबी है।

- **सैनिक स्कूल**– पूर्व में यह महाराजा जगजीत सिंह का महल हुआ करता था। इसमें महाराजा जगजीत सिंह और कई और महाराजाओं का निवास स्थान रहा है। यह कलाकृति का अदभुत नमूना है। यह 200 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। फ्रैंच वस्तुकार एम. मार्केल ने इसका डिजाइन बनाया। महल की दीवारों और छतों पर बहुत खूबसूरत नक्काशी और पेंटिंग बनाई गयी जो प्लास्टर ऑफ पेरिस से निर्मित की गयी। इसका दरबार भारत के सबसे खूबसूरत दरबारों में से एक है। समस्त प्रयोग में ली जाने वाली सामग्री फ्रांस और इटली से मँगवाई गयी थी। इस महल को बनाने में पूरा 8 वर्ष का समय लगा (1900–1908)। यह महल फाउंटेनब्लू की याद दिलाता है। वर्तमान में इस महल में सैनिक स्कूल, कपूरथला कार्य कर रहा है।

- **मूरिश मस्जिद** – महाराजा जगजीत सिंह – जो कि यहाँ के आखिरी शासक थे– ने इसका निर्माण कराया। महाराजा जगजीत सिंह सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होने मुस्लिम धर्म के लिए मस्जिद का निर्माण करवाया। इसका निर्माण फ्रांसीसी वास्तुकार मोनयर एम. मेंटिक्स ने किया था। यह मस्जिद मोरक्को के मराकेश की मस्जिद के तर्ज पर बनाई गयी है। इसके गुम्मद की नक्काशी मायो स्कूल ऑफ आर्ट लाहौर की देख रेख में की गयी। मस्जिद के लकड़ी का मॉडल आज भी लाहौर संग्रहालय के मुख्य द्वार पर रखा हुआ है। इसको बनाने में 13 वर्ष का समय लगा (1917–1930)।

- **जगजीत क्लब**– इस क्लब की बिल्डिंग कपूरथला शहर के बीचो बीच बनाई गयी है। इस बिल्डिंग का डिजाइन ग्रीस शैली में किया गया है। कपूरथला रियासत के रियासती का चिन्ह इसके मुख्य दीवार पर नक्काशी द्वारा चिन्हित किया गया है, जो यहाँ आने वाले पर्यटकों को

उस समय की आज भी याद दिलाता है। इसे बनने से लेकर आज तक इसे समयानुसार कई तरीके से इसका प्रयोग किया गया है। इसको 1900 में चर्च (गिरिजाघर के रूप में भी उपयोग किया गया था)। सन 1940 में सिनेमा घर भी इसमें मौजूद रहा। आजकल यह स्थानीय क्लब के रूप में चलाया जाता है। शहर के बड़े– बड़े लोग यहाँ आकर बैडमिंटन खेलते हैं जो की शरीर को स्वस्थ रखने का एक अच्छा तरीका है।

- **चर्च**– डीसी चौक के पास बना यह चर्च अपने एतिहासिक कला के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ प्रत्येक वर्ष दिसंबर में क्रिसमस के दिन सजावट होती है। ईसाई धर्म के अलावा साथ ही अन्य धर्मों के लोग भी यहाँ प्रार्थना करने आते हैं।

- **पंच मंदिर**– महाराज फतेह सिंह के शासनकाल के दौरान हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुये पंच मंदिर का निर्माण करवाया गया। इस मंदिर की मुख्य विशेषता है कि मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुँचने पर पांचों देवताओं के सपाट दर्शन हो जाते हैं। साथ ही यह भारत का दूसरा ऐसा मंदिर है जहां सूर्य भगवान की प्रतिमा पर प्रत्येक सुबह सूरज की किरणें सीधी पड़ती हैं। इस मंदिर का निर्माण दीवान भानामल गौतम की देखरेख में किया गया है।

- **स्टेट गुरुद्वारा**– लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह गुरुद्वारा 1915 में सरदार रवेल सिंह की देखरेख में बनाया गया। इसके धरातल पर कीमती संगमरमर पत्थर लगा हुआ है। यह गुरुद्वारा शहर के बीचों बीच सुल्तानपुर रोड पर बना हुआ है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु माथा टेकने आते हैं। और आध्यात्मिक एवं मानसिक शांति प्राप्त करते हैं।

- **शालीमार बाग**–यह बाग अपनी खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर के थोड़े बाहरी भाग में बना हुआ है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के दुर्लभ फूल और वृक्ष लगे हुये हैं। सुंदर नक्काशी वाला पत्थर से निर्मित यहाँ का मुख्य द्वार है। यहाँ पर संगमरमर और रेड सैंड से बनी कलाकृतियाँ आहुलवालिया रियासत की याद को दर्शाती हैं। महाराजाओं को मृत्यु के उपरांत इसी जगह में लाकर दफनाया जाता था। जिनमें महाराजा खड़क सिंह, जगजीत सिंह, परमजीत सिंह थे।

- **कांजली वेटलैंड**– यह कांजली वेटलैंड शहर के बाहरी हिस्से में बहने वाली नदी पर स्थित है। यह नदी काली बाई के नाम से प्रसिद्ध है। काली बाई का बहता पानी रंग में काला दिखाई देता है। इसी कारण इसे कालीबाई

के नाम से जाना जाता है। कांजलीवेटलैंड आज एक पिकनिक स्थान है, जहां पर लोग सैर–सपाटे के लिए आते हैं। संत बलबीर सिंह सींचेवाल जी ने काली बाई की साफ– सफाई का जिम्मा ले रखा है। संत बलबीर सिंह सींचेवाल का सुल्तानपुर लोधी में एक स्थान बना हुआ है। जो समाज सेवा व धार्मिक कार्यों का संचालन करते हैं। उनके सराहनीय कार्यों के लिए उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा सन 2017 में पदमश्री से भी सम्मानित किया गया। इनके आश्रम में स्व. भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम आजाद द्वारा सुल्तानपुर आगमन पर संत द्वारा किए जाने वाले सामाजिक धार्मिक कार्य पर चर्चा की एवं इस योगदान के लिए उनकी प्रशंसा की।

- **रेल कोच फेक्ट्री**– कपूरथला शहर देश के उत्तरी भाग में स्थित है और पूरी तरह से देश के सभी हिस्सों में रेल के डिब्बों की आपूर्ति करता है। यह खुद भी सड़क एवं रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। रेलवे कोच की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए कपूरथला की कोच फेक्ट्री के लिए 170 करोड़ रुपये निवेश वाली विस्तार योजना तैयार की गयी है। यह फैक्ट्री प्रतिवर्ष लगभग 1900 कोच का निर्माण करती है।

- **एलसी महल**– इस महल का निर्माण कुँवर विक्रम सिंह द्वारा 1862 में किया गया। एलसी महल की कलाकृति देखते ही बनती है। वर्तमान में यहाँ बच्चों के लिए एमजीएन स्कूल कार्य कर रहा है।

- **गोल कोठी**– कपूरथला में स्थित गोल कोठी का निर्माण महाराजा फतेह सिंह ने करवाया था। यह कोठी एसएसपी कपूरथला निवास स्थान के ठीक सामने है। इस गोल कोठी की विरासत और इतिहास दोनों ही बेहद अमीर है। इस कोठी को महाराजा फतेह सिंह की तरफ से कपूरथला स्टेट के प्रधानमंत्री के आवास के तौर पर 1883 में बनवाया गया था। इस कोठी में 1880 से कुछ सालों के लिए महाराजा जगजीत सिंह भी रहे हैं।

- **विला कोठी**– कपूरथला के इतिहास और इतने स्थलों की चर्चा करने के बाद यदि विला कोठी की बात न करें तो कपूरथला के इतिहास में कुछ छूटा सा लगता है। विला कोठी, कपूरथला में कांजली वेटलैंड के किनारे पर बनी हुई है। यह कपूरथला महाराजा का निवास स्थान हुआ

करता था और इसी क्रम में अब उनके वंशज यहाँ निवास करते हैं।

- **पुष्पा गुजराल साइंस सिटी**– यह भारत की सबसे बड़ी विज्ञान नगरियों में से एक है। यह जालंधर–कपूरथला मार्ग पर स्थित है। यह लगभग 72 एकड़ क्षेत्र में फैली हुई है। इसकी आधारशिला पूर्व प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल द्वारा 17 अक्टूबर, 1997 को रखी गयी थी। इस साइंस सिटी का नाम पूर्व प्रधानमंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल की माँ के नाम पर रखा गया है। यह मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा भी प्रदान करता है। यह सभी उम्र के लोगों को आकर्षित करती है।

  यहाँ के प्रमुख आकर्षणों में से एक 18 फुट ऊँचा डायनासोर और एक विशाल ग्लोब है। यहाँ पर बच्चों के लिए पार्क भी है। यहाँ कृत्रिम झीलें भी हैं।

- **गुरुद्वारा बेर साहिब**– प्रसिद्ध गुरुद्वारा बेर साहिब कपूरथला की तहसील सुल्तानपुर लोधी में बना हुआ है, जो कि कपूरथला शहर से 20–25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गुरुद्वारे का सिख समुदाय और धर्म में विशेष महत्व है। गुरुद्वारा बेर साहिब का नाम यहाँ पर स्थित बेर वृक्ष के कारण पड़ा जिसके नीचे गुरु नानक देव जी ध्यान लगाया करते थे। गुरु नानक जी यहाँ अपनी बहन नानकी के साथ रहा करते थे। सुल्तानपुर लोधी को गुरु नानक जी का भक्ति स्थल कहा जाता है। सुल्तानपुर लोधी वह पवित्र स्थान है जहां पर सिख धर्म के प्रथम गुरु, गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन के शुरू के 15 वर्ष व्यतीत किए। इसी दौरान गुरु नानक देव जी को आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति हुई। गुरु नानक जी ने मूलमंत्र इक ओंकार का उच्चारण किया। कहा जाता है कि यहीं से गुरु ग्रंथ साहिब की आधारशिला रखी गयी। इनके द्वारा दी गयी वाणियों का सिख धर्म में विशेष महत्व है। इसी एतिहासिक शहर से गुरु नानक जी ने विश्व कल्याण के लिए पाँच उदासियों (यात्राओं) की शुरुआत की। सुल्तानपुर लोधी में इस प्रमुख गुरुद्वारे के अलावा अन्य भी गुरुद्वारे है जिनके साथ गुरु नानक जी का गहरा रिश्ता रहा है।

गुरुद्वारा संत घाट– यह श्री बेर साहिब से 3 किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ गुरु नानक जी प्रतिदिन स्नान करने आते थे और कहा जाता है कि एक दिन वह डुबकी लगाकर 72 घंटे के लिए आलोप हो गए थे। इसी दौरान उन्हें दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्होंने इक ओंकार सतनाम के मूल मंत्र का उच्चारण किया।

श्री हट्ट साहिब– जब गुरु नानक देव जी सुल्तानपुर लोधी में थे उन्होंने नवाब दौलत खान लोधी के मोदी खाने में नौकरी की। इस मोदीखाने में लोगों को राशन बेचते समय जरूरतमंदों को खुले मन से राशन बाँट देते थे यह कहते हुए की सब तेरा–तेरा। उनके समय के 14 पवित्र बट्टे, जिनसे गुरु जी अनाज तोलते थे, आज भी यहाँ सुरक्षित है और यहाँ की शोभा में चार चाँद लगाते हैं।

श्री कोठडी साहिब– ऐसा प्रचलित है कि गुरु नानक जी द्वारा जरूरतमंदो को अतिरिक्त राशन देने की शिकायत दौलत खान से की गयी। हिसाब में कुछ गड़बड़ी के आरोपों के कारण गुरु नानक जी को बुलाया गया लेकिन उनके ऊपर लगाया गया इल्जाम बेबुनियाद निकला और हिसाब कम की जगह ज्यादा निकला था। वह अतिरिक्त धन गुरु जी को दे दिया गया। जिस स्थान पर यह जांच की गयी, वहाँ अब गुरुद्वारा कोठडी साहिब है।

कपूरथला शहर के सांस्कृतिक एवं सिनेमा से जुड़ी बातें देखें तो यहाँ – 2011 में तनु वेड्स मनु फिल्म के बहुत सारे दृश्य फिल्माए गए थे। वहीं 2017 में हिन्दी फिल्म फिरंगी जगजीत महल (वर्तमान सैनिक स्कूल) में फिल्मायी गयी थी।

इस तरह कपूरथला शहर अपनी इमारतों और अपने प्राचीन इतिहास के साथ सांस्कृतिक महत्व को आज भी जीवंत बनाए हुये है।

वास्तु-टिप्स

वास्तुशास्त्र के अनुसार पूर्व दिशा संबंधी स्वीकार्य एवं त्याज्य निर्माण

आशीष शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

संपूर्ण वास्तुशास्त्र दिशाओं पर आधारित है। दिशाओं के शुभ–अशुभ परिणामों को ध्यान में रखकर बनाया गया भवन उसमें निवास करने वालों को सुख, संपदा, सफलता, दीर्घायु प्रदान करता है। पिछले अंक में हमने वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर दिशा में प्रयोग की जाने वाली और त्याज्य निर्माण या वस्तुओं के बारे में चर्चा की थी। इस अंक में हम वास्तुशास्त्र के अनुसार "पूर्व" दिशा के महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

वास्तु के अनुसार घर की पूर्व दिशा सूर्य नारायण भगवान की है तथा इसके स्वामी इंद्र देव हैं। पूर्व दिशा का भवन या प्लाट सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि की दृष्टि से अत्यंत लाभकारी माना जाता है।

घर की पूर्व दिशा में कुछ निर्माण कार्य करते समय या कुछ सामान रखते समय विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। तो आइए जानते हैं कि किसी मकान, भूखंड या भवन के लिए पूर्व दिशा का क्या महत्व है:–

- घर, भवन या भूखंड का पूर्वी कोना हमेशा दक्षिण–पश्चिम कोने से नीचा होना चाहिए अर्थात दक्षिण–पश्चिम कोना पूर्वी कोने से ऊंचा होना चाहिए।
- घर के पूर्वी हिस्से में अधिक खाली स्थान हो तो धन एवं वंश में वृद्धि होती है।
- किसी भूखंड पर बने भवन, कमरों, बरामदों में भी पूर्वी हिस्सा नीचा हो तो उस घर में रहने वाले लोग प्रत्येक क्षेत्र में तरक्की करते हैं और स्वस्थ रहते हैं।
- घर का मुख्य द्वार तथा अन्य द्वार भी पूर्व दिशा में निर्मित हों तो शुभ परिणाम मिलते हैं।
- घर की पूर्व दिशा में दीवार जितनी कम ऊंची होगी उतना ही मकान मालिक को यश–प्रतिष्ठा, सम्मान प्राप्त होगा। इससे मकान में रहने वाले लोगों को दीर्घायु और आरोग्यता दोनों की प्राप्ति होती है।
- पूर्व दिशा वाले घर के चबूतरे उसके मध्य भाग की अपेक्षा नीचे बनाए जाएँ तो शांति और सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
- पूर्व दिशा में बरामदा झुका हुआ बनाया जाए तो घर के पुरुष सुखी एवं धनी होते हैं।
- पूर्वी दिशा की चारदीवारी पश्चिमी दिशा की चारदीवारी की अपेक्षा कम ऊंची हो तो पुत्र–पुत्रों की वृद्धि होती है।
- पूर्वी दिशा में भूतल पर पानी की टंकी या कुआं हो तो शुभ फलदायी होता है।
- घर की छत पर बारिश के पानी की निकासी पूर्व दिशा से होनी चाहिए अन्यथा धन की हानि होती है।
- घर में तुलसी का पौधा पूर्व दिशा की ओर रखा जाना चाहिए, इससे परिवार में सुख–शांति व समृद्धि बनी रहती है।
- घर में मन्दिर बनाने या रखने का उपयुक्त स्थान भी पूर्व या उत्तर–पूर्व दिशा ही है। मन्दिर इस प्रकार से रखा जाना चाहिए कि पूजा करते समय आपका मुंह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर रहे।
- पूर्व दिशा में स्थित कमरे को पढ़ने वाले बच्चों के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इस कमरे में बच्चों की पढ़ने की टेबल इस प्रकर रखी जाए की पढ़ते समय बच्चों का मुंह पूर्व या उत्तर की ओर रहे।
- भूतल जल संग्रह का सर्वोत्तम स्थान पूर्व दिशा होती है। अतः, यदि घर में भूतल में जल संग्रह का स्थान बनाया जाए तो यह स्थान पूर्व दिशा में होना चाहिए।

पूर्व दिशा हेतु त्याज्य निर्माण –

- अन्य दिशाओं की अपेक्षा भवन का पूर्वी भाग ऊंचा हो तो गृह स्वामी दुखी और धन की तंगी से जूझता है। ऐसे घर में संताने रोगी एवं मंदबुद्धि होती हैं।
- पूर्वी दिशा में खाली जगह रखे बिना चारदीवारी से सटाकर कमरे बनाए जाएँ तो संतान की कमी होती है।
- यदि घर का मुख्य द्वार पूर्वी दिशा में हो तथा घर के अन्य द्वार अग्नीमुखी (दक्षिण–पूर्व दिशा में) हों तो दरिद्रता, अदालती मामले, चोरों एवं अग्नि का भय बना रहता है।
- भूखंड के पूर्व दिशा में ऊंचे चबूतरे हो तो अकारण अशांति, आर्थिक संकट बना रहता है। गृह स्वामी कर्ज में डूबा रहता है।
- पूर्वी भाग में कचरा, पत्थरों के टाइल, मिट्टी के ढेर आदि हों तो धन और सन्तान की हानि होती है।
- पूर्व दिशा में शौचालय आदि नहीं बनाना चाहिए।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारका, नई दिल्ली द्वारा विश्व हिन्दी दिवस (दिनांक 10.01.2021) के उपलक्ष्य में बैंक में कार्यरत समस्त राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 11.01.2021 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। "पीएनबी 2.0 राजभाषा कार्यान्वयन दशा एवं दिशाएं" विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

श्री बी. एस. मान, मुख्य महाप्रबन्धक–राजभाषा की अध्यक्षता एवं श्री आर. के. अरोडा महाप्रबन्धक–राजभाषा तथा प्रभागीय प्रमुख श्रीमती मनीषा शर्मा, सहायक महाप्रबन्धक–राजभाषा की उपस्थिति में इस ऑनलाइन सम्मेलन में देश भर के सभी अंचल कार्यालयों, मंडल कार्यालयों एवं प्रशिक्षण केन्द्रों तथा राजभाषा विभाग के सभी राजभाषा अधिकारियों ने वेबेक्स के माध्यम से भाग लिया।

मुख्य महाप्रबन्धक महोदय ने अपने सम्बोधन में दैनिक कामकाज में सरल हिन्दी अपनाने पर बल दिया और राजभाषा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के लिए राजभाषा टीम की सराहना की, उन्होंने कहा कि हमें यहीं नहीं रूकना है बल्कि राजभाषा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करना है।

श्री आर. के. अरोडा, महाप्रबन्धक–राजभाषा ने राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर जोर दिया।

प्रभागीय प्रमुख श्रीमती मनीषा शर्मा ने कहा कि इस वित्त वर्ष के शेष बचे समय में मिशन मोड में काम करते हुए यह सुनिश्चित किया जाए कि राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए। उन्होंने कहा कि हमारी टीम ने कोरोना आपदा के बावजूद भी ऑनलाइन कार्यशाला, ई–निरीक्षण, वार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन करके अपने लक्ष्य पूरे किए हैं।

संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली पर आयोजित कार्यशाला में श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा, मुख्य प्रबन्धक राजभाषा व श्री आशीष शर्मा, वरिष्ठ प्रबन्धक राजभाषा ने निरीक्षण प्रश्नावली भरने एवं राजभाषा के नवीनतम निर्देशों से अवगत करवाया।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य महाप्रबंधक–राजभाषा श्री बी.एस.मान.।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा की अपेक्षाओं से अवगत करवाते हुए प्रभागीय प्रमुख एंव सहायक महाप्रबंधक–राजभाषा श्रीमती मनीषा शर्मा।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन की झलकियाँ

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए मुख्य प्रबंधक–राजभाषा श्री बलदेव कुमार मल्होत्रा।

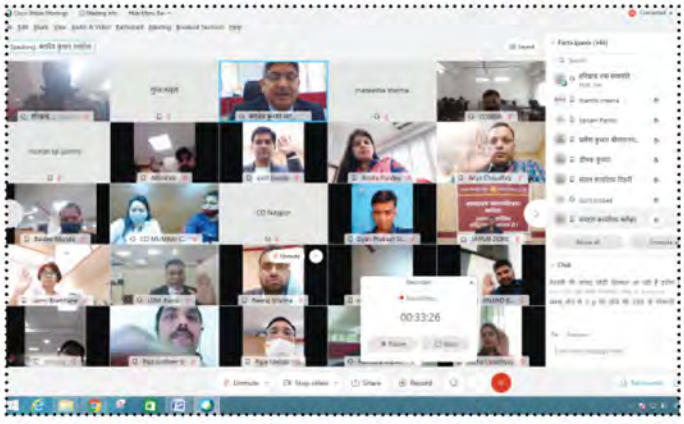

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में उपस्थित अंचल व मंडल कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारी।

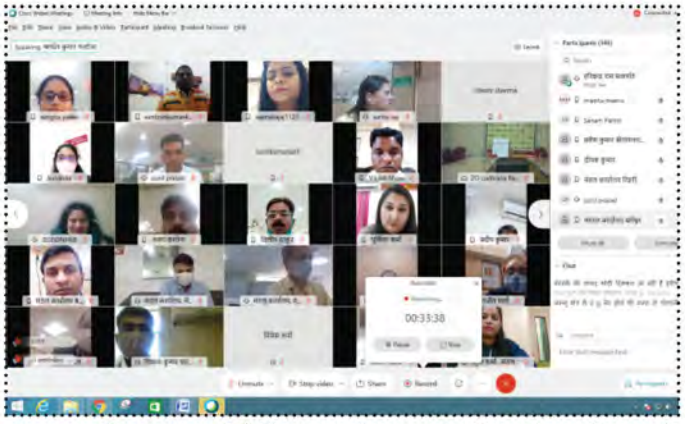

प्रधान कार्यालय द्वारा रिपोर्टिंग प्रणाली पर आयाजित ई–कार्यशाला में उपस्थित अंचल व मंडल कार्यालयों में कार्यरत राजभाषा अधिकारी।

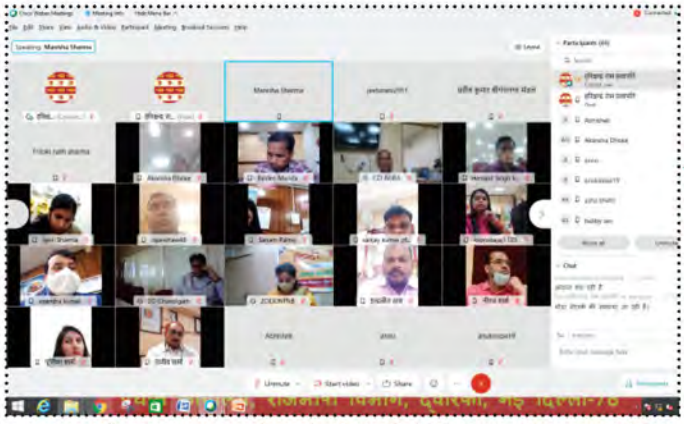

प्रधान कार्यालय द्वारा.'क' क्षेत्र के लिए रिपोर्टिंग प्रणाली पर आयोजित ई–कार्यशाला में उपस्थित अंचल व मंडल के राजभाषा अधिकारी।

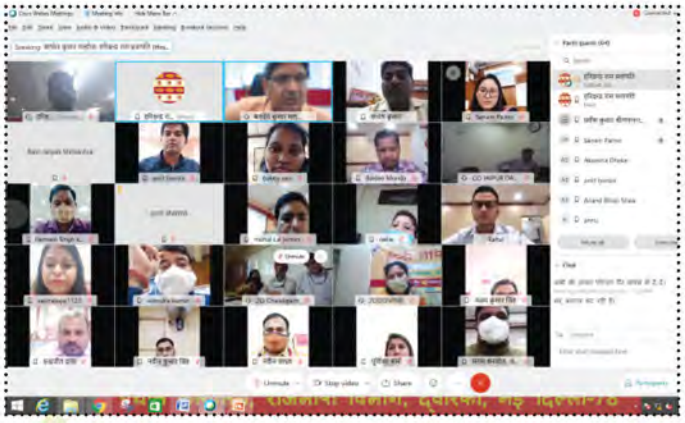

प्रधान कार्यालय द्वारा.'ख' क्षेत्र के लिए रिपोर्टिंग प्रणाली पर आयोजित ई–कार्यशाला में उपस्थित अचंल व मंडल के राजभाषा अधिकारी।

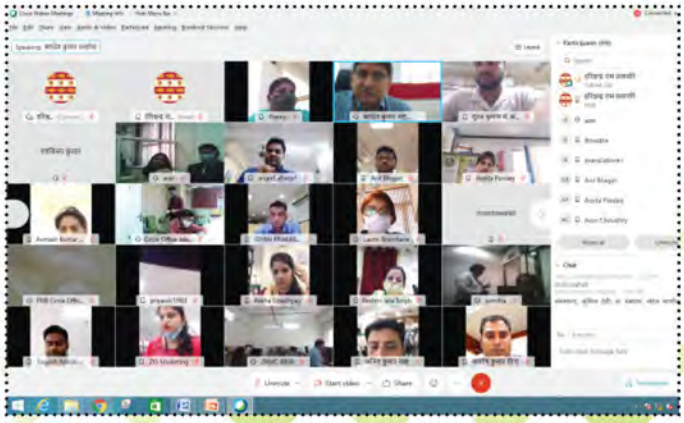

प्रधान कार्यालय द्वारा.'ग' क्षेत्र के लिए रिपोर्टिंग प्रणाली पर आयोजित ई–कार्यशाला में उपस्थित अचंल व मंडल के राजभाषा अधिकारी।

बैंक की राजभाषा गतिविधियां

मंडल कार्यालय, फाजिल्का में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की मार्च तिमाही की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मंडल प्रमुख श्री नरेश नागपाल।

जयपुर–सीकर मंडल कार्यालय में आयोजित "राजभाषा कार्यान्वयन समिति की मार्च तिमाही बैठक" की अध्यक्षता करते हुए मंडल प्रमुख श्री ए.के. सौगानी।

मंडल कार्यालय, अयोध्या/फैजाबाद द्वारा "राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय से प्राप्त निर्देशों एवं राजभाषा तिमाही प्रगति रिपोर्ट" विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंडल प्रमुख श्री के. एल. बैरवा एवं उप मंडल प्रमुख श्री एन. बी. तिवारी, मुख्य प्रबंधक, श्री अविनाश कुमार श्रीवास्तव एवं प्रमोद कुमार, शाखा प्रमुख तथा श्री संतोष कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा उपस्थित रहे।

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, राउरकेला में विविध क्षेत्रों में बैंक की भूमिका को बताते हुए विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, राउरकेला के संकाय श्री विवेक झा तथा एसटीसी, राउरकेला के मुख्य संकाय श्री ओंकार कुमार तथा शाखाओं के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

श्री बी. पी. राव, मंडल प्रमुख, नागपुर की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर मंड़ल की मार्च तिमाही बैठक संपन्न हुई। इस बैठक में नागपुर मंडल कार्यालय के सभी कार्यात्मक प्रबंधकों के साथ नगर के शाखा प्रमुख उपस्थित रहे।

मंडल कार्यालय मुजफ्फरपुर द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित मंडल प्रमुख श्री अभिजीत सिन्हा, मुख्य प्रबंधक श्री अनिल कुमार व अन्य स्टाफ सदस्यगण उपस्थित रहे।

कंठस्थ– मैमोरी आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर

केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी को सरल, सहज, और लोकप्रिय बनाने के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन–प्रतिदिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। माननीय प्रधानमंत्री जी के **"आत्मनिर्भर भारत" स्थानीय के लिए मुखर हो** (Self Reliant India& Be Vocal for local) के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, द्वारा सी–डेक, पुणे के सौजन्य से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ–साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित हो।

'कंठस्थ' ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित अनुवाद टूल है इसके माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में मशीनी अनुवाद संभव है। यह टूल गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर https://kanthasth&rajbhasha.gov.in या Rajbhasha.gov.in > Home Page > Hindi e tools > kanthasth memory based translation software पर उपलब्ध है।

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन–साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः–प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य डेटाबेस से मिलता जुलता हो तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को स्टोर की गई मेमोरी से लाता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी डेटाबेस बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उनके अनुवादित वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम. का डेटाबेस उतरोत्तर बढ़ता रहता है।

सिस्टम की मुख्य विशेषताएं:

- लोकल एवं ग्लोबल अनुवाद मेमोरी बनाना
- वर्क–फ्लो संयोजन
- अनुवाद के लिए टी.एम. से पूर्ण मिलान
- अनुवाद के लिए टी.एम. से आंशिक मिलान
- पैकेज, प्रोजेक्ट एवं फाईल को बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- अनुवादित फाइल का विश्लेषण – अनुवादित फाइलों की संख्या, पूर्ण एवं आंशिक रूप से मिले हुए वाक्यों की संख्या, प्राप्त/अप्राप्त शब्द इत्यादि की रिपोर्ट
- एक समय–विशेष में बनाए गए पैकेज, प्रोजेक्ट तथा अनुवाद की गई फाइलों की रिपोर्ट
- शब्दकोश संयोजन
- वाक्यांश खोज
- गुणवत्ता निर्धारक मानदंड
- द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड एवं अपलोड करना
- विभिन्न फाइल एक्सटेंशन को समर्थन
- फाइल फॉर्मेट को यथावत रखना

निःस्वार्थ

शहनाज़
शाखा सुलतानपुर लोधी
मंडल कार्यालय - कपूरथला

ਕਭੀ ਵਕ਼ਤ ਮਿਲੇ ਤੋ ਗੌਰ ਫਰਮਾਨਾ,
ਕਜ਼ੂੰ ਪੰਛੀ ਆਸਮਾਨ ਮੈਂ ਹੀ ਉਡਤੇ ਹੈਂ ?
ਹਵਾਓਂ ਕਿ ਕੋਈ ਦਿਸ਼ਾ ਕਜ਼ੂੰ ਹੋਤੀ ਹੈ ?

ਕਜ਼ੂੰ ਸਿਰਫ ਮਾਂ ਹੀ ਮਾਂ ਹੋਤੀ ਹੈ ?
ਕਜ਼ੂੰ ਮਰਹਮ ਮੇਂ ਹੀ ਪ੍ਰੇਮੀ ਕਿ ਜਾਂ ਹੋਤੀ ਹੈ?

ਤੋਂ ਤੁਮੇਂ ਭੀ ਸਮਝ ਆਏਗਾ ਕਿ ਕੁਛ ਬਾਤੇਂ
ਬੇਵਜ੍ਹਾ ਹੋਤੀ ਹੈਂ ਪਰ ਸਕੁਨ ਦੇਤੀ ਹੈਂ

ਇਕ ਚਿੜੀਆਂ ਆਸਮਾਨ ਮੈਂ ਕਯਾ ਮਹਿਸੂਸ ਕਰਤੀ ਹੈ ?
ਸ਼ਾਇਦ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਜਾਨਤਾ ਪਰ ਵੋ ਹਵਾਉਂ ਕੇ

ਆਗ਼ੋਸ਼ ਮੇਂ ਖੁਸ਼ ਨਜ਼ਰ ਆਤਿਨ ਹੈਂ ....ਹੈ ਨਾ ?

ਤੋਂ ਆਜ ਕੇ ਬਾਅਦ ਮੁਝਸੇ ਮਤ ਪੁੱਛਨਾ ਕਿ ਮੁਝੇ ਇਸ
ਇਕਤਰਫ਼ੀ ਮੋਹਬਤ ਨੇ ਕਿਆ ਦੀਆ ਹੈ ?

ਬੇਵਜ੍ਹਾ ਹੀ ਸਹੀ ਪਰ ਮੈਂ ਕੁਛ ਖ਼ਵਾਬੋਂ ਔਰ ਯਾਦੋਂ ਕੀ
ਬਾਹੋਂ ਮੈਂ ਖੁਦ ਕੋ ਮਿਲਤੀ ਹੂੰ , ਔਰ ਕਹੀਨ ਨਹੀਂ |

ਉਸਕੇ ਸਾਥ ਭੀ ਨਹੀਂ .....

कभी वक्त मिले तो गौर फरमाना,
क्यों पंछी आसमान में ही उड़ते हैं?
हवाओं की कोई दिशा क्यों होती है?

क्यों सिर्फ माँ ही माँ होती है?
क्यों मरहम में प्रेमी की जा होती है?

तो तुम्हें भी समझ आएगा की कुछ बातें,
बेवजह होती हैं पर वो सकून देती हैं

एक चिड़िया आसमान में क्या महसूस करती है?
शायद कोई नहीं जानता पर वो हवाओं के

आगोश में खुश नज़र आती है..... है ना ?

तो आज के बाद मुझसे मत पूछना कि मुझे इस
इकतर्फी मोहब्बत ने क्या दिया है?

बेवजह ही सही पर मैं ख्वाबों और यादों की
बाहों में खुद को मिलती हूँ और कहीं नहीं

उसके साथ भी नहीं.....

(हिन्दी अनुवाद)

पुराना घर

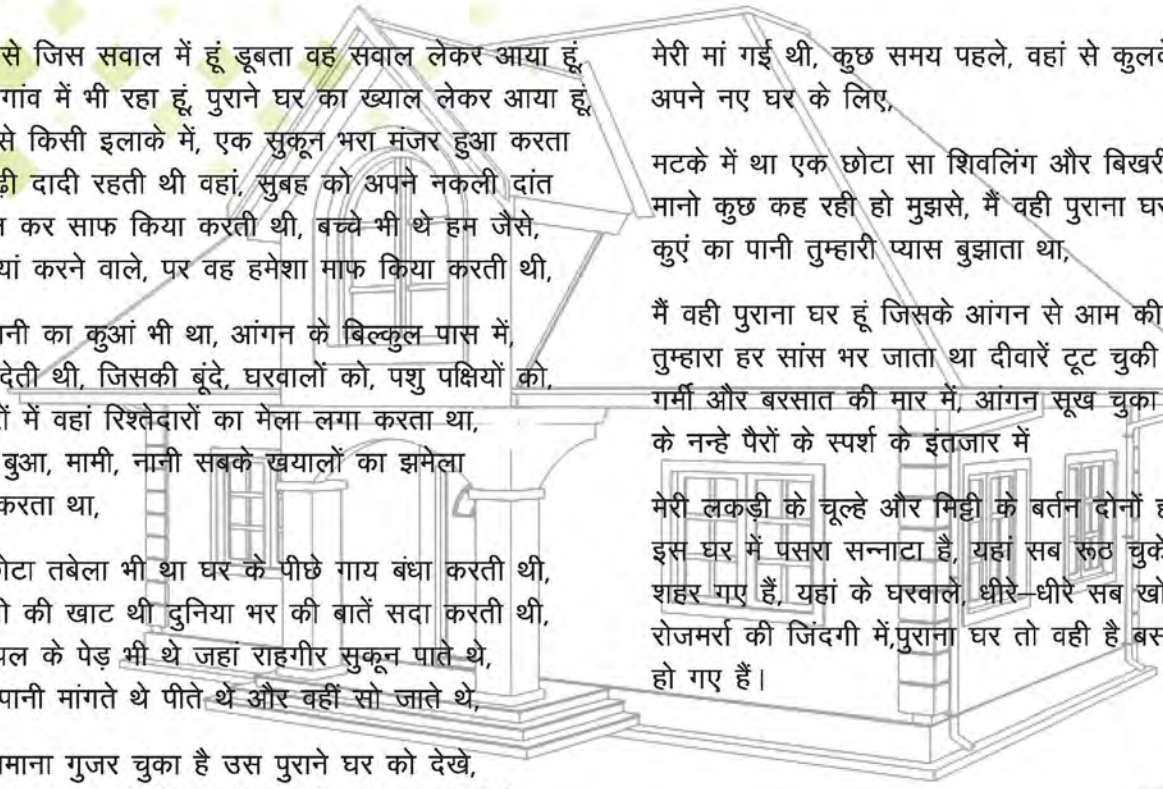

बरसों से जिस सवाल में हूं डूबता वह सवाल लेकर आया हूं,
अजी, गांव में भी रहा हूं, पुराने घर का ख्याल लेकर आया हूं,
सुदूर से किसी इलाके में, एक सुकून भरा मंजर हुआ करता था, बूढ़ी दादी रहती थी वहां, सुबह को अपने नकली दांत निकाल कर साफ किया करती थी, बच्चे भी थे हम जैसे, गलतियां करने वाले, पर वह हमेशा माफ किया करती थी,

एक पानी का कुआं भी था, आंगन के बिल्कुल पास में,
राहत देती थी, जिसकी बूंदे, घरवालों को, पशु पक्षियों को,
त्योहारों में वहां रिश्तेदारों का मेला लगा करता था,
चाची, बुआ, मामी, नानी सबके खयालों का झमेला सजा करता था,

एक छोटा तबेला भी था घर के पीछे गाय बंधा करती थी,
दादाजी की खाट थी दुनिया भर की बातें सदा करती थी,
दो पीपल के पेड़ भी थे जहां राहगीर सुकून पाते थे,
हमसे पानी मांगते थे पीते थे और वहीं सो जाते थे,

एक जमाना गुजर चुका है उस पुराने घर को देखे,
एक सदी बीत चुकी है उसके वास्तविक मंजर को देखे,
मेरी मां गई थी, कुछ समय पहले, वहां से कुलदेवी को लाने,
अपने नए घर के लिए,

मटके में था एक छोटा सा शिवलिंग और बिखरी सी मिट्टी,
मानो कुछ कह रही हो मुझसे, मैं वही पुराना घर हूं जिसके कुएं का पानी तुम्हारी प्यास बुझाता था,

मैं वही पुराना घर हूं जिसके आंगन से आम की खुशबू से तुम्हारा हर सांस भर जाता था दीवारें टूट चुकी है मेरी, सर्दी, गर्मी और बरसात की मार में, आंगन सूख चुका है मेरा, बच्चों के नन्हे पैरों के स्पर्श के इंतजार में

मेरी लकड़ी के चूल्हे और मिट्टी के बर्तन दोनों ही टूट चुके हैं, इस घर में पसरा सन्नाटा है, यहां सब रूठ चुके हैं, जब से शहर गए हैं, यहां के घरवाले, धीरे–धीरे सब खो गए हैं, इस रोजमर्रा की जिंदगी में,पुराना घर तो वही है बस हम परदेसी हो गए हैं।

निखिल राज
अधिकारी
शाखा:- रिंग रोड, सूरत

जीवन का संदेशा

मन कहता है, वह कहने दो,
जीवन बहता है, बहने दो।
मन रखो सागर सा शांत,
पर जीवन रखो लहरों सा चंचल।

जीवन एक ही है, जी लो इसे जी भरके,

ये जीवन है, कोई वीडियो गेम नहीं
कि मर जाओ तो दो लाइफ और मिल जाएं।

मैं कहता हूँ खुद को भी कभी महसूस करना सी
कुछ रौनकें खुद से भी हुआ करती हैं जनाब।

मत टोको, मत रोको,
आज व्यर्थ की चिंताओं से पथ स्वयं का मत रोको।

जो करना है, आज ही करलो,
कल को किसने देखा,
आया हूँ लेकर मैं जीवन का ये संदेशा।।

राजेश गोयल
मुख्य प्रबन्धक
मंडल कार्यालय, सूरत

हमें गर्व है

सुश्री आकांक्षा चौधरी हमारे बैंक के अंचल कार्यालय, मेरठ के अंतर्गत शाखा कार्यालय, बिजनौर में कार्यरत स्टाफ सदस्य हैं जो बैंक स्टाफ होने के साथ–साथ एक प्रतिष्ठित शूटर भी हैं। उन्होंने अपनी इस प्रतिभा को अनेक बार साबित भी किया है। श्री योगी आदित्यनाथ, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश द्वारा इन्हें उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च अवार्ड "रानी लक्ष्मी बाई पुरस्कार" से सम्मानित किया तथा बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया।

शूटिंग के क्षेत्र में सुश्री आकांक्षा चौधरी द्वारा कई कीर्तिमान स्थापित किए गए हैं, जिनमें से कुछ विशेष का उल्लेख निम्नानुसार है:–

पुरस्कार

1. जनवरी 2021 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा खेल के क्षेत्र में दिए जाने वाले सर्वोच्च पुरस्कार रानी लक्ष्मी बाई अवार्ड से माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सम्मानित किया गया।
2. 16 जनवरी, 2020 को 23वें नैशनल यूथ फेस्टिवल में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
3. दिसंबर, 2018 को माननीय राज्यपाल, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य स्तरीय सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब दिया गया।

राष्ट्रीय खेलों में पुरस्कार

1. तृतीय प्री–उत्तर प्रदेश स्टेट शूटिंग कम्पीटीशन (2016) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
2. 39वें उत्तर प्रदेश स्टेट शूटिंग चैम्पियनशिप कम्पीटीशन (2016) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
3. 26वें अखिल भारतीय जी. वी. मावलंकर शूटिंग चैम्पियनशिप कम्पीटीशन राईफल पिस्टल (2016) में रजत पदक प्राप्त किया।

बैंक की स्टाफ सदस्य सुश्री आकांक्षा चौधरी, पैरा शूटर को सम्मानित करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार तथा श्री विजय दुबे, एवं श्री अज्ञेय कुमार आजाद मुख्य सर्तकता अधिकारी श्री विजय कुमार त्यागी एवं मुख्य महाप्रबंधक श्री विवेक झा।

4. 60वें नैशनल शूटिंग चैम्पियनशिप कम्पीटीशन (2017) में रजत पदक प्राप्त किया।
5. 17वें कुमार सुरेन्द्र सिंह मेमोरियल शूटिंग चैम्पियनशिप (2017) में रजत पदक प्राप्त किया।
6. 61वें नैशनल शूटिंग चैम्पियनशिप कम्पीटीशन (2017) में रजत पदक प्राप्त किया।
7. 18वें कुमार सुरेन्द्र सिंह मेमोरियल शूटिंग चैम्पियनशिप (2018) में रजत पदक प्राप्त किया।
8. 62वें नैशनल शूटिंग चैम्पियनशिप कम्पीटीशन (2018) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
9. 19वें कुमार सुरेन्द्र सिंह मेमोरियल शूटिंग चैम्पियनशिप (2019) में रजत पदक प्राप्त किया।
10. 63वें नैशनल शूटिंग चैम्पियनशिप कम्पीटीशन (2020) में कांस्य पदक प्राप्त किया।
11. प्रथम नैशनल शूटिंग चौम्पियनशिप कम्पीटीशन फरीदाबाद हरियाणा में रजत पदक प्राप्त किया।

अपने शौर्य एवं लगन के दम पर उन्होंने अनेक बार अपना तथा अपने बैंक का नाम रोशन किया है। पीएनबी परिवार इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

सुश्री पूजा गुप्ता, वरिष्ठ प्रबंधक एमसीसी शाखा चंडीगढ़, ने मार्च 2021 में विशाखापट्टनम में आयोजित पाचवी बोक्किया प्रतियोगिता (दिव्यांगजनों के लिए विशेष प्रतियोगिता) में अखिल भारतीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया।

'सेवा कैफे' (Seva Café)

मनीष पासवान
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

स्वादिष्ट खाना हर किसी को पसंद होता है। तभी लोग अक्सर अच्छे होटल, रेस्त्रां और कैफे की तलाश में रहते हैं, लेकिन रोज–रोज बाहर का खाना–खाना कई बार जेब पर भारी पड़ जाता है। क्योंकि अच्छे रेस्टोरेंट या कैफे में मनपसंद खाना खाने के लिए आपको अच्छा खासा अमाउंट चुकाना पड़ता है। मगर अहमदाबाद (Ahmedabad) में एक ऐसा अनोखा कैफे (Unique Cafe) है, जहां आप बिना बिल की टेंशन के जी भरकर खाना खा सकते हैं। मजेदार बात यह है कि इसके लिए आपको बिल अपनी मर्जी से चुकाने की आजादी होगी। यानी आप चाहे 500 रुपए का खाना खाएं या 1000 रुपए का, लेकिन बिल कितना देना है ये आप खुद तय कर सकेंगे।

दरअसल इस अनोखे रेस्टोरेंट का नाम है 'सेवा कैफे' (Seva Café)। यह कैफे अन्य कैफे से बिल्कुल हटकर है। यहां न सिर्फ आपको टेस्टी खाना मिलेगा, बल्कि आपको बिल की भी चिंता करने की जरूरत नहीं होगी। **क्योंकि यहां गिफ्ट इकॉनमी (Gift Economy) का चलन है। इसके तहत आपके खाने का बिल कोई दूसरा व्यक्ति पहले ही दे चुका होता है।** ऐसे में आप जब यहां खाना खाने आएं तो आप अपनी मर्जी के अनुसार किसी दूसरे शख्स का बिल भर दें। इस तरह से किसी के पॉकेट पर ज्यादा बोझ नहीं पड़ेगा।

अहमदाबाद सेवा कैफे की स्थापना वर्ष 2006 में मानव साधना एन.जी.ओ द्वारा जॉन सिल्लिफंट तथा जायेश पटेल द्वारा की गई थी। आप विश्वास नहीं करेंगे कि देश में एक ऐसा भी रेस्टोरेंट (Restaurant) है, जहां पर आप फ्री में नॉर्मल रेस्टोरेंट की तरह ही मेन्यू से फूड ऑर्डर कर अलग–अलग तरह के व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं। जब आपको बिल (Bill) देने की बारी आती है तो आपके टेबल पर एक खाली लिफाफा (Empty Envelope) रख दिया जाता है। इस लिफाफे में खाने का बिल नहीं होता, बल्कि आपके नाम से किसी ने पहले ही खाना का

बिल पे कर दिया है। अब आपको भी इस गिफ्ट में किसी और के लिए अपनी मर्जी के हिसाब से पैसा देना होता है। सोचिए आज के दौर में जहां पर मुनाफा कमाने के लिए कई तरह के हथकंडे अपनाए जाते हैं, वहीं एक रेस्टोरेंट इस तरह की सुविधा लोगों को दे रहा है। गुजरात के अहमदाबाद में 'सेवा कैफे' **(Seva Café)** इसी तरह ही लोगों को खाना खिला रहा है। इस रेस्टोरेंट में आप खाना जितना खाना चाहें खा लें, लेकिन बिल आप अपनी मर्जी के हिसाब से दे सकते हैं। कोई भी व्यक्ति इसलिए काम करता है, क्योंकि उसको मुनाफा कमाना होता है। लेकिन, सेवा कैफे एक अलग तरह का रेस्टोरेंट है, जहां पर सेवा भाव को ही धर्म माना जाता है। पिछले 14 सालों से यह रेस्टोरेंट गिफ्ट इकॉनमी पर चल रहा है। ये गिफ्ट इकॉनमी क्या है तो आपको बता दें कि गिफ्ट इकॉनमी में आपको खाना खाने के बाद बिल पे नहीं करना होता है, क्योंकि आपका बिल कोई पहले ही दे चुका होता है. अब आपको भी किसी दूसरे कस्टमर के लिए अपने मर्जी के हिसाब से गिफ्ट पे करना होता है। आप

जितना मन करे कैफे को गिफ्ट कर सकते हैं। यह चेन पिछले कई सालों से ऐसे ही चला आ रहा है।

कैफे एनजीओ के द्वारा चलाई जा रही है:–

यह कैफे मानव सदन और स्वच्छ सेवा सदन एनजीओ द्वारा चलाई जा रही है। पिछले 14 सालों से यह कैफे पे–फॉरवर्ड मेथड या गिफ्ट इकॉनमी मॉडल फॉलो करती है। **गुरुवार से रविवार शाम 7 बजे से 10 बजे तक या फिर जब तक 50 गेस्ट पूरे न हो जाएं तब तक यह कैफे खुला रहता है।** महीने के अंत में आमदनी और खर्च का हिसाब–किताब किया जाता है। महीने के अंत में जो आमदनी होती है वह चैरिटी के फंड में जाता है।

वॉलेंटियर की मदद से चलता है रेस्टोरेंट:–

बता दें कि यह कैफे पूरी तरह से वॉलेंटियर की मदद से चलता है। छात्र से लेकर प्रोफेशनल यहां तक कि टूरिस्ट भी इस कैफे में फ्री में काम करते हैं। आप यहां पर वॉलेंटियरिंग करना चाहें तो इस कैफे में अपना हुनर दिखा सकते हैं। आप

खाना बनाने के शौकीन हैं तो कुकिंग कर सकते हैं। आपको खाना सर्व करने का मन है तो आप खाना सर्व कर सकते हैं। अगर आपको बर्तन अच्छे से धोना आता है तो आप बर्तन भी धो सकते हैं। सेवा कैफे के प्रबंधक कहते हैं, 'सेवा कैफे एक विचार है जहां पर वॉलेंटियर आते हैं और अतिथि देवो भव के भाव से लोगों को खाना खिलाते हैं। अतिथि देवो भव भाव से खिलाए खाने को मूल्य में नहीं आंका जा सकता है'।

महंगाई के इस युग में देश में इस तरह का रेस्टोरेंट होना वाकई में अपने आप में अजीब बात है। सेवा कैफे में अगर आप जाकर सेवा भाव का आनंद लेना चाहते हैं तो आप अहमदाबाद के सीजी हाईवे रोड पर म्युनिसिपल मार्केट के सामने स्थित इस कैफे में जा सकते हैं। इस कैफे में आपको इतनी मेहमान नवाजी मिलेगी की आप अपनी जेब पर काबू नहीं कर पाएंगे। इस कैफे की मेहमान नवाजी की अब पूरे देश में चर्चा शुरू हो गई है।

हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में प्रवासी साहित्यकारों की भूमिका

येनुगुला महेश
अधिकारी - विपणन
मंडल कार्यालय - चेन्नई दक्षिण

किसी भी भाषा, समाज व संस्कृति का ज्ञान उसके साहित्य से होता है। साहित्य व साहित्यकार भाषा, समाज व संस्कृति को आगे बढ़ाते हैं। साहित्य व साहित्यकारों का हिन्दी भाषा को विकसित व समृद्ध करने में विशेष योगदान है। अमीर खुसरो, विद्यापति, कबीर, सूर, तुलसी से आधुनिक कविता के प्रारम्भ तक आते आते हिन्दी भाषा एक व्यापक रूप धारण कर लेती है। आजादी की लड़ाई से लेकर आज तक साहित्यकारों व पत्र–पत्रिकाओं ने हिन्दी के सामाजीकरण में निरंतर अपना योगदान दिया है। स्वतन्त्रता के साथ–साथ हिन्दी के विकास के योगदान में उदन्त मार्तंड, बंगदूत, सुधारक समाचार, सुधा दर्पण पत्र पत्रिकाओं के संपादक व लेखकों की हिन्दी को भारतव्यापी जनमन की भाषा बनाने में सक्रिय भूमिका रही। भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा इसके युगीन साहित्यकारों की जो विशिष्ट भूमिका रही वो वंदनीय है। पीढ़ी दर पीढ़ी साहित्यकार हिन्दी भाषा के विकास एवं उत्थान में अपना योगदान देते आ रहे हैं। न केवल भारत में रहने वाले साहित्यकार बल्कि दुनियाभर में बसे प्रवासी साहित्यकार भी अपनी मातृभाषा के प्रति अपना उत्तरदायित्व बखूबी निभा रहे हैं।

प्रवासी हिन्दी साहित्य की यह सीमा है कि अधिकांश देशों में इसे पहली पीढ़ी के लोग ही रच रहे हैं। भारत से जाकर विदेशों में प्रवास के दौरान ये लोग अपनी यादों और अनुभवों को सृजनात्मक रूप से सँजो रहे हैं। इनके बाद की पीढ़ी का रुझान हिन्दी साहित्य की ओर नहीं है। वे अंग्रेजी के साथ जर्मन, फ्रेंच आदि पर ज्यादा फोकस कर रहे हैं। पिछले एक डेढ़ दशक में भारतीयों का विदेश जाना कई गुना बढ़ा है, प्रवासी हिन्दी साहित्य में इजाफा इसी का परिणाम है। बीसवीं सदी के पश्चात भारत छोड़ कर विदेशों में बसने वाले भारतीयों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई, जहां कुछ लोग पहले से लेखन कार्यों में लगे हुए हैं। जिस प्रकार हिन्दी कमोवेश विश्व के प्रायः सभी देशों में बोली और समझी जाती है, उसी तरह प्रवासी हिन्दी साहित्य तकरीबन सभी देशों में रचा और पढ़ा जाता है। उषा प्रियंवदा, अभिमन्यु अनंत, सोम वीरा जी जैसे प्रवासियों का हिन्दी साहित्य को अतुलनीय योगदान मिला है। प्रवासी भारतीयों द्वारा हिन्दी में विपुल साहित्य उपलब्ध हैं और निरंतर तैयार हो रहा है। विश्व के सौ से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। प्रवासी भारतीय बच्चे भी विषय चयन में हिन्दी लेने से कतराते नहीं है।

दूर देशों में बसे प्रवासी अपनी मातृभाषा के प्रति आसक्त व अनुरक्त रहते हैं, वहाँ के दूतावास के अधिकारी, प्राध्यापकों व साहित्यकारों के अतिरिक्त आम प्रवासी भी हिन्दी भाषा की हर गोष्ठी, पाठ, कवि सम्मेलन, सामूहिक मिलन समारोह में अपनी भागीदारी निभाते रहे हैं। प्रवासी साहित्यकार केवल साहित्य सृजन करके ही अपनी भाषा के प्रति अपने काव्यों की इतिश्री नहीं कर लेते बल्कि वे अनेक पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन भी कर रहे हैं। वे हिन्दी भाषा और साहित्य पर संगोष्ठी व सम्मेलन कर रहे हैं और इंटरनेट के इस युग में अनेकानेक ई–पत्रिकाओं का भी संचालन कर रहे हैं। प्रवासियों द्वारा प्रकाशित व संचालित की जा रही दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक साहित्य पत्र पत्रिकाओं में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। न्यूजीलैंड से भारत दर्शन, कनाडा से सरस्वती पत्र, साहित्य कुंज, हेल्म, यू.एस.से हिन्दी नेक्स्ट, क्षितीज, संयुक्त अरब अमीरात से अभिव्यक्ति, अनुभूति,

अमेरिका से अन्यथा, हिन्दी परिचय पत्रिका, गर्भ नाल पत्रिका आदि पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। इन पत्र–पत्रिकाओं में कविता, नाटक, कहानी, समाचार, भेंटवार्ता, गजल, संस्मरण, मुक्तक, निबंध, व्यंग रिपोतार्ज आदि सभी विधाओं का संकलन होता हैं।

जब से वेब पत्रिकाओं के ब्लाग्स का चलन हुआ, तब से प्रवासी साहित्यकारों को भी खुला मंच मिल गया व विश्वव्यापी पाठकों तक पहुँचने का सीधा, सुगम सस्ता रास्ता भी मिल गया। ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, सहित खाड़ी देशों से भी प्रवासी साहित्यकार तेजी से उभर कर सामने आए जो साहित्य की हर विधा में उत्कृष्ठ रचनाएँ दे रहे हैं। ब्रिटेन के प्रमुख प्रवासी साहित्यकार टेजेंद्र शर्मा, गौतम सचदेव, ज़किया जुबेरी, तितिक्षा शाह, अचला शर्मा, तोशी अमृता, दिव्या माथुर, प्रतिभा डाबर, प्राण शर्मा, भारतेन्दु विमल, महावीर शर्मा, डॉ. महेंद्र वर्मा, उषा राजे सक्सेना, सहित कई अन्य नाम हैं जो हिन्दी भाषा में साहित्य रचनाकारों में अग्रणी हैं।

उसी तरह अमेरिका के प्रवासी रचनाकारों द्वारा भी हिन्दी साहित्य को एक नया स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। उषा प्रियंवदा, सोमा वीरा, सुनीता जैन के नाम प्रवासी साहित्य के जगत में ही नहीं, बल्कि अखिल हिन्दी साहित्य में भी एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। इन्होंने अपनी उत्कृष्ट लेखनी से अमेरिकी प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवधारणा पेश की। उमेश अग्निहोत्री, अनिल प्रभा कुमार, कमला दत्त, वेद प्रकाश बटुक, मधु माहेश्वरी, मिश्रीलाल जैन, सुधा ओम ढींगरा, अशोक कुमार सिंह, सहित कम से कम सौ से अधिक रचनाकारों ने पाठक एवं लेखक दोनों समुदायों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। वहीं कनाडा के प्रवासी हिन्दी लेखक भी कहीं कम नहीं हैं। प्रोफेसर अश्विनी गांधी, सुमन कुमार घई, सुरेश कुमार गोयल इनका भी हिन्दी साहित्य को अविस्मरणीय योगदान है। खाड़ी देशों के प्रवासी साहित्यकार अशोक कुमार श्रीवास्तव, उमेश शर्मा, विद्याभूषण धर, कृष्ण बिहारी, दीपक जोशी, रामकृष्ण द्विवेदी आदि साहित्यकार हिन्दी साहित्य को अपना योगदान दे रहे हैं। विदेशों में मुश्किलों व चुनौतियों के सामने वे हिन्दी भाषा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इस तरह हिन्दी भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में एक विशाल जनमानस की भाषा है।

उषा वर्मा अनेक वर्षों से योर्क विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ाती हैं। इनके चार कहानी संग्रह, अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। भारतीय तथा विदेशी पत्र पत्रिकाओं में ये काफी लिखती रही हैं। वहीं उषा राजे सक्सेना इंग्लैंड को कर्मभूमि बनाकर प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में काफी सक्रिय हैं। इनके साहित्य में भारत, भारत की संस्कृति, सभ्यता और भाषा के हर तरह के अनुभव तथा विचार अभिव्यक्त हैं। इनके दो कविता संग्रह, एक कहानी संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। संप्रति, यह ब्रिटेन की पुरवाई नामक पत्रिका की संपादक हैं। लंदन में कार्यरत जेनेन्द्र शर्मा हिन्दी धारावाहिक लेखक, कहानीकार और कवि के रूप में विख्यात हैं। इनकी टेम्स का पानी, मेरे पासपोर्ट का रंग, कवितायें काफी चर्चित है। अतः प्रवासी साहित्यकारों द्वारा दिए जा रहे योगदान की अनदेखी नहीं की जा सकती।

खुशबू जैन
वरिष्ठ प्रबन्धक
एमएमसी रोहतक

साजिशों से भरी दुनिया में,
मुझे दुनियादारी नहीं आती।
सच को छुपाने की मुझको,
क्यों कलाकारी नहीं आती।।

दूसरों को दबाना नहीं सीखा,
बेवजह दब जाना नहीं सीखा।
अंदर से कुछ बाहर से कुछ,
वो अदाकारी नहीं आती।
लोग क्यों अपना बनाकर हमे,

धोखा ऐसे दे जाते हैं
शायद इसलिए मैं पीछे हूँ, ये

होशियारी नहीं आती।
पत्थर दिल हुआ ये जहां अब,
क्या सोचेंगे किसे और कब
जिसमें केवल मेरा हो भला,
वो समझदारी नहीं आती।

भला सुर्खियों में होने लगी,
बदनाम मैं कहीं कहीं
बेशक वफादार न समझो मुझे,
मगर गद्दारी नहीं आती।।

मानवता

कमलेश मनचन्दा
आर सी सी चंडीगढ

जब जब आदमी में अहंकार, धन के प्रति लिप्सा,
ऊंच नीच, छोटे बड़े की बनी खाई है।
तब–तब प्रकृति ने उसे उसकी औकात दिखाई है।

समय–समय पर दिए हैं
छोटे–छोटे झटके, ताकि संभल सके
धरती पर रहें, आसमान में न लटके,
इन झटकों ने यह भी दिखाया,
जो माटी का आदमी था, माटी पे रहा,
भूकंप भी उसका बाल बांका नहीं कर पाया।

जमीन के बिछौने, आकाश की चादर ओढ़ कर सोने वाला,
एक भी व्यक्ति नहीं मरा,
जो जितनी ऊंची अट्टालिका पे था,
उतनी ही तीव्रता से गिरा
और अपनी ही बनाई हुई कब्र में घिरा,
भूकंप से या धरती फटने से एक भी आदमी नहीं मरा,
यह तो प्रकृति ने सिद्ध कर दिया है कि
हर आदमी समान है, फिर काहे का अभिमान है।

रे मानव, इस क्षण भंगुर जीवन को, प्यार प्रीत से काट,
मत बाँट धरती, दौलत पैसा, मगर प्यार तो बाँट,
किसके लिए मारामारी, धन दौलत चोर बाजारी,
सब तो यहीं रह जाएगा,
खाली हाथ आया है खाली हाथ जाएगा,
रह जाएगा तो केवल नाम व अमरता
और अमरता का धन दौलत व
संतति से नहीं है कोई रिश्ता,
अमरता दिलाएगी मानवता, मानवता सबसे बड़ा कर्म है,
धर्म है और यही जीवन का सच्चा मर्म है।

वक्त का पहिया

मेघमाला पति
वरिष्ठ बंधक
अंचल कार्यालय, भुवनेश्वर

लगता है कुदरत का कहर,
सब तबाह कर देने को आतुर
पर अब सब कुछ शांत है

सपने कईयों के टूटें और टूटे दिल भी
साथ भी छूटे कईयों के और छूटे आस भी!

आज भरोसे ने भी दम तोड़े,
आज रिश्तों ने भी दम तोड़े
और साथ छोड़े अपनों ने भी !

तु भी खामोश है और मैं भी,
तु भी वही है और मैं भी
पर आज वक्त न रहा वही!

फिर भी जीने की एक आस है
क्यूंकि तू सब से खास है,
आज भी सिर्फ तू ही बसा है दिल में।

वक्त एक बार फिर हमारा होगा,
सब कुछ छोड़ के साथ तेरा हमारा होगा
तूफान से भी टकराके तुझे आना होगा।

तेरे दिल की हर धड़कन पे नाम मेरा होगा
ये आज ना सही, पर ये कल तो हमारा होगा
वक्त को हमारे लिए रुख मोड़ना होगा।

जिस ने दामन छोड़ा था,
उसे ही थामना होगा
वक्त फिर से हमारा होगा।

जिन आँखों में आज आंसू हैं,
उन आँखों में कल हँसी भी होगी
सपनों से सजा एक जीवन भी होगा।

आज नहीं तो ना सही
कल फिर से वक्त हमारा होगा
फिर से साथ हमारा होगा।।

कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करता हूँ

श्वेता कुमारी
प्रबन्धक(राजभाषा)
अंचल कार्यालय ,गुवाहाटी

कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करता हूँ,
सीने पर लगा के पहचान पत्र सुनी सड़कों पर निकलता हूँ
पूछे कोई तो कहता हूँ "एसेंशियल सर्विस" को जाता हूँ
सीना चौड़ा हो जाता है, जब डट के खड़ा हो जाता हूँ

कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करता हूँ,
नहीं दिया कोई वचन अग्नि को साक्षी मान के
नहीं लिया कोई औपचारिक शपथ तुझ पर न्योछावर हो जाने को
फिर भी देख संकट के बादल माता तेरा सपूत जाग जाता है

दुश्मन कोरोना हो या डरावना हो तेरा सपूत लड़ जाता है
कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करता हूँ,
नहीं खड़ा हूँ सीमा पर न लंबा चौड़ा सीना है
न अस्त्र शस्त्र हैं हाथों में न फौलादी भुजाएं हैं?

फिर भी संकल्पित तेरे लिए हर एक श्वास हमारा है
कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करता हूँ,
बस संकल्पित हूँ माता तेरे संकट हरने को
हूँ तो बैंकर पर समय आने पर सिपाही बन जाता हूँ

कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करना फर्ज हमारा है,
कुछ इस तरह तेरा कर्ज अदा करना फर्ज हमारा है

प्रकृति से प्यार

सरिता दुबे
प्रबंधक
शाखा- रेंगाली
मंडल कार्यालय, संबलपुर

हाँ थोड़ी सी पगली हूँ मैं!
क्योंकि प्रकृति से प्यार करती हूँ मैं।

बारिश की बूंदों में भी सुरों को सुनती हूँ मैं,
पक्षियों के चहचहाट में धुनों को बुनती हूँ मैं।

हाँ थोड़ी सी पगली हूँ मैं
क्योंकि प्रकृति से प्यार करती हूँ मैं।

कौन कहता है तनहा रहती हूँ मैं,
हवाओं का साथ महसूस करती हूँ मैं।

नदियों के लहरों को जब छूती हूँ मैं,
उनकी खनखनाहट को सुनती हूँ मैं।

हाँ थोड़ी सी पगली हूँ मैं
क्योंकि प्रकृति से प्यार करती हूँ मैं।

शाम के रंगीन बादलों को जब देखती हूँ मैं,
सातरंगों का सपना फिर से संजोती हूँ मैं।

हाँ थोड़ी सी पगली हूँ मैं !
क्योंकि प्रकृति से प्यार करती हूँ मैं।

मैं आरसेटी हूँ

राज कुमार
सीनियर फैकल्टी
पीएनबी आरसेटी, पटना (बिहार)

"ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार" द्वारा संचालित हूँ।
"नेसर" के दिखायें राह पर मैं चलता हूँ।।
देश के "हर जिले" में मिल जाता हूँ।
जिलों के "अग्रणी बैंक" द्वारा आयोजित हूँ।।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।

दिनचर्या अपनी "योग, श्रमदान और प्रार्थना" से करता हूँ।
"उद्यमिता एवं स्वरोजगार" के अलख को जगाता हूँ।।
"बेरोजगार युवक एवं युवतियों" को स्वरोजगार करने की प्रेरणा देता हूँ।
दिमाग में जमे नकारात्मक बातों को, "आइस ब्रेकिंग" से हटाता हूँ।।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।

"मजदूरी, व्यापारी एवं उद्यमी" के फर्क को मैं समझाता हूँ।
उद्यमशील व्यक्तियों के "15 गुणों" को प्रशिक्षुओं को बताता हूँ।।
"सफल उद्यमी की आत्मकहानी" को बताकर प्रशिक्षुओं में आंतरिक स्वप्रेरणा का आलाप जगाता हूँ।
अपने "संवादों" के जरिए, सबको संवाद कला सिखाता हूँ।।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।

आत्मनिर्भर का परिचय देने, "टावर बिल्डिंग" का खेल करता हूँ।
जोखिम लेने की कला, "रिंग टॉस" से सिखाता हूँ।।
रूचि का अवलोकन कर, "सफल तकनीकी प्रशिक्षक" द्वारा कौशल ज्ञान बढ़ाता हूँ।
गुणवत्ता के महत्व को समझाने, "नाव का खेल" करता हूँ।।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।

झिझक सबकी दूर हो जाए, उसके लिए प्रतिदिन "मिली" करता हूँ।
बाजार प्रबंधन में सक्षम बनाने, "4P's" के महत्व को समझता हूँ।।
"बाजारों का सर्वेक्षण" करवाकर, अवसर की तलाश करता हूँ।
"यूनिट विजिट" के माध्यम से प्रशिक्षुओं में जोश जगाता हूँ।।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।

"खाता बही" क्या है? उसमें हिसाब रखने की कला सिखाता हूँ।
मूल्य निर्धारण के लिए "लागत" की बात बताता हूँ।।
उत्पादन की मात्रा तय करने, "BEP" का पाठ पढ़ाता हूँ।
"कार्यशील पूंजी के प्रबंधन" को समझाकर, उद्यम स्वस्थ मैं रखता हूँ।।
"समय प्रबंधन" की याद दिला, मैं आलस्य भी दूर भगाता हूँ।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।।

"बैंकिंग" के मुद्दे पर मैं, खुलकर बात करता हूँ।
अपने प्रशिक्षुओं को, "सॉफ्ट स्किल" भी सीखाता हूँ।।
उद्यम के भविष्य को देखते हुए, "प्रोजेक्ट रिपोर्ट" समझाता हूँ।
अपने गुण को और अधिक बढ़ाने, मैं "फीडबैक" लेता हूँ।।
प्रेरणा हेतु गणमान्य से, "प्रमाण पत्र" दिलवाता हूँ।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।।

यहीं पर खत्म नहीं होता सफर, काम बहुत कुछ और भी करता हूँ।
मार्ग के कांटे को हटाने, "2 वर्षों तक मार्गदर्शन" करता हूँ।।
उद्यम की राह में आर्थिक सहायता हेतु, "ऋण दिलवाने" का प्रयास करता हूँ।
प्रशिक्षु को "रोजगार दिला", उद्यमी के कर्तव्य पूरा करवाता हूँ।।
मैं "आरसेटी" हूँ,
नव–उद्यमी को उद्यम की राह दिखाता हूँ।

बड़ मावस

राजीव लोचन
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, मेरठ

सुनील रोजाना की तरह आज भी बड़े पार्क में साइकिल चलाने जा रहा था। मां ने चलते समय उससे कहा था, आज बड़ मावस है, लौटते समय बड़ की टहनी लाना मत भूलना। मेरा बरत है, पूजा करनी है। सुनील को पता है कि जिस पार्क में वह साइकिल चलाने जाता है उसी में एक वट–वृक्ष लगा हुआ है।

अपनी धुन में मस्त सुनील उस बड़े पार्क की ओर चल दिया। चलते–चलते उसे पिछले साल की बड़–मावस (वट अमावस्या) याद आ गई, जब गर्मियों की छुट्टी में वह माता–पिता के साथ अपने पुश्तैनी गांव गया था। वहां चौराहे पर लगे विशाल वट–वृक्ष पर सुबह से ही महिलाओं की चहल–पहल थी। मां और दादी भी वहां वट–अमावस्या की पूजा करने गईं थीं। वह भी तो अपनी मां का हाथ थामे–थामे महिलाओं की भीड़ में जा खड़ा हुआ था। दादी ने जल, मौली–रोली, कच्चे सूत, चने, फल–फूल, धूप–दीप और न जाने कितने सामग्री से उस वट–वृक्ष की पूजा की थी। महिलाओं ने वट की परिक्रमा करके उस पर कच्चा सूत बांधा था। जेठ की तपती धूप में भी उस वट के नीचे कितनी ठंडक थी, जहां बैठकर गांव की उन महिलाओं ने दादी से सावित्री–सत्यवान की कथा सुनी थी। सुनील भी अपनी मां का हाथ थामे सब कुछ देख–सुन रहा था। कैसे सावित्री के कठोर तप से प्रसन्न होकर यमराज ने उसके पति सत्यवान के प्राण लौटाए थे।

सुनील को याद है कि पिछले वर्ष बरसात में जब गांव में बाढ़ आई थी तो उसमें गांव में जान–माल और फसल को भारी नुकसान हुआ था किंतु वह विशाल वट–वृक्ष जहां का तहां डटा रहा था, उस पर तनिक भी आंच न आई थी। न जाने कितने पक्षियों ने उस पर अपना आशियाना बना लिया था। इस साल तो पिताजी को छुट्टी नहीं मिली, जिस कारण सुनील गांव न जा सका था।

इन्हीं यादों में खोए हुए वह पार्क में लगे एक वट–वृक्ष तक जा पहुंचा। यहां देखा तो उसके कदम ठिठक गए, लोग लाठी–डंडों से उस वट की टहनियां–पत्ते तोड़ रहे थे, कुछ बच्चे तो टहनियां तोड़ने के लिए वट के पेड़ पर ही चढ़े हुए थे। न जाने कितनी टूटी हुई पत्ती–टहनियां यहां–वहां बिखरी पड़ी थीं। सुनील एक पल को समझ न पाया कि क्या हुआ है, लोग क्यों इस तरह वट–वृक्ष को तहस–नहस करने पर उतारू हैं, उसने सामने खड़े एक आदमी से पूछा, क्या हुआ अंकल, ये लोग इस तरह पेड़ को क्यों तोड़ रहे हैं। आज बड़–मावस है न बेटा सभी को पूजा के लिए बड़ की टहनी चाहिए, यह कहते हुए वह व्यक्ति भी झपट कर दो–तीन टहनियां उठा कर चलता बना। सुनील का मन भर आया, हम पेड़ों की पूजा करने के लिए उन्हें ही उजाड़ रहे हैं, यह कैसा चलन, कैसी संस्कृति है। निराश मन से वह घर की ओर चल दिया।

सुनील की राह तकती मां बालकनी में आ खड़ी हुई थी। बेटे के हाथ में बड़ की टहनी न देख वहीं से आवाज लगाई, अरे तुझे एक काम बताया था, वह भी भूल गया। नहीं मां भूला नहीं हूं, देखो मैं क्या लाया हूं, एक तुलसी का पौधा मां की तरफ बढ़ाते हुए सुनील बोला। मां हम यदि शहर में रहकर बड़े वट पर पूजा करने नहीं जा सकते तो क्या, हम अपनी क्यारी में तो छोटे–छोटे पौधे लगा ही सकते हैं ना। पार्क में लोगों के द्वारा वट–वृक्ष को उजाड़ते देख मां मेरा मन न हुआ कि मैं भी उसी उत्पाती भीड़ का हिस्सा बन जाऊं, मेरी हिम्मत ही न हुई कि मैं भी उस बेचारे पेड़ को नुकसान पहुंचाऊं। मुझे माफ करना मां, मैं तुम्हारी पूजा के लिए बड़ की टहनी न ला सका।

बैंकिंग अपडेट

हरिश्चन्द्र राम
प्रबन्धक-राजभाषा
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

1. भारतीय रिजर्व बैंक ने देश भर में डिजिटल/कैशलेस भुगतान की स्थिति के अध्ययन का पता लगाने के लिए एक समग्र **डिजिटल भुगतान सूचकांक (Digital Payment Index)** लांच किया है। इसके पाँच मुख्य पैरामीटर हैं।

2. आईडीबीआई बैंक ने बचत बैंक खातों के लिए वीडियो केवाईसी खाता खोलने की सुविधा शुरू करने की घोषणा की है।

3. उत्तर प्रदेश स्थित शिवालिक मर्केंटाइल को–ऑपरेटिव बैंक भारत का पहला ऐसा शहरी सरकारी बैंक बन गया है जिसने आरबीआई से स्मॉल फाइनेंस बैंक का संचालन करने का लाइसेंस प्राप्त किया है।

4. आरबीआई ने आरटीजीएस व एनईएफटी के माध्यम से संस्थाओं द्वारा किए जाने वाले 50 करोड़ अथवा उससे अधिक के भुगतान के लिए लीगल एंटीटी आईडेनटिफायर की शुरूआत की है। जो 1 अप्रैल, 2021 से लागू है।

5. एक्सिस बैंक ने अपने ग्राहकों के लिए विशेष रूप से किफायती मूल्य पर कई स्वास्थ्य और कल्याण सुविधाओ से लैस एक क्रेडिट कार्ड **AURA** लॉन्च किया है।

6. आरबीआई के पास तीन लोकपाल हैं 1. बैंकिंग 2. गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थान और 3. डिजिटल लेन देन। इन तीनों लोकपाल योजनाओं का विलय कर एक एकल योजना में एकीकृत किया जा रहा है जिसे इस वर्ष जून से शुरू किया जाएगा।

7. आरबीआई ने मामलों की जांच करने और क्षेत्र को मजबूत करने के लिए एक रोड मैप प्रदान करने हेतु प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (UCB) पर आठ सदस्यीय विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। इस समिति की अध्यक्षता भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व डिप्टी गवर्नर एन. एस. विश्वनाथन करेंगे।

8. पंजाब नैशनल बैंक ने अपने क्रेडिट कार्ड व्यवसाय के प्रबंधन के लिए पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी "पीएनबी कार्डस एंड सर्विसेज लिमिटेड" की स्थापना की है "पीएनबी कार्डस एंड सर्विसेज लिमिटेड" को 16 मार्च, 2021 को रजिस्ट्रार ऑफ कम्पनीज दिल्ली द्वारा निगमित किया गया है।

9. भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों से इस वर्ष 30 सितंबर तक सभी शाखाओ में इमेज– आधारित चेक ट्रंकेशन सिस्टम को लागू करने के लिए कहा है। इस कदम का उद्देश्य चेक का तेजी से निपटान करना है, जिससे ग्राहक सेवा बेहतर हो।

10. भारतीय रिजर्व बैंक ने IDBI बैंक को पीसीए ढांचे से हटा दिया है।

11. एक्सिस बैक ने ब्रांड **वियर एन पे** के तहत पहनने योग्य संपर्क रहित भुगतान उपकरणों की एक श्रृंखला शुरू की है। ये डिवाइस बैंड, की चेन और वाच लूप जैसे पहनने योग्य उपकरण के विभिन्न रूपों में आते हैं और 750 रूपये की शुरूआती कीमत में उपलब्ध हैं।

12. विश्व बैंक ने भारत के रूफटॉप सौर कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए 100 मिलियन डालर की क्रेडिट गारण्टी योजना शुरू करने की योजना बनाई है। यह योजना सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को रूफटॉप सौर इकाइयां स्थापित करने के लिए रियायती ऋण वित्त पोषण का लाभ उठाने की अनुमति देगी।

13. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर HDFC बैंक ने बैंक में महिला अधिकारियों द्वारा महिला उद्यमियों को सलाह देने के लिए **SMARTUP UNNATI** नामक एक समर्पित कार्यक्रम शुरू करने की घोषणा की है। इसके तहत अगले वर्ष में HDFC बैंक की वरिष्ठ महिला अधिकारी महिला उद्यमियों को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सलाह देंगी। यह कार्यक्रम केवल मौजूदा ग्राहकों के लिए उपलब्ध है।

14. इलेक्ट्रानिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने **"डिजिटल पेमेंट स्कोर कार्ड"** की सूची जारी की है जिसमे भारतीय स्टेट बैंक ने लगातार तीसरे महीने टॉप किया है। डिजिटल पेमेंट स्कोर कार्ड कई डिजिटल मापदण्डों पर वाणिज्यिक बैंकों के प्रदर्शन को ट्रैक करता है।

15. इंडियन ओवरसीज बैंक ने अपनी बैंकिंग प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए देश में बढ़ती आबादी के लिए अनुकूलित एक बचत खाता **IOB ट्रेंडी** लांच किया है।

विविध गतिविधियां

किसान प्रशिक्षण केंद्र, सच्चाखेडा, जींद के परिसर में गणतंत्र दिवस के अवसर पर पौधारोपण करते हुए मंडल प्रमुख, जींद, श्री दीपक तनेजा।

गणतंत्र दिवस पर अंचल कार्यालय, देहारादून में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित श्री डी.एस. भण्डारी, उप अंचल प्रमुख व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

72 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए अंचल प्रमुख, जयपुर, श्री बी. पी. महापात्र।

नवनिर्मित मंडल कार्यालय जींद के उद्घाटन के अवसर पर ऋण मेला आयोजित किया गया, जिसमें कृषि रिटेल एवं अन्य ऋण मौके पर ही स्वीकृत किए गए।

अंचल कार्यालय, देहारादून द्वारा आयोजित आईओसीएल के साथ "टाइ अप डीलेर्स फाइनेंस मीट" में उपस्थित श्री आर. डी सेवक, अंचल प्रमुख, श्री डी एस भण्डारी, उप अंचल प्रबन्धक व अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

विविध गतिविधियां

बैंक के ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, बदायूँ द्वारा एकमुश्त ऋण मुक्ति शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख (महाप्रबंधक) आगरा, श्री सत्यवान ओहलान एवं बदायूँ मंडल प्रमुख श्री आर के शर्मा, अग्रणी जिला प्रबन्धक श्री परमजीत सिंह व मंडल सस्त्र प्रमुख, विशाल असवाल मुख्य प्रबन्धक, श्री वी के गुप्ता, मुख्य प्रबंधक, रैम (ऋण) प्रमुख श्री श्याम पासवान, श्री दीपक कुमार निदेशक पीएनबी आरसेटी आदि उपस्थित रहे। इस शिविर के आयोजन से लगभग 402 किसानों ने लाभ लिया।

पीएनबी के आंचलिक प्रबंधक सह मुख्य महाप्रबंधक श्री नबीन कुमार दाश ने कोलकाता,पूर्व मंडल कार्यालय का दौरा किया। मंडल कार्यालय, कोलकाता पूर्व के उप–मंडल प्रमुख अंजन चट्टोपाध्याय ने पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर, मंडल प्रमुख, श्री राजेश भौमिक, मुख्य प्रबंधक, श्री मोहम्मद इरशाद, श्री नरेन दत्ता, श्री प्रकाश कुमार एवं श्री बी. के. मिश्रा भी उपस्थित थे।

अंचल कार्यालय जयपुर में आयोजित व्यवसाय समीक्षा बैठक में उत्कृष्ट कार्य करने वाली शाखाओं को प्रमाण–पत्र प्रदान करते हुए जयपुर उप अंचल प्रमुख श्री जी.आर. सोनी एवं जयपुर–सीकर मंडल प्रमुख श्री ए. के. सौगानी।

देहारादून अंचल द्वारा आयोजित "सांस्कृतिक एकीकरण और सदभावना खेलकूद प्रतियोगिता" में अंचल प्रमुख श्री आर. डी. सेवक, उप अंचल प्रमुख श्री डी. एस. भण्डारी सहित देहरादून अंचल की टीम।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

कोविड–19 महामारी के कारण पूरा देश एक बहुत ही कठिन समय से गुजर रहा है। जिसके कारण पूरे देश को बहुत ही कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। इस महामारी ने भुखमरी, बेरोजगारी जैसी बहुत सी समस्याओं को हमारे सामने लाकर खड़ा कर दिया है। इस महामारी के दौरान बहुत से लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है। सभी ने मिलकर इस विकट परिस्थिति का सामना किया तभी हम इस संकट को बढ़ने से रोक पा रहे हैं।

हम महामारी के समय भी पीएनबी ने संपूर्ण देश की जनता को निर्बाध बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं। इस कठिन समय में हमारे बहुत से साथियों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है तथा बहुत से साथियों ने इस समय में अपने परिजनों को भी खोया है। पीएनबी परिवार दुःख की इस घड़ी में शोक संतप्त परिवारों के साथ खड़ा है। पीएनबी प्रतिभा का संपादक मंडल समस्त दिवंगत साथियों/परिजनों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ईश्वर दिवंगत साथियों के परिवारजनों को इस दुखद परिस्थिति का सामना करने की शक्ति प्रदान करे।

ओम शांति

सेवानिवृत्ति

श्री रतन सिंह रोहिल, महाप्रबंधक प्रधान कार्यालय, द्वारका की सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री अज्ञेय कुमार आजाद तथा श्री स्वरूप कुमार साहा।

श्री राजेश कुमार अरोड़ा, महाप्रबंधक प्रधान कार्यालय, द्वारका की सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशकगण श्री संजय कुमार, श्री विजय दुबे, श्री अज्ञेय कुमार आजाद तथा श्री स्वरूप कुमार साहा।

श्री प्रवीन कुमार आनंद, महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय, द्वारका की सेवानिवृति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सीएच. एस. एस. मल्लिकार्जुन राव, कार्यपालक निदेशक श्री विजय दुबे, श्री अज्ञेय कुमार आजाद तथा श्री स्वरूप कुमार साहा।

श्री लाभसिंह श्रेवाल उपमहाप्रबंधक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए अंचल प्रमुख चंडीगढ श्री संदिप कुमार पाणिग्रही।

श्री रमेश गोयल उपमहाप्रबंधक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए अंचल प्रमुख चंडीगढ श्री संदिप कुमार पाणिग्रही।

श्री के सी गगराणी, सहायक महाप्रबंधक अंचल कार्यालय जोधपुर की सेवानिवृत्ति के अवसर पर पुष्प गुच्छ भेंट कर भावभीनी विदाई देते हुए जोधपुर मंडल प्रमुख श्री राजीव महाजन, साथ में दृष्टव्य हैं जोधपुर अंचल प्रमुख श्री अमित कुमार श्रीवास्तव एवं उप–अंचल प्रमुख श्री दिनेश मित्तल।

सेवानिवृत्ति

मंडल कार्यालय, बिहारशरीफ के अंतर्गत मंडल कार्यालय में कार्यरत श्री नगेन्द्र प्रसाद, वरिष्ठ प्रबन्धक को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए मंडल प्रमुख श्री सत्येन्द्र सिंह, तथा उप मंडल प्रमुख श्री अंजन मुखर्जी।

श्री महेश बाबरिया (अधिकारी) शाखा कार्यालय कालावड रोड, मंडल कार्यालय राजकोट, अंचल कार्यालय अहमदाबाद को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए शाखा प्रमुख व अन्य स्टाफ सदस्य।

करेंसी चेस्ट शाखा सीकर के अधिकारी श्री रामदेवाराम बिजराणियाँ को सेवानिवृत्ति पर भावभीनी विदाई देते हुए जयपुर–सीकर मंडल प्रमुख श्री ए. के. सौगानी।

नमन वंदना

हेमन्त कुमार
प्रबन्धक
शाखा कार्यालय, दीपांवली

नमन वंदना करते रहते,
मन्दिर और मस्जिदों में
कभी तो वंदन करके देखो,
दिल की इन कलियारों में

राम मिलेगें, कृष्ण मिलेगें,
और मिलेगा मक्का–काबा
कभी तो वंदन करके देखो,
मेरी प्रियतम प्यारी आभा

नमन वंदना के रूप अनेक,
हाथ जोड़ और हाथ उठाओ
ऐसा वंदन करो कि प्यारे,
सबके हृदय में बस जाओ

वंदन की परिभाषा तो देखो,
बँट रही है धरम जात से
और बाँटते काले गोरे,
रंगो के इस भेद भाव से

ऐसे वंदन की परिभाषा से,
मैं तुम्हें बताने आया हूँ
प्रभु का वंदन किया करो,
मैं तुम्हें जगाने आया हूँ

करते वंदन वीर हमारे,
हिमालय की चोटी पर
अभी भी प्यारे तुम बैठे हो,
एक थाली की रोटी पर

वंदन से माटी खिल उठती,
और खिल जाती फिजाएं
घोर बादलों के घेरों में,
वंदन करती चमकाएँ

ऐसा वंदन करो कि प्यारे,
वंदन घर घर महकाये
लोगों का सद भाव जागे और,
नमन वंदना हो जाये

सामाजिक सुरक्षा का कमाल
सब सुरक्षित और खुशहाल

बैंक के सभी खाताधारकों के लिए उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना:

- दुर्घटना में मृत्यु तथा पूर्ण विकलांगता होने पर ₹. 2 लाख और आंशिक विकलांगता होने पर ₹. 1 लाख का बीमा कवर,
- वार्षिक बीमा प्रीमियम : 12 रूपए
- पंजीकरण की उम्रः 18-70 वर्ष

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना:

- 2 लाख रूपए का जीवन बीमा कवर,
- वार्षिक बीमा प्रीमियम : 330 रूपए,
- पंजीकरण की उम्रः 18-50 वर्ष

अटल पेंशन योजना:

- स्वयं/पति या पत्नी को 60 साल की उम्र से 1000-5000 रूपए तक की मासिक आजीवन निर्धारित पेंशन तथा उसके पश्चात् नामित व्यक्ति को ₹ 1.70 लाख से ₹ 8.50 लाख का एकमुश्त भुगतान।
- पंजीकरण की उम्रः 18-40 वर्ष, (योगदान राशि ग्राहक की आयु और योगदान कटौती की आवृत्ति पर निर्भर करती है)

पंजाब नैशनल बैंक
... भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank
...the name you can BANK upon !

उन्नत किसान खुशहाल देश

कृषि कार्ड

- सभी किसानों के लिए आसान शर्तों पर कृषि कार्ड की सुविधा

डेयरी ऋण

- पशु खरीदन/शेड निर्माण/उपकरण खरीदने हेतु ऋण
- डेयरी से जुड़े रोजमर्रा के खर्चों हेतु केसीसी डेयरी ₹. 2.00 लाख तक ब्याज सबवेंशन की सुविधा के साथ

स्वयं सहायता समूह हेतु ऋण

- कृषि एवं गैर कृषि ऋण कार्यों हेतु ऋण
- महिला समूहों को ब्याज सबवेंशन की सुविधा

आत्मनिर्भर भारत के तहत नई योजनाएं

कृषि अवसरंचना कोष (कृषि इन्फ्रास्ट्रक्चर फण्ड)

- गोदाम, कोल्ड चेन, छंटाई और ग्रेडिंग इकाई, बुनियादी ढांचा प्रबन्धन आदि हेतु ऋण सुविधा
- ₹. 2.00 करोड़ तक ब्याज सबवेंशन व क्रेडिट गारंटी की सुविधा

प्रधानमंत्री एफ.एम.ई. योजना

- मौजूदा सूक्ष्म खाद्य उद्यमों के उन्नयन हेतु ऋण
- 35% का अनुदान (व्यक्तिगत ऋणी हेतु अधिकतम ₹. 10.00 लाख)

पशुपालन बुनियादी ढांचा विकास फण्ड

- डेयरी प्रोसेसिंग इकाई, मीट प्रोसेसिंग इकाई, पशु आहार निर्माण इकाईयों हेतु ऋण सुविधा
- रियायती ब्याज दरें
- 3% ब्याज सबवेंशन व क्रेडिट गारंटी की सुविधा

पंजाब नैशनल बैंक
... भरोसे का प्रतीक !

punjab national bank
...the name you can BANK upon !